(२१) तथा जिन्हें हमसे मिलने की आशा नहीं उन्होंने कहा कि हम पर फ़रिश्ते क्यों नहीं उतारे जाते ?[1] अथवा हम (अपनी आँखों से) अपने प्रभु को देख लेते ?[2] उन लोगों ने स्वयं अपने को ही बहुत बड़ा समझ रखा है तथा अत्यधिक अवज्ञा कर ली है ।[3]

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْنَا الْمَلَائِكَةُ أَوْ نَرَىٰ رَبَّنَا ۗ لَقَدِ اسْتَكْبَرُوا فِي أَنفُسِهِمْ وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيرًا ﴿٢١﴾

(२२) जिस दिन ये फ़रिश्तों को देख लेंगे उस दिन इन पापियों को कोई प्रसन्नता नहीं होगी[4] तथा कहेंगे कि ये वंचित ही वंचित

يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلَائِكَةَ لَا بُشْرَىٰ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِينَ وَيَقُولُونَ

---

[1]अर्थात किसी मनुष्य को रसूल बनाने के बजाय किसी फ़रिश्ते को रसूल बनाकर भेजा जाता । अथवा यह अर्थ है कि पैग़म्बर के साथ फ़रिश्ते भी अवतरित होते । जिन्हें हम अपनी आँखों से देखते तथा वह इस मानव रसूल कि पुष्टि करते ।

[2]अर्थात प्रभु आकर हमें कहता कि मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मेरा रसूल है तथा उस पर ईमान लाना तुम्हारे लिए आवश्यक है ।

[3]उसी अहंकार तथा उदण्डता का परिणाम है कि वह इस प्रकार की माँग कर रहे हैं, जो अल्लाह तआला की इच्छा के विपरीत है । अल्लाह तआला तो परोक्ष पर ईमान के द्वारा लोगों की परीक्षा लेता है । यदि वह फ़रिश्तों को उनकी आँखों के समक्ष उतार दे अथवा वह स्वयं धरती पर उतर आये तो उसके पश्चात उनकी परीक्षा का प्रश्न ही समाप्त हो गया, इसलिए अल्लाह तआला ऐसा कार्य क्यों करे, जो उसकी सृष्टि की उत्पत्ति की नीति तथा इच्छा के विपरीत है ?

[4]उस दिन से तात्पर्य मृत्यु का दिन है अर्थात यह काफ़िर फ़रिश्तों को देखने की इच्छा करते हैं, परन्तु मृत्यु के समय फ़रिश्तों को देखेंगे, तो उनके लिए कोई प्रसन्नता एवं शुभ नहीं होगा, इसलिए कि फ़रिश्ते उन्हें उस समय नरक की यातना की धमकी की सूचना देते हैं तथा कहते हैं कि हे कुकर्मी आत्मा, कुकर्मी शरीर से निकल, जिससे आत्मा दौड़ती-भागती है, जिस पर फ़रिश्ते उसे मारते तथा कूटते हैं, जैसाकि सूरः *अल-अंफ़ाल-५०* तथा *अल-अनआम-९३* में है । इसके विपरीत ईमान वाले की स्थिति प्राण निकलते समय यह होती है कि फ़रिश्ते उसे स्वर्ग तथा उसके सुखों की शुभसूचना सुनाते हैं । जैसाकि सूरः *हा॰मीम॰अस्सजदः* ३० से ३२ में है तथा हदीस में भी आता है

किये गये ।[1]

حِجۡرٗا مَّحۡجُورٗا ۝٢٢

(२३) तथा उन्होंने जो-जो कर्म किये थे हमने उनकी ओर आकर्षित होकर उन्हें कणों की भाँति अस्त-व्यस्त कर दिया ।[2]

وَقَدِمۡنَآ إِلَىٰ مَا عَمِلُواْ مِنۡ عَمَلٖ فَجَعَلۡنَٰهُ هَبَآءٗ مَّنثُورًا ۝٢٣

कि "फ़रिश्ते ईमानवालों की आत्मा से कहते हैं, हे पवित्र आत्मा, जो पवित्र शरीर में थी, निकल ! तथा ऐसे स्थान पर चल जहाँ अल्लाह के उपहार हैं तथा वह प्रभु है, जो तुझसे प्रसन्न है ।" (विस्तृत जानकारी के लिए देखें मुसनद अहमद भाग २, पृष्ठ ३६४ तथा ३६५ इब्ने माजा किताबुज ज़ोहद बाब ज़िक्रूल मौत) कुछ कहते हैं कि इससे तात्पर्य क़ियामत का दिन है । इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि दोनों ही कथन ठीक हैं इसलिए कि दोनों ही दिन ऐसे हैं कि फ़रिश्ते ईमानवालों तथा काफ़िर दोनों के समक्ष प्रकट होते हैं । ईमानवालों के लिए कृपा तथा अल्लाह के उपहारों की शुभसूचना तथा काफ़िरों के विनाश तथा हानि की सूचना देते हैं ।

[1] حِجۡرٌ का मूल अर्थ है मना करना, रोक देना । जिस प्रकार न्यायाधीश किसी को उसकी मूर्खता अथवा बाल्यावस्था के कारण उसके अपने माल में से व्यय करने से रोक दे तो कहते हैं حَجَرَ القَاضِي على فلان न्यायाधीश की ओर से अमुक को व्यय करने से रोक दिया है । इस भावार्थ के आधार पर ख़ानये काबा के उस भाग (हतीम) को حجر कहा जाता है जिसे मक्का के कुरैश ने ख़ानये काबा में सम्मिलित नहीं किया था । इसलिए परिक्रमा करने वालों के लिए उसके अन्दर से परिक्रमा करना मना है । परिक्रमा करते समय उसके बाहरी भाग से गुज़रना चाहिए जिससे दीवार से अलग कर दिया गया है । तथा बुद्धि को भी حجر कहा जाता है, इसलिए कि बुद्धि भी मनुष्य को ऐसे कार्यों से रोकती है, जो मनुष्य के योग्य नहीं हैं । अर्थ यह है कि फ़रिश्ते काफ़िरों से कहते हैं कि तुम उन वस्तुओं से वंचित हो जिनकी शुभसूचना अल्लाह से डरने वालों को दी जाती है । अर्थात यह حرامًا محرمًا عليكم के अर्थों में है । आज जन्नतुल फ़िरदौस (स्वर्ग का सर्वोच्च स्थान) तथा उसके सुख तुम पर हराम (निषेध) हैं, इसके अधिकारी केवल ईमानवाले तथा अल्लाह से डरने वाले होंगे ।

[2] هباء उन सूक्ष्म कणों को कहते हैं, जो किसी छिद्र से घर के अन्दर प्रवेश होने वाली सूर्य की किरणों में दिखायी देते हैं, परन्तु यदि कोई उन्हें हाथ से पकड़ना चाहे तो यह सम्भव नहीं है । काफ़िरों के कर्म भी क़ियामत वाले दिन इन्हीं कणों की भाँति बेकार होंगे, क्योंकि वह ईमान तथा पवित्रता से शून्य होंगे तथा धार्मिक नियमों की अनुकूलता में भी ख़ाली होंगे । जबकि अल्लाह के समक्ष स्वीकृति के लिए इन दोनों बातों का होना आवश्यक है । ईमान तथा शुद्धता भी तथा इस्लामी धार्मिक नियमों के अनुरूप भी । यहाँ काफ़िर के कर्मों को बेकार कणों के समतुल्य कहा गया है । उसी प्रकार अन्य स्थानों

أَصْحَٰبُ ٱلْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَأَحْسَنُ مَقِيلًا ﴿٢٤﴾

(२४) (परन्तु) उस दिन स्वर्गवासियों का स्थान श्रेष्ठतम होगा तथा स्वप्न गृह भी सुखद होगा ।[1]

وَيَوْمَ تَشَقَّقُ ٱلسَّمَآءُ بِٱلْغَمَٰمِ وَنُزِّلَ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ تَنزِيلًا ﴿٢٥﴾

(२५) तथा जिस दिन आकाश बादल सहित फट जायेगा[2] तथा फ़रिश्ते निरन्तर उतारे जायेंगे ।

ٱلْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ ٱلْحَقُّ لِلرَّحْمَٰنِ ۚ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى ٱلْكَٰفِرِينَ عَسِيرًا ﴿٢٦﴾

(२६) उस दिन उचित रूप से राज्य केवल दयालु का ही होगा तथा यह दिन काफ़िरों पर बड़ा भारी होगा ।

وَيَوْمَ يَعَضُّ ٱلظَّالِمُ عَلَىٰ يَدَيْهِ يَقُولُ يَٰلَيْتَنِى ٱتَّخَذْتُ مَعَ ٱلرَّسُولِ سَبِيلًا ﴿٢٧﴾

(२७) तथा उस दिन अत्याचारी अपने हाथों को चबा-चबाकर कर कहेगा कि हाय ! अच्छा होता यदि मैंने रसूल का मार्ग अपनाया होता ।

يَٰوَيْلَتَىٰ لَيْتَنِى لَمْ أَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيلًا ﴿٢٨﴾

(२८) हाय ! अफ़सोस, यदि मैंने अमुक को मित्र न बनाया होता ।[3]

पर कहीं राख से, कहीं मृगतृष्णा से तथा कहीं सफाचट पत्थर से तुलना की गयी है । यह सारी उपमायें पूर्व में गुजर चुकी हैं । (देखिये सूर: *अल-बकर:*-२६४, सूर: *इब्राहीम*-१८ तथा सूर: *अन्नूर*-२)

[1]कुछ ने इससे यह अर्थ निकाला है कि ईमानवालों के लिए क़ियामत का यह भयानक दिन इतना क्षीण तथा उनका हिसाब इतना सरल होगा कि मध्यान्ह तक यह स्वतन्त्र हो जायेंगे तथा स्वर्ग में यह अपने परिवार वालों तथा हूरों के साथ मध्यान्ह में विश्राम कर रहे होंगे जिस प्रकार हदीस में है कि ईमानवालों के लिए वह दिन इतना सहज होगा कि जितने में दुनिया में एक अनिवार्य नमाज़ अदा कर लेना । (मुसनद अहमद भाग ४, पृष्ठ ७५)

[2]इसका अर्थ यह है कि आकाश फट जायेगा तथा बादल छाया बन जायेंगे, अल्लाह तआला फ़रिश्तों के मध्य, हश्र के मैदान में, जहाँ सारी सृष्टि एकत्रित होगी, हिसाब-किताब के लिए साक्षात् दर्शन देगा, जैसाकि सूर: *अल-बक़र:* आयत २१० से भी स्पष्ट है ।

[3]इससे ज्ञात हुआ कि अल्लाह के अवज्ञाकारियों से सम्बन्ध एवं मित्रता नहीं रखनी चाहिए, इसलिए की सज्जन व्यक्ति की संगत से मनुष्य सज्जन तथा दुर्जन व्यक्ति की संगत मनुष्य को बुरा बनाती है । अधिकतर लोगों के भटकने का कारण ग़लत मित्रों

(२९) उस ने तो मुझे उसके पश्चात भटका दिया कि शिक्षा मेरे पास आ पहुँची थी तथा शैतान तो मनुष्य को (समय पर) धोखा देने वाला है।

لَقَدْ أَضَلَّنِي عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَاءَنِي ۗ وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِلْإِنْسَانِ خَذُولًا ﴿٢٩﴾

(३०) तथा रसूल कहेगा कि हे मेरे प्रभु ! नि:संदेह मेरे समुदाय ने इस क़ुरआन को छोड़ रखा था।[1]

وَقَالَ الرَّسُولُ يَا رَبِّ إِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوا هَٰذَا الْقُرْآنَ مَهْجُورًا ﴿٣٠﴾

(३१) तथा इस प्रकार हमने प्रत्येक नबी के शत्रु कुछ पापियों को बना दिया है,[2] तथा तेरा प्रभु ही मार्गदर्शन देने वाला तथा सहायता करने वाला पर्याप्त है।[3]

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ ۗ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ هَادِيًا وَنَصِيرًا ﴿٣١﴾

का चयन तथा बुरों की संगत को अपनाना ही है। इसीलिए हदीस़ में भी पुण्य कार्य करने वाले लोगों की संगत पर बल दिया गया है तथा बुरी संगत से बचने को एक अति उत्तम उदाहरण से समझाया गया है। (देखिये सहीह मुस्लिम किताबुल बिर्र वस्सिल:,बाब इस्तेहबाब मजालिसि स्वालेहीन)

[1]मूर्तिपूजक क़ुरआन पढ़े जाने के समय बहुत शोर करते ताकि क़ुरआन न सुना जा सके, यह भी त्याग देना है इस पर ईमान न लाना तथा कर्म न करना, भी त्याग देना है। इस पर विचार एवं ध्यान न देना तथा इसके आदेशों के अनुसार कर्म न करना तथा निषेधित से न बचना भी त्याग देना है। इसी प्रकार इसको छोड़कर किसी अन्य किताब को वरीयता देना, यह भी त्याग देना है अर्थात क़ुरआन को अलग करना, उसको छोड़ देना है, जिसके विरूद्ध क़ियामत वाले दिन अल्लाह के पैग़म्बर अल्लाह के समक्ष वाद प्रस्तुत करेंगे।

[2]अर्थात जिस प्रकार हे मोहम्मद ! (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तेरे समुदाय में से वे लोग तेरे शत्रु हैं जिन्होंने क़ुरआन छोड़ दिया, इसी प्रकार पूर्वकालिक सम्प्रदाय में भी था अर्थात प्रत्येक नबी के शत्रु वे लोग होते थे, जो पापी थे, ये लोगों को भटकाने के मार्ग की ओर बुलाते थे। *सूर: अल-अनाम,* आयत संख्या ११२ में भी यह विषय वर्णन किया गया है।

[3]अर्थात ये काफिर यद्यपि लोगों को अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं, परन्तु तेरा प्रभु जिसे प्रकाश दे, उसको प्रकाश से कौन रोक सकता है, वास्तव में पथ पदर्शक एवं सहायक तो तेरा पालनहार ही है।

(३२) तथा काफ़िरों ने कहा कि उस पर पूरा क़ुरआन एक साथ ही क्यों न उतारा गया ?[1] इसी प्रकार (हमने थोड़ा-थोड़ा करके उतारा) ताकि इस से हम आप के दिल को दृढ़ता प्रदान करें, तथा हमने उसे ठहर-ठहर कर ही पढ़ सुनाया है।[2]

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْآنُ جُمْلَةً وَاحِدَةً ۚ كَذَٰلِكَ لِنُثَبِّتَ بِهِ فُؤَادَكَ ۖ وَرَتَّلْنَاهُ تَرْتِيلًا ﴿٣٢﴾

(३३) तथा ये आपके पास जो कोई भी उदाहरण लेकर आयेंगे हम उस का सत्य उत्तर तथा उचित व्याख्या बता देंगे।[3]

وَلَا يَأْتُونَكَ بِمَثَلٍ إِلَّا جِئْنَاكَ بِالْحَقِّ وَأَحْسَنَ تَفْسِيرًا ﴿٣٣﴾

(३४) जो लोग अपने मुँह के बल नरक की ओर एकत्रित किये जायेंगे। वही बुरे स्थान वाले तथा भटके हुए मार्ग वाले हैं।

الَّذِينَ يُحْشَرُونَ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ إِلَىٰ جَهَنَّمَ أُولَٰئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَأَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٣٤﴾

---

[1]जिस प्रकार तौरात, इंजील एवं ज़बूर आदि किताबें एक ही बार में अवतरित हुईं।

[2]अल्लाह तआला ने उत्तर दिया कि हमने समय तथा आवश्यकतानुसार इस क़ुरआन को लगभग २३ वर्ष में थोड़ा-थोड़ा करके अवतरित किया ताकि हे पैग़म्बर ! तेरा तथा ईमानवालों का हृदय दृढ़ हो तथा उनको भली-भाँति याद हो जाये। जिस प्रकार से अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿وَقُرْآنًا فَرَقْنَاهُ لِتَقْرَأَهُ عَلَى النَّاسِ عَلَىٰ مُكْثٍ وَنَزَّلْنَاهُ تَنزِيلًا﴾

"तथा क़ुरआन, इसको हमने अलग-अलग किया, ताकि तू इसे लोगों पर रूक-रूक कर पढ़े तथा हमने इसको अंतराल से अवतरित किया।" (सूरः *बनी इस्राईल-१०६*)

इस क़ुरआन की तुलना वर्षा के समान है। वर्षा जब भी होती हो, मृत धरती में जीवन की लहर दौड़ जाती है तथा यह लाभ सामान्यतया उस समय होता है, जब वर्षा समय-समय पर हो न कि एक ही बार में सारी वर्षा हो जाये।

[3]यह क़ुरआन को अंतराल से उतारे जाने की नीति तथा कारण वर्णन किया जा रहा है कि ये मूर्तिपूजक जब भी कोई उदाहरण अथवा आपत्ति एवं संदेह प्रस्तुत करेंगे, तो क़ुरआन के द्वारा हम उसका उत्तर अथवा स्पष्टीकरण प्रस्तुत करेंगे तथा इस प्रकार उन्हें लोगों को भटकाने का अवसर नहीं मिलेगा।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنَا مَعَهٗٓ اَخَاهُ هٰرُوْنَ وَزِيْرًا ﴿٣٥﴾

(३५) तथा निःसंदेह हमने मूसा को किताब प्रदान की तथा उनके साथ उनके भाई हारून को उनका सहायक बनाया।

فَقُلْنَا اذْهَبَآ اِلَى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۭ فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا ﴿٣٦﴾

(३६) तथा कह दिया कि तुम दोनों उन लोगों की ओर जाओ जो हमारी निशानियों को झुठला रहे हैं। फिर हमने उन्हें बिल्कुल ही ध्वस्त कर दिया।

وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ اَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ اٰيَةً ۭ وَاَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٣٧﴾

(३७) तथा नूह के समुदाय ने भी जब रसूलों को झूठा कहा तो हमने उन्हें डुबो दिया तथा लोगों के लिए उन्हें शिक्षा प्राप्त करने का प्रतीक बना दिया तथा हम ने अत्याचारियों के लिए दुखदायी यातनायें तैयार कर रखी हैं।

وَّعَادًا وَّثَمُوْدَا۟ وَاَصْحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُوْنًۢا بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا ﴿٣٨﴾

(३८) तथा 'आद' जाति तथा 'समूद' जाति एवं कुयें वालों को[1] तथा उनके मध्य के बहुत से सम्प्रदाय को[2] (नाश कर दिया)।

وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ الْاَمْثَالَ ۡ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيْرًا ﴿٣٩﴾

(३९) तथा हमने प्रत्येक के समक्ष उदाहरणों को वर्णन किया,[3] फिर प्रत्येक को पूर्ण रूप से नाश कर दिया।[4]

---

[1] رس का अर्थ है कुआँ, أصحاب الرس का अर्थ हुआ कुएँ वाले। इसके निर्धारण में व्याख्याकारों में मतभेद है, इमाम इब्ने जरीर तबरी ने कहा है, इससे तात्पर्य खाईं वाले हैं, जिनका वर्णन *सूरः अल-बुरूज* में है। (इब्ने कसीर)

[2] قرن का उचित अर्थ है समकालिक लोगों का एक गुट। जब एक वंश के लोग समाप्त हो जायें तो दूसरी जाति दूसरा क़र्न कहलायेगा। (इब्ने कसीर) इस अर्थ के द्वारा प्रत्येक नबी का समुदाय भी एक क़र्न हो सकता है।

[3] अर्थात प्रमाण के आधार पर हमने सत्यता सिद्ध कर दी।

[4] अर्थात सत्यता प्रमाणित होने के पश्चात।

وَلَقَدْ أَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِي أُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ ۚ أَفَلَمْ يَكُونُوا يَرَوْنَهَا ۚ بَلْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ نُشُورًا ﴿٤٠﴾

(४०) तथा ये लोग उस बस्ती के पास से भी आते-जाते हैं, जिन पर बुरे प्रकार की वर्षा की गयी।[1] क्या यह फिर भी उसे देखते नहीं ? वास्तविकता यह है कि उन्हें मरकर पुनः जीवित होकर खड़े होने पर विश्वास ही नहीं।[2]

وَإِذَا رَأَوْكَ إِنْ يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا أَهَٰذَا الَّذِي بَعَثَ اللَّهُ رَسُولًا ﴿٤١﴾

(४१) तथा तुम्हें जब कभी देखते हैं तो तुम से उपहास करने लगते हैं। कि क्या यही वह व्यक्ति हैं जिन्हें अल्लाह ने रसूल बनाकर भेजा है।[3]

إِنْ كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ آلِهَتِنَا لَوْلَا أَنْ

(४२) (वह तो कहिए) कि हम डटे रहे अन्यथा इन्होंने तो हमें हमारे देवताओं से

---

[1]बस्ती से लूत के समुदाय की बस्तियाँ सदुम तथा अमूरा आदि तात्पर्य हैं तथा बुरी वर्षा से पत्थरों की वर्षा तात्पर्य है। इन बस्तियों को उलट दिया गया था, उस के पश्चात उन के ऊपर कंकड़-पत्थर की वर्षा की गई थी, जैसाकि सूरः हूद-८२ में वर्णन किया गया है। ये बस्तियाँ सीरिया तथा फ़िलिस्तीन के मार्ग में पड़ती हैं, जिन से गुज़र कर मक्कावासी आते-जाते थे।

[2]इसलिए इन ध्वस्त की गयी बस्तियों तथा उनके खण्डहरों को देखने के उपरान्त शिक्षा ग्रहण नहीं करते। तथा अल्लाह की आयतों तथा अल्लाह के रसूल को झुठलाने से नहीं रूकते।

[3]अन्य स्थान पर इस प्रकार फ़रमाया :

﴿أَهَٰذَا الَّذِي يَذْكُرُ آلِهَتَكُمْ﴾

"क्या यह वही व्यक्ति है, जो तुम्हारे देवताओं की बुराई करता है ?" (सूरः *अल-अंबिया-३६*)

अर्थात उनके विषय में कहता है कि वे कुछ अधिकार नहीं रखते। इस वास्तविकता का प्रदर्शन ही मूर्तिपूजकों के निकट उनके देवताओं का अपमान था, जैसे आज भी क़ब्र पूजने वालों से कहा जाये कि क़ब्रों में गड़े हुए महात्मा सृष्टि में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं रखते। तो कहते हैं कि यह अल्लाह के मित्रों के सम्मान को अपमानित कर रहे हैं।

صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۚ وَسَوْفَ يَعْلَمُونَ حِينَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ أَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٤٢﴾

भटका देने में कोई कमी नहीं छोड़ी थी ।[1] तथा जब ये यातनाओं को देखेंगे तो उन्हें स्पष्ट रूप से ज्ञात हो जायेगा कि पूर्णरूप से मार्ग से भटका हुआ कौन था ?[2]

أَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَٰهَهُ هَوَاهُ أَفَأَنْتَ تَكُونُ عَلَيْهِ وَكِيلًا ﴿٤٣﴾

(४३) क्या आप ने उसे भी देखा जो अपनी मनोकाँक्षाओं को अपना देवता बनाये हुए है, क्या आप उसके उत्तरदायी हो सकते हैं ।[3]

---

[1]अर्थात हम ही अपने पूर्वजों का अनुकरण तथा प्रचलित धर्म से सम्बन्ध रखने के कारण अल्लाह के अतिरिक्त अन्यों की इबादत से न रूके, वरन् इस पैग़म्बर ने हमें भटकाने में कोई कमी नहीं छोड़ी । अल्लाह तआला ने मूर्तिपूजकों का यह कथन बयान किया है कि वे किस प्रकार मूर्तिपूजा पर अड़े हैं कि उस पर गर्व कर रहे हैं ।

[2]अर्थात इस लोक में तो मूर्तिपूजकों तथा अल्लाह के अतिरिक्त अन्यों के पुजारियों को एकेश्वरवाद के अनुयायी भटके हुए दिखायी पड़ते हैं, परन्तु जब यह अल्लाह के दरबार में पहुँचेंगे तथा वहाँ उन्हें मूर्तिपूजा के कारण अल्लाह की यातना को भुगतना पड़ेगा तब पता चलेगा कि भटका हुआ कौन था ? एक अल्लाह की इबादत करने वाले अथवा द्वार-द्वार अपने शीश झुकाने वाले ?

[3]अर्थात जो वस्तु उसके मन को अच्छी लगी, उसको अपना धर्म एवं नियम बना लिया, क्या ऐसे लोगों को तू मार्ग पर ला सकता है अथवा अल्लाह की यातना से छुड़ा सकेगा ? इसको अन्य स्थान पर इस प्रकार वर्णन किया गया है ।

> "क्या वह व्यक्ति जिसके लिए उसका कुकर्म शोभनीय बना दिया गया है, तो वह उसे अच्छा समझता है, अत: अल्लाह तआला जिसे चाहता है भटकाता है तथा जिसे चाहता है मार्ग दिखा देता है । अत: तू उस पर लज्जित तथा दुखी न हो ।" (*सूर: फ़ातिर-८*)

आदरणीय इब्ने अब्बास इसकी व्याख्या इस प्रकार करते हैं । अज्ञान काल में व्यक्ति एक लम्बी अवधि तक सफेद पत्थर की पूजा करता रहता, जब उसे उससे अच्छा पत्थर दिख जाता तो वह प्रथम पत्थर को छोड़कर दूसरे पत्थर की पूजा प्रारम्भ कर देता । (इब्ने कसीर) अर्थ यह है कि ऐसे व्यक्ति, जो बुद्धि एवं समझ से इस प्रकार शून्य तथा मात्र अपने मन की इच्छा को अपना देवता बनाये हुए हैं । हे पैग़म्बर ! क्या तू उनको प्रकाश के मार्ग पर लगा सकता है ? अर्थात नहीं लगा सकता ।

(४४) क्या आप इसी सोंच में हैं कि उनमें से अधिकतर सुनते अथवा समझते हैं। वह तो निरे पशु की भाँति हैं, बल्कि उनसे भी अधिक भटके हुए।[1]

أَمْ تَحْسَبُ أَنَّ أَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُونَ أَوْ يَعْقِلُونَ ۚ إِنْ هُمْ إِلَّا كَالْأَنْعَامِ ۖ بَلْ هُمْ أَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٤٤﴾

(४५) क्या आपने नहीं देखा कि आपके प्रभु ने छाया को किस प्रकार विस्तृत कर दिया है ?[2] यदि चाहता तो उसे स्थिर ही कर देता,[3] फिर हमने सूर्य को उसका पथ प्रर्दशक बनाया।[4]

أَلَمْ تَرَ إِلَىٰ رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ وَلَوْ شَاءَ لَجَعَلَهُ سَاكِنًا ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيلًا ﴿٤٥﴾

(४६) फिर हमने उसे धीर-धीरे अपनी ओर खींच लिया।[5]

ثُمَّ قَبَضْنَاهُ إِلَيْنَا قَبْضًا يَسِيرًا ﴿٤٦﴾

(४७) तथा वही है जिस ने रात को तुम्हारे

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِبَاسًا

---

[1]अर्थात ये चौपाये जिस उद्देश्य के लिए पैदा किये गये हैं, उसे वे समझते हैं। परन्तु मनुष्य जिसे एक अल्लाह की इबादत के लिए पैदा किया गया था, वह रसूलों के सतर्क कर देने के उपरान्त अल्लाह के साथ शिर्क करता है तथा दर-दर पर अपना माथा टेकता फिरता है। इस आधार पर ये नि:संदेह चौपाये से भी अधिक बुरे तथा भटके हुए हैं।

[2]यहाँ से पुन: एकेश्वरवाद के तर्कों का प्रारम्भ होता है। देखो, अल्लाह तआला ने जगत में किस प्रकार छाया फैलायी है, जो प्रात:काल के पश्चात से सूर्योदय होने तक रहती है। अर्थात उस समय धूप नहीं होती धूप के साथ यह सिमटना तथा सिकुड़ना प्रारम्भ हो जाता है।

[3]अर्थात सदैव छाया ही रहती, सूर्य की धूप छाया को समाप्त ही न करती ।

[4]अर्थात धूप से ही छाया का पता चलता है कि प्रत्येक वस्तु अपने विपरीत से पहचानी जाती है यदि धूप न होती तो लोग छाया से परिचित न होते।

[5]अर्थात वह छाया धीरे-धीरे हम अपनी ओर खींच लेते हैं तथा उसके स्थान पर रात्रि का गंभीर अंधकार छा जाता है।

وَالنَّوْمَ سُبَاتًا وَّجَعَلَ النَّهَارَ نُشُوْرًا ﴿٤٧﴾

लिए वस्त्र बनाया[1] तथा निंद्रा सुखमय बनायी[2] तथा दिन को उठ खड़े होने का समय ।[3]

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۚ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً طَهُوْرًا ﴿٤٨﴾

(४८) तथा वही है जो रहमत (कृपा) की वर्षा से पूर्व शुभ सूचना देने वाली वायु को भेजता है तथा हम आकाश से पवित्र पानी बरसाते हैं ।[4]

لِّنُحْیِۦَ بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا وَّنُسْقِيَهٗ مِمَّا خَلَقْنَآ اَنْعَامًا وَّاَنَاسِيَّ كَثِيْرًا ﴿٤٩﴾

(४९) ताकि उसके द्वारा मरे हुए नगर को जीवित कर दें तथा उसे हम अपनी सृष्टि में से बहुत से पशुओं तथा मनुष्यों को पिलाते हैं ।

وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوْا ۡ

(५०) तथा निःसंदेह हमने इसे उनके मध्य

---

[1]अर्थात वस्त्र, जिस प्रकार वस्त्र मनुष्य के शरीर को छिपा लेता है, उसी प्रकार रात्रि तुम्हें अपने अंधकार में छिपा लेती है ।

[2] سُبَات का अर्थ काटना है । निंद्रा मनुष्य के शरीर को कर्म से काट देती है, जिससे उसे सुख प्राप्त होता है । कुछ के निकट سُبَات का अर्थ फैलने के हैं । निंद्रा में भी मनुष्य लम्बा हो जाता है, इसलिए उसे सुबात कहा । (ऐसरूत्तफ़ासीर तथा फ़तहुल क़दीर)

[3]अर्थात निंद्रा जो मृत्यु की बहन है, दिन में मनुष्य निंद्रा से जागकर तथा व्यवसाय के लिए खड़ा हो जाता है । हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम प्रातः उठते समय यह दुआ पढ़ते । الحمد لله الذي أحيانا بعد ما أماتنا وإليه النشور "सारी प्रशंसायें उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने हमें मारने के पश्चात जीवित किया तथा उसकी ओर एकत्रित होना है ।" (बुख़ारी, मिशकात किताबुद-दावात)

[4] طَهُور (अरबी भाषा के मात्राओं में से एक मात्रा फ़तह कहलाती है जो अक्षर 'तआ' पर है) 'फ़ऊल' शब्द के भार पर है अर्थात ऐसी वस्तु जिससे पवित्रता अथवा शुद्धता प्राप्त की जाती है । जैसे वुज़ू के पानी को وَضوء तथा ईंधन को وَقُود कहा जाता है, इस अर्थ में पानी पवित्र स्वयं भी पवित्र । तथा दूसरों को भी पवित्र करने वाला है । हदीस में भी है । إنَّ الماء طَهورٌ لا ينجسه شيٌ "पानी पवित्र है, उसे कोई वस्तु भी अपवित्र नहीं कर सकती ।" (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी संख्या ६६ निसाई व इब्ने माजा) परन्तु यदि उसके रंग, गंध तथा स्वाद में परिवर्तन हो जाये, तो ऐसा पानी अपवित्र है । كما في الحديث

فَاَبٰۤى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ۝٥٠

विभिन्न प्रकार से वर्णन किया ताकि [1] वह शिक्षा प्राप्त करें, परन्तु फिर भी अधिकतर लोगों ने कृतघ्नता के अतिरिक्त माना नहीं।[2]

وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيْرًا ۝٥١

(५१) तथा यदि हम चाहते तो प्रत्येक बस्ती में एक डराने वाला भेज देते।[3]

فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا ۝٥٢

(५२) तो आप काफ़िरों का कहना न करें तथा क़ुरआन के द्वारा उनसे पूर्ण शक्ति से महा धर्मयुद्ध करें।[4]

وَهُوَ الَّذِيْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۚ وَجَعَلَ

(५३) तथा वही है जिसने दो समुद्रों को आपस में मिला रखा है यह है मीठा स्वादिष्ट

---

[1]अर्थात क़ुरआन करीम को। तथा कुछ ने صرفناه में अन्तिम सर्वनाम को वर्षा की ओर फेरा है जिसका अर्थ यह होगा कि वर्षा को हम बदल-बदल कर बरसाते हैं अर्थात कभी एक क्षेत्र में कभी अन्य क्षेत्र में। यहाँ तक कि कई बार ऐसा होता है कि कभी एक नगर के एक भाग में वर्षा होती है तथा अन्य भागों में नहीं होती तथा कभी अन्य भागों में होती है प्रथम भाग में नहीं होती यह अल्लाह का ज्ञान तथा विवेक है वह जिस प्रकार चाहता है, कहीं वर्षा करता है तथा कहीं नहीं तथा कभी किसी क्षेत्र में एवं कभी किसी क्षेत्र में।

[2]तथा एक कुफ़्र एवं कृतघ्नता यह भी है कि वर्षा को अल्लाह की कारीगरी के बजाय नक्षत्रों की चाल का परिणाम कहा जाये, जैसे अशिक्षित लोग कहा करते थे।

[3]परन्तु हमने ऐसा नहीं किया तथा केवल आपको ही सभी बस्तियों बल्कि समस्त मनुष्य जाति के लिए डराने वाला बनाकर भेजा।

[4] جاهدهم به में अक्षर ه का संकेत क़ुरआन है अर्थात इस क़ुरआन के द्वारा धर्मयुद्ध करें, यह आयत मक्का में अवतरित हुई है, अभी धर्मयुद्ध का आदेश नहीं मिला था। इसलिए अर्थ यह हुआ कि क़ुरआन के आदेश तथा निषेध को खोल खोल-कर वर्णन करें तथा काफ़िरों के लिए जो डाँट फटकार तथा धमकियाँ आयी हैं, वह स्पष्ट करें।

بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَحِجْرًا مَّحْجُورًا

तथा यह है खारी कड़ुवा,[1] तथा इन दोनों के मध्य एक पर्दा एवं सुदृढ़ ओट कर दी ।[2]

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ مِنَ الْمَاءِ بَشَرًا فَجَعَلَهُ نَسَبًا وَصِهْرًا ۗ وَكَانَ رَبُّكَ

(५४) तथा वह है वही जिसने पानी से मनुष्य को पैदा किया, फिर उसे वंश वाला तथा ससुराली सम्बन्धों वाला कर दिया ।[3]

---

[1]मीठे पानी को فُرات कहते हैं, فُرات का अर्थ है काट देना, तोड़ देना, मीठा पानी प्यास को काटता है अर्थात समाप्त कर देता है । أُجاج अत्यन्त खारी अथवा कड़ुवा पानी ।

[2] जो एक दूसरे को मिलने नहीं देती । कुछ व्याख्याकारों ने ﴿حِجْرًا مَّحْجُورًا﴾ का अर्थ लिया है حرامًا محرمًا इन पर हराम कर दिया गया कि मीठा पानी खारी अथवा खारी पानी मीठा हो जाये तथा कुछ व्याख्याकारों ने مرج البحرين का अनुवाद किया है خلق المائين कि दो पानी बनाये, एक मीठा, दूसरा खारी । मीठा पानी वह है जो नदियों, स्रोतों तथा कुँओं के रूप मे आबादियों के मध्य पाया जाता है, जिसको मनुष्य अपने दैनिक जीवन में प्रयोग करता है तथा खारी पानी वह है जो पूर्व से पश्चिम तक फैले हुए समुद्र में है, जो कहते हैं कि वह धरती का तीन चौथाई भाग है तथा एक चौथाई भाग थल है, जिस पर मनुष्य तथा जीवों का निवास है । यह समुद्र स्थिर हैं । जबकि उनमें ज्वार भाटा आता रहता है तथा तीव्र एवं उच्च धारायें हैं । समुद्री पानी को खारी रखने में अल्लाह तआला की एक सुनीति है । मीठा पानी अधिक देर स्थिर रहने से ख़राब हो जाता है, उसके स्वाद, रंग तथा गंध में परिवर्तन आ जाता है खारी पानी ख़राब नहीं होता, न उसका स्वाद बदलता है, न रंग तथा गंध । यदि इन स्थिर समुद्रों का पानी भी मीठा होता, तो उसमें दुर्गन्ध उत्पन्न हो जाती । जिससे मनुष्य तथा पशुओं का धरती पर रहना कठिन हो जाता । उसमें मरने वाले जानवर की दुर्गन्ध उसको और बढ़ा देती । अल्लाह की सुनीति तो यह है कि हज़ारों वर्षों से यह समुद्र विद्यमान हैं, तथा इनमें हज़ारों जानवर मरते हैं तथा उन्हीं मे सड़-गल जाते हैं । परन्तु अल्लाह ने उसमें इतना नमक रख दिया है कि वह उसके पानी में तनिक भी दुर्गन्ध उत्पन्न नहीं होने देता । उनसे उठने वाली वायु भी ठीक होती हैं तथा उनका पानी भी पवित्र है, यहाँ तक कि उनके अंदर के मरे जानवर भी हलाल (मान्य) हैं । كما في الحديث (मुअत्ता इमाम मालिक, इब्ने माजा, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी किताबुल तहारत, नसाई किताबुल माअ) (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[3]वंश से तात्पर्य वे सम्बन्ध हैं, जो माता-पिता की ओर से हो, तथा صهر से तात्पर्य वह निकट सम्बन्ध हैं जो विवाह के उपरान्त पत्नी की ओर से हो, जिसको हमारे समाज में ससुराली सम्बन्ध कहा जाता है । इन दोनों सम्बन्धों का विवरण आयत حرمت عليكم

قَدِيرًا ﴿٥٤﴾

निःसंदेह आपका प्रभु प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्य है।

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلَىٰ رَبِّهِ ظَهِيرًا ﴿٥٥﴾

(५५) तथा यह अल्लाह को छोड़कर उनकी पूजा करते हैं, जो न तो उन्हें कोई लाभ पहुँचा सकें न कोई हानि पहुँचा सकें, काफ़िर तो है ही अपने प्रभु के विरूद्ध (शैतान) की सहायता करने वाला।

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿٥٦﴾

(५६) तथा हमने तो आपको शुभसूचना तथा डर (त्रासिक) सुनाने वाला (नबी) बनाकर भेजा है।

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِلَّا مَن شَاءَ أَن يَتَّخِذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿٥٧﴾

(५७) कह दीजिए कि मैं (कुरआन के पहुँचाने पर) तुम से कोई परिश्रामिक नहीं चाहता परन्तु जो व्यक्ति अपने प्रभु की ओर मार्ग पकड़ना चाहे।[1]

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهِ وَكَفَىٰ بِهِ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَبِيرًا ﴿٥٨﴾

(५८) तथा उस अनन्त अल्लाह (तआला) पर पूर्ण विश्वास करें जिसे कभी मृत्यु नहीं तथा उसकी प्रशंसा के साथ पवित्रता का वर्णन करते रहें, वह अपने भक्तों के पापों से भली-भाँति परिचित है।

الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ

(५९) वही है जिसने आकाशों तथा धरती एवं उनके मध्य की वस्तुओं को छः दिन में पैदा

(*सूर: अल-निसा-२३*) तथा ﴿وَلَا تَنكِحُوا مَا نَكَحَ آبَاؤُكُم﴾ (*सूर: अल-निसा-२२*) में वर्णन किया गया है। तथा एक ही स्त्री से दो के दूध पीने से जो सम्बन्ध होता है, हदीस के अनुसार वह वंशीय सम्बन्धों में सम्मिलित है। जैसाकि फ़रमाया يحرم من الرضاع ما يحرم من النسب (अल-बुख़ारी संख्या २६४५ तथा मुस्लिम संख्या १०७०)

[1]अर्थात यही मेरा पारिश्रमिक है कि प्रभु का मार्ग अपना लूँ।

عَلَى الْعَرْشِ ۚ الرَّحْمَٰنُ فَاسْأَلْ بِهِ خَبِيرًا

कर दिया, फिर अर्श पर उच्चय हुआ, वह कृपालु है, आप उसके विषय में किसी जानकार से पूछ लें।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَٰنِ قَالُوا وَمَا الرَّحْمَٰنُ أَنَسْجُدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُورًا ۩

(६०) तथा उनसे जब भी कहा जाता है कि दयालु को सजदा करो, तो वे कहते हैं कि कृपालु है क्या ? क्या हम उसको सजदा करें जिसका तू हमें आदेश दे रहा है तथा (इस आमन्त्रण से) उनकी बुराई ही बढ़ती है।[1]

تَبَارَكَ الَّذِي جَعَلَ فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَجَعَلَ فِيهَا سِرَاجًا وَقَمَرًا مُنِيرًا

(६१) अत्यन्त शुभ है वह जिसने आकाश में बुर्ज बनाये[2] तथा उस में सूर्य बनाया, तथा प्रकाशित चन्द्रमा भी।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً

(६२) तथा उसी ने रात्रि तथा दिन को एक-

---

[1] رحمان - رحيم अल्लाह की विशेषता तथा शुभ नामों में से हैं, परन्तु अशिक्षित लोग अल्लाह को उन नामों से नहीं जानते थे जैसाकि हुदैबिया की संधि के समय जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने संधि का प्रारम्भ بسم الله الرحمن الرحيم से लिखवाया तो मक्के के मूर्तिपूजकों ने कहा, हम रहमान तथा रहीम को नहीं जानते। باسمك اللهم लिखो। (सीरत इब्ने हिशाम भाग २ पृष्ठ ३१७ अधिक जानकारी के लिए देखिये सूरः *बनी इस्राईल-११०* तथा *सूरः अल-राद-३०*) यहाँ भी उनका रहमान के नाम से भड़कना तथा सजदा करने से मुख मोड़ने का वर्णन है।

[2] بروج बहुवचन है برج का सलफ़ की व्याख्या में بُروج से तात्पर्य बड़े-बड़े ग्रह (सितारे) लिए गये हैं तथा इसी तात्पर्य से कथन का स्पष्ट अर्थ समझ में आता है महिमावान है वह शक्ति जिसने आकाश में बड़े-बड़े ग्रह बनाये तथा सूर्य एवं चन्द्रमा बनाया। बाद के व्याख्याकारों ने ज्योतिषियों के राशियाँ तात्पर्य लिये हैं। तथा यह बारह राशि हैं मेष, वृष, कुम्भ, कर्क, मकर, मिथुन, सिंह, तुला, मीन, धन, वृश्चिक तथा कन्या तथा सात बड़े ग्रहों के निवास हैं। जिनके नाम हैं मंगल, शुक्र, बुद्ध, चन्द्र, सूर्य, बृहस्पति तथा शनि। यह ग्रहों उन बुर्जों में इस प्रकार उतरते हैं, जैसे ये इनके लिए भव्य महल हैं। (ऐसरुत्तफ़ासीर)

لِّمَنْ أَرَادَ أَن يَذَّكَّرَ أَوْ أَرَادَ شُكُورًا ﴿٦٢﴾

दूसरे के पीछे आने जाने वाला बनाया[1] उस व्यक्ति की शिक्षा के लिए जो शिक्षा ग्रहण करने अथवा कृतज्ञता व्यक्त करने का विचार रखता हो।

وَعِبَادُ الرَّحْمَٰنِ الَّذِينَ يَمْشُونَ عَلَى الْأَرْضِ هَوْنًا وَإِذَا خَاطَبَهُمُ الْجَاهِلُونَ قَالُوا سَلَامًا ﴿٦٣﴾

(६३) तथा रहमान (दयालु) के सत्य भक्त वह हैं, जो धरती पर नम्रता से चलते हैं तथा जब अशिक्षित लोग उनसे बातें करने लगते हैं, तो वह कह देते हैं कि सलाम है।[2]

وَالَّذِينَ يَبِيتُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا ﴿٦٤﴾

(६४) तथा जो अपने प्रभु के समक्ष सजदा करते तथा खड़े होकर रात्रि व्यतीत करते हैं।

وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ﴿٦٥﴾

(६५) तथा जो ये दुआयें (विनय) करते हैं कि हे हमारे प्रभु !हमसे नरक की यातना दूर ही रख क्योंकि उसकी यातना चिमट जाने वाली है।[3]

---

[1]अर्थात रात्रि जाती है, तो दिन आता है तथा दिन आता है तो रात्रि चली जाती है। दोनों एक ही समय में एकत्रित नहीं होते, इसके लाभ तथा कारण समझाने की आवश्यकता नहीं । कुछ ने خِلْفَةً का अर्थ एक-दूसरे के विरोधी किया है अर्थात रात्रि अंधकारमयी है तथा दिन प्रकाश से परिपूर्ण।

[2]सलाम से तात्पर्य यहाँ मुख मोड़ना तथा विवाद को छोड़ देना है। अर्थात ईमानवाले अशिक्षित लोगों तथा कटबहस करने वालों से उलझते नहीं, बल्कि ऐसे अवसर पर टाल जाते हैं तथा उनसे बचने का प्रयत्न करते हैं तथा बिना लाभ के तर्क-वितर्क नहीं करते।

[3]इससे ज्ञात हुआ कि दयालु अल्लाह के भक्त वह हैं जो एक ओर रातों को जागकर अल्लाह की इबादत करते हैं तथा दूसरी ओर डरते भी हैं कि कहीं किसी त्रुटि अथवा आलस्य के कारण अल्लाह की पकड़ में न आ जायें इसीलिए वे नरक की यातना से छुटकारा माँगते हैं। अर्थात अल्लाह की इबादत तथा आज्ञाकारिता पर किसी प्रकार का गर्व तथा घमण्ड नहीं होना चाहिए। इसी भाव को अन्य स्थान पर इस प्रकार वर्णन किया गया है।

إِنَّهَا سَاءَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ﴿٦٦﴾

(६६) वह स्थाई स्थान तथा रहने दोनों रूप से बुरा स्थान है।

وَالَّذِينَ إِذَا أَنفَقُوا لَمْ يُسْرِفُوا وَلَمْ يَقْتُرُوا وَكَانَ بَيْنَ ذَٰلِكَ قَوَامًا ﴿٦٧﴾

(६७) तथा जो व्यय करते समय भी न तो अपव्यय करते हैं, न कंजूसी (कृपण) बल्कि इन दोनों के मध्य का मध्यम मार्ग होता है।[1]

وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ يَلْقَ أَثَامًا ﴿٦٨﴾

(६८) तथा जो अल्लाह के साथ किसी अन्य देवता को नहीं पुकारते तथा किसी ऐसे व्यक्ति को जिसकी हत्या करना अल्लाह तआला ने निषेद्ध किया हो, सिवाय सत्य के वह हत्या नहीं करते[2] न वह व्यभिचारी होते

﴿وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَوا وَّقُلُوبُهُمْ وَجِلَةٌ أَنَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَاجِعُونَ﴾

"तथा वह लोग कि देते हैं, जो कुछ देते हैं तथा उनके हृदय भयभीत हैं कि वे अपने प्रभु की ओर लौटने वाले हैं।" (सूर: *अल-मोमिनून*-६०)

भय इसी बात का नहीं कि उन्हें अल्लाह के दरबार में उपस्थिति होना है, बल्कि उसके साथ इसका भी है कि उनका दान-पुण्य स्वीकार होता है अथवा नहीं ? हदीस में आयत की व्याख्या में आता है कि आदरणीय आयशा ने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस आयत के विषय में पूछा कि क्या इससे तात्पर्य वे लोग हैं, जो शराब पीते तथा चोरी करते हैं ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "नहीं हे अबू बक्र की पुत्री ! बल्कि यह वे लोग हैं जो व्रत (रोज़े) रखते, नमाज़ पढ़ते तथा दान करते हैं, परन्तु उसके उपरान्त डरते हैं कि कहीं उनके यह कर्म अस्वीकृत न हो जायें।" (जामेअ तिर्मिज़ी किताबुल तफ़सीर सूर: *अल-मोमिनून*)

[1]अल्लाह की अवज्ञा में व्यय करना, अपव्यय तथा अल्लाह के आज्ञापालन पर न व्यय करना कंजूसी तथा अल्लाह के आदेश एवं निर्देश के अनुसार व्यय करना अल्लाह के मार्ग में संतुलन है। (फ़तहुल क़दीर) इसी प्रकार आवश्यक व्यय एवं अनिश्चित में मध्यम सीमा से बढ़ना भी अपव्यय में आ सकता है, इसलिए वहाँ भी सावधानी एवं मध्य मार्ग अपनाना अति आवश्यक है।

[2]तथा हक़ के साथ हत्या करने की तीन अवस्थायें हैं। इस्लाम के पश्चात कोई पुन: कुफ़्र पर चले, जिसे 'इर्तदाद' कहते हैं, अथवा विवाहित होकर व्यभिचार करे अथवा किसी की हत्या कर दे। इन तीनों परिस्थितियों में हत्या कर दी जायेगी।

हैं,[1] तथा जो कोई यह कर्म करे वह अपने ऊपर कड़ी यातना लेगा।

يُضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ﴿٦٩﴾

(६९) उसे क़ियामत के दिन दुगुनी यातना दी जायेगी तथा वह अपमान तथा अनादर के साथ सदैव वहीं रहेगा।

اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ط وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٠﴾

(७०) उन लोगों के अतिरिक्त जो क्षमा माँग लें तथा ईमान लायें तथा सत्कर्म करें[2] ऐसे लोगों के पापों को अल्लाह (तआला) पुण्य में बदल देता है।[3] अल्लाह तआला अत्यन्त क्षमाशील दयालु है।

---

[1]हदीस में रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रश्न किया गया, कौन सा पाप सबसे बड़ा है ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, यह कि तू अल्लाह के साथ किसी को सम्मिलित करे, जबकि वास्तव में उसने तुझे पैदा किया। उसने पूछा कि उसके पश्चात कौन सा बड़ा पाप है ? फ़रमाया अपनी संतान की इस भय से हत्या करना कि वह तेरे साथ खायेगी। उसने पूछा फिर कौन सा ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह कि तू अपने पड़ोसी की पत्नी से व्यभिचार करे। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इन बातों की पुष्टि इस आयत से होती है। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसी आयत का पाठ किया। (अल-बुख़ारी तफ़सीर सूरः अल-बकरः, मुस्लिम किताबुल ईमान, बाबु कौनिश्-शिर्के अकबहुज़ ज़ूनूब)

[2]इससे ज्ञात हुआ कि दुनिया में शुद्ध मन से क्षमा माँगने से प्रत्येक पाप से क्षमा मिल सकती है, चाहे वह कितना बड़ा हो। तथा सूरः निसा की आयत ९३ में जो ईमानवाले की हत्या का दण्ड नरक बताया गया है, तो वह इस परिस्थिति में मिलेगा जब हत्यारे ने शुद्ध मन से क्षमा न माँगी होगी तथा बिना क्षमा माँगे ही मृत्यु हो गई हो। वरन् हदीस में आता है कि सौ आदमियों के हत्यारे ने भी क्षमा माँगी तो अल्लाह ने उसे भी क्षमा कर दिया। (सहीह मुस्लिम किताबुत तौबा)

[3]इसका एक अर्थ तो यह है कि अल्लाह तआला उसकी अवस्था बदल देता है, इस्लाम धर्म स्वीकार करने के पूर्व वह बुराईयाँ करता था, अब केवल एक ईष्ट अल्लाह की इबादत करता है, पहले काफ़िरों के साथ सम्मिलित होकर मुसलमानों से लड़ता था, अब मुसलमानों की ओर से काफ़िरों से लड़ता है, इत्यादि। दूसरा अर्थ है कि उसकी

(७१) तथा जो व्यक्ति क्षमा माँग ले तथा पुण्य के कार्य करे तो वह वास्तव में अल्लाह (तआला) की ओर सत्य प्रवृति (झुकाव) रखता है ।[1]

وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهُ يَتُوبُ إِلَى اللَّهِ مَتَابًا ﴿٧١﴾

(७२) तथा जो लोग झूठी गवाही नहीं देते,[2] तथा जब वे किसी व्यर्थ के निकट से गुज़रते हैं,तो श्रेष्ठता से गुज़र जाते हैं ।[3]

وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الزُّورَ وَإِذَا مَرُّوا بِاللَّغْوِ مَرُّوا كِرَامًا ﴿٧٢﴾

बुराईयों को पुण्य में बदल देता है । इसकी पुष्टि हदीस से भी होती है । रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया , "मैं उस व्यक्ति को जानता हूँ जो सबसे अन्त में स्वर्ग में प्रवेश करने वाला तथा सबसे अन्त में नरक से निकलने वाला होगा । यह वह व्यक्ति होगा कि क़यामत के दिन उसके छोटे-छोटे पाप प्रस्तुत किये जायेंगे तथा बड़े-बड़े पाप एक ओर रख दिये जायेंगे । उससे कहा जायेगा कि तूने अमुक-अमुक दिन अमुक-अमुक कार्य किया था ? वह सकारात्मक उत्तर देगा, अस्वीकार करने की उस में शक्ति नहीं होगी । इसके अतिरिक्त वह इस बात से भी भयभीत होगा कि अभी तो बड़े पाप भी प्रस्तुत किये जायेंगे । कि इतने में उससे कहा जायेगा, कि जा तेरे लिए प्रत्येक बुराई के बदले में एक पुण्य है । अल्लाह की दया देखकर वह कहेगा, कि अभी तो मेरे बहुत से कर्म ऐसे हैं कि मैं उन्हें यहाँ नहीं देख रहा, यह वर्णन करके, रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हँस पड़े, यहाँ तक आपके दाँत प्रकट हो गये ।" (सहीह मुस्लिम किताबुल ईमान, बाब अदना अहलिल जन्नते मंज़िलतुन फ़ीहा)

[1]पहली क्षमा का सम्बन्ध कुफ्र तथा शिर्क (मूर्तिपूजा) से है । इस क्षमा का सम्बन्ध अन्य बुराईयों एवं त्रुटियों से है ।

[2] زور (ज़ूर) का अर्थ है झूठ । प्रत्येक असत्य वस्तु भी झूठ है, इसीलिए झूठी गवाही से लेकर कुफ्र तथा शिर्क एवं हर प्रकार की ग़लत बातें जैसे खेल-कूद, गाना तथा अन्य व्यर्थ मूर्खता पूर्ण रीति-रिवाज इसी में सम्मिलित है तथा अल्लाह की इबादत करने वालों की यह भी विशेषता है कि वे किसी भी झूठ में तथा झूठे संघ में उपस्थिति नहीं होते ।

[3]बेकार (व्यर्थ) प्रत्येक वह बात तथा कार्य है जिसमें धर्मानुसार कोई लाभ न हो । अर्थात ऐसे कार्यों एवं बातों में भी वह भाग नहीं लेते बल्कि शान्ति के साथ सम्मान सहित निकल जाते हैं ।

وَالَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوا عَلَيْهَا صُمًّا وَعُمْيَانًا ﴿٧٣﴾

(७३) तथा जब उन्हें उनके प्रभु (के कथन और प्रवचन) की आयतें सुनाई जाती हैं, तो वे अंधे-बहरे होकर उन पर नहीं गिरते ।[1]

وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ﴿٧٤﴾

(७४) तथा वह यह दुआ (विनय) करते हैं कि हे हमारे प्रभु ! तू हमें हमारी पत्नियों तथा सन्तानों से आँखों को ठंडक प्रदान कर[2] तथा हमें सदाचारियों का अगुवा बना दे ।[3]

أُولَٰئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا تَحِيَّةً وَسَلَامًا ﴿٧٥﴾

(७५) यही वे लोग हैं जिन्हें उनके धैर्य (सहन) के बदले (स्वर्ग की उच्च) अटारियाँ प्रदान की जायेंगी, जहाँ उन्हें आशीर्वाद तथा सलाम पहुँचाया जायेगा ।

خَالِدِينَ فِيهَا ۚ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ﴿٧٦﴾

(७६) इसमें वे सदैव रहेंगे, वह बहुत ही अच्छा स्थान एवं सुखद स्थान है ।

قُلْ مَا يَعْبَأُ بِكُمْ رَبِّي لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ ۖ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُونُ لِزَامًا ﴿٧٧﴾

(७७) कह दीजिए ! यदि तुम्हारी विनम्र प्रार्थना न होती तो मेरा प्रभु तुम्हारी कदापि चिन्ता न करता ।[4] तुम तो झुठला चुके अब

---

[1]अर्थात वह इनसे मुख नहीं मोड़ते तथा विमुखता नहीं बरतते, जैसे वे बहरे हों कि सुनें ही नहीं अथवा अंधे हों कि देखें ही नहीं । बल्कि वे ध्यान लगाकर सुनते तथा कान की शोभा तथा प्राण यन्त्र बना लेते हैं ।

[2]अर्थात उन्हें अपना आज्ञाकारी बना तथा हमारा भी आज्ञा पालक, जिससे हमारी आँखें ठंडी हों ।

[3]अर्थात ऐसा अच्छा नमूना कि पुण्य में वह हमारे अनुगामी हों ।

[4]दुआ तथा विनती का अर्थ अल्लाह को पुकारना तथा उसकी इबादत (उपासना) करना है तथा अर्थ यह है कि तुम्हारी उत्पत्तिं का उद्देश्य अल्लाह की इबादत है । यदि यह न हो तो अल्लाह को तुम्हारी कोई चिन्ता नहीं होगी, अर्थात अल्लाह के सदन में मनुष्य का मान-सम्मान उसके अल्लाह पर ईमान लाने तथा उसकी इबादत करने के कारण ही है ।

शीघ्र ही मैं उसका दण्ड तुम्हें चिमट जाने वाला होगा ।[1]

सूरतुश्शुअरा-२६

سُورَةُ الشُّعَرَاءِ

सूरः शुअरा मक्का में अवतरित हुई तथा इस में दो सौ सत्ताईस आयतें तथा ग्यारह रूकूअ है ।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु तथा अत्यन्त दयालु है ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ○

(१) ता॰सीन॰मीम॰

طسٓمٓ ①

(२) ये आयतें ज्योर्तिमय किताब की हैं ।

تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ②

(३) उनके ईमान न लाने पर शायद आप तो अपना प्राण त्याग देंगे ।[2]

لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ أَلَّا يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ③

(४) यदि हम चाहते तो उन पर आकाश से कोई ऐसा प्रतीक उतारते कि जिसके समक्ष उनकी गर्दनें झुक जातीं ।[3]

إِن نَّشَأْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِم مِّنَ السَّمَاءِ آيَةً فَظَلَّتْ أَعْنَاقُهُمْ لَهَا خَاضِعِينَ ④

---

[1] इसमें काफिरों को सम्बोधन है कि तुमने अल्लाह को झुठलाया है, तो अब उसका दण्ड भी अवश्य तुम्हें भोगना है । अत: दुनिया में यह दण्ड बद्र में पराजय के रूप में उन्हें मिली तथा परलोक के नरक में स्थाई यातना भी उन्हें भोगनी होगी ।

[2] नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मानवता से जो सहानुभूति और जो शुभचिन्ता तथा उनके मार्गदर्शन के लिए जो तड़प थी, इसमें उसका प्रदर्शन है ।

[3] अर्थात जिसे माने तथा जिस पर ईमान लाये बिना चारा न होता । परन्तु इस प्रकार दबाव का पक्ष सम्मिलित हो जाता, जबकि हमने मनुष्य को इच्छा तथा मानने न मानने की स्वाधीनता प्रदान कर रखी है । ताकि उसकी परीक्षा ली जा सके । इसलिए हमने ऐसी निशानी भी नहीं उतारी कि जिससे हमारा कानून प्रभावित हो । तथा केवल नबी, तथा रसूल भेजने एवं किताबें (धर्मशास्त्र) उतारने पर ही बस किया ।

وَمَا يَأْتِيهِم مِّن ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمَٰنِ مُحْدَثٍ إِلَّا كَانُوا عَنْهُ مُعْرِضِينَ ⑤

(५) तथा उनके पास दयालु की ओर से जो भी नई शिक्षायें आयी यह उससे मुख फेरने वाले बन गये।

فَقَدْ كَذَّبُوا فَسَيَأْتِيهِمْ أَنبَاءُ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ⑥

(६) उन लोगों ने झुठलाया है अब उनके पास शीघ्र ही उसकी सूचनायें आ जायेंगी, जिसके साथ वे उपहास कर रहे हैं।[1]

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الْأَرْضِ كَمْ أَنبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ⑦

(७) क्या उन्होंने धरती की ओर नहीं देखा ? कि हमने उसमें हर प्रकार के सुन्दर जोड़े कितने उगाये हैं।[2]

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ⑧

(८) निःसंदेह उसमें अवश्य प्रतीक है,[3] तथा उनमें के अधिकतर लोग ईमान (विश्वास) वाले नहीं हैं।[4]

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ⑨

(९) तथा तेरा प्रभु निःसंदेह वही प्रभावशाली

---

[1]अर्थात झुठलाने के परिणाम स्वरूप हमारा प्रकोप निकट भविष्य में उन्हें अपनी पकड़ में ले लेगा, जिसे वे असम्भव समझकर उपहास करते हैं। यह प्रकोप दुनिया में भी सम्भव है जैसे कि कई समुदाय नाश हुए, अन्य अवस्था में आख़िरत में तो उससे किसी अवस्था में छुटकारा नहीं होगा। ما كانوا عنه معرضين नहीं कहा बल्कि ما كانوا به يَسْتَهْزِؤُن कहा। क्योंकि उपहास एक तो मुख मोड़ने एवं झुठलाने में अवश्य होता है। दूसरे यह मुख मोड़ने तथा झुठलाने से भी अधिक बड़ा अपराध है। (फ़तहुल क़दीर)

[2] زَوْجٌ का दूसरा अर्थ यहाँ भेद तथा प्रकार किये गये हैं। अर्थात प्रत्येक प्रकार की वस्तुयें पैदा कीं जो उत्तम हैं अर्थात मनुष्य के लिए लाभकारी हैं अथवा अधिक मात्रा में हैं जिस प्रकार अन्न, फल, शुष्क मेवे तथा जीव जन्तु आदि हैं।

[3]अर्थात जब अल्लाह तआला मृत धरती से ये वस्तुयें पैदा कर सकता है, तो क्या वह मनुष्यों को पुनः जीवित नहीं कर सकता।

[4]अर्थात उसके महान सामर्थ्य को देखने के उपरान्त अधिकतर लोग अल्लाह तथा रसूल को झुठलाते ही हैं, ईमान नहीं लाते।

तथा कृपालु है ।[1]

(१०) तथा जब आपके प्रभु ने मूसा को पुकारा कि तू अत्याचारी लोगों के पास जा ।[2]

وَاِذْ نَادٰى رَبُّكَ مُوْسٰٓى اَنِ ائْتِ الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝١٠

(११) फ़िरऔन के समुदाय के पास, क्या वह सदाचार न करेंगे ।

قَوْمَ فِرْعَوْنَ ۭ اَلَا يَتَّقُوْنَ ۝١١

(१२) मूसा ने कहा मेरे प्रभु ! मुझे तो भय है कि कहीं वह मुझे झुठला (न) दें ।

قَالَ رَبِّ اِنِّىْٓ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ۝١٢

(१३) तथा मेरा सीना (हृदय) संकुचित हो रहा है,[3] मेरी जीभ चल नहीं रही,[4] अत: तू हारून की ओर भी प्रकाशना (वह्यी) भेज ।[5]

وَيَضِيْقُ صَدْرِيْ وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِيْ فَاَرْسِلْ اِلٰى هٰرُوْنَ ۝١٣

---

[1]अर्थात प्रत्येक वस्तु पर उसका प्रभुत्व तथा बदला लेने पर प्रत्येक प्रकार का सामर्थ्य है, परन्तु चूँकि वह दयालु भी है इसलिए तुरन्त पकड़ नहीं करता बल्कि पूरा अवसर देता है तथा उसके पश्चात पकड़ करता है ।

[2]यह प्रभु की उस समय की पुकार है जब आदरणीय मूसा मदयन से अपनी पत्नी के साथ वापस आ रहे थे, मार्ग में उन्हें तापने के लिए अग्नि की आवश्यकता प्रतीत हुई, तो आग की खोज में तूर पर्वत तक पहुँच गये, जहाँ से आकाशवाणी ने उनका स्वागत किया तथा उन्हें नबूअत के पद से सुशोभित किया गया तथा अत्याचारियों तक अल्लाह का संदेश पहुँचाने का कर्तव्य उनको सौंपा गया ।

[3]इस भय से कि वह अत्यन्त क्रूर है, मुझे झुठलायेगा । इससे ज्ञात हुआ कि प्राकृतिक भय नबियों को भी हो सकता है ।

[4]यह संकेत है इस बात की ओर कि आदरणीय मूसा अधिक धारा प्रवाह में बात नहीं करते थे । अथवा उस ओर कि जीभ पर अंगारा रखने के कारण उच्चारण में त्रुटि उत्पन्न हो गई थी, जिसे व्याख्याकार वर्णित करते हैं ।

[5]अर्थात उनकी ओर जिब्रील को प्रकाशना (वह्यी) लेकर भेज तथा उन्हें भी प्रकाशना (वह्यी) तथा नबूअत से सुशोभित कर मेरा सहायक बना ।

وَلَهُمْ عَلَىَّ ذَنْبٌ فَأَخَافُ أَن يَقْتُلُونِ ⑭

(१४) तथा उनका मुझ पर मेरी एक त्रुटि का (दावा) भी है, मुझे डर है कि कहीं वह मुझे मार न डालें ।[1]

قَالَ كَلَّا ۖ فَاذْهَبَا بِآيَاتِنَا ۖ إِنَّا مَعَكُم مُّسْتَمِعُونَ ⑮

(१५) (महाशक्तिशाली ने) कहा कि कदापि ऐसा न होगा, तुम दोनों हमारी निशानियाँ लेकर जाओ,[2] हम स्वयं सुनने वाले तुम्हारे साथ हैं ।[3]

فَأْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُولَا إِنَّا رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ⑯

(१६) तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाकर कहो कि नि:संदेह हम विश्व के पालनहार के भेजे हुए हैं ।

---

[1]यह संकेत है उस हत्या की ओर जो आदरणीय मूसा से अनजाने में हो गयी थी तथा मृतक 'क़िबती' अर्थात फ़िरऔन की जाति का था, इसलिए फ़िरऔन उसके बदले में आदरणीय मूसा की हत्या कर देना चाहता था, जिसकी सूचना पाकर आदरणीय मूसा मिस्र से मदयन चले गये थे । इस घटना को यद्यपि कई वर्ष व्यतीत हो गये थे, परन्तु फ़िरऔन के पास जाने पर वास्तव में इसकी संभावना थी कि फ़िरऔन उनको पकड़कर इस अपराध के कारण हत्या का दण्ड देने का प्रयत्न करे । इसलिए यह भय भी निराधार नहीं था ।

[2]अल्लाह तआला ने साँत्वना दी कि तुम दोनों जाओ, मेरा संदेश उसको पहुँचाओ, तुम्हें जिस संभावना का भय है उससे हम तुम्हारी रक्षा करेंगे । आयात से तात्पर्य तर्क एवं स्पष्ट निशानियाँ हैं जिनसे प्रत्येक पैग़म्बर को परिचित करा दिया जाता है अथवा वे चमत्कार हैं जो आदरणीय मूसा को दिये गये थे, जैसे हाथ का ज्योतिर्मय होना तथा छड़ी ।

[3]अर्थात तुम जो कुछ कहोगे तथा उत्तर में वह जो कुछ कहेगा, हम सुन रहे होंगे । इसलिए घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है । हम तुम्हें रिसालत का दायित्व देकर निश्चिन्त नहीं हो जायेंगे । बल्कि हमारी सहायता तुम्हारे साथ है । साथ होने का अर्थ सहायता एवं समर्थन देना है ।

(१७) कि तू हमारे साथ इस्राईल की सन्तान को भेज दे ।[1]

أَنْ أَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ ﴿١٧﴾

(१८) (फ़िरऔन ने) कहा कि क्या हमने तुझे तेरी बाल्यावस्था में अपने यहाँ पोषण नहीं किया था ?[2] तथा तूने अपनी आयु के बहुत से वर्ष हममें व्यतीत नहीं किये ?[3]

قَالَ أَلَمْ نُرَبِّكَ فِينَا وَلِيدًا وَلَبِثْتَ فِينَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِينَ ﴿١٨﴾

(१९) तथा फिर तू अपना वह कार्य कर गया जो कर गया तथा तू अकृतज्ञों में से है ।[4]

وَفَعَلْتَ فَعْلَتَكَ ٱلَّتِى فَعَلْتَ وَأَنتَ مِنَ ٱلْكَٰفِرِينَ ﴿١٩﴾

(२०) (आदरणीय मूसा ने) उत्तर दिया कि मैंने इस कार्य को उस समय किया था, जबकि मैं मार्ग भूले हुए लोगों में से था ।[5]

قَالَ فَعَلْتُهَآ إِذًا وَأَنَا۠ مِنَ ٱلضَّآلِّينَ ﴿٢٠﴾

---

[1]अर्थात एक बात यह कहो कि हम अपनी इच्छा से तेरे पास नहीं आये हैं, बल्कि सर्वलोक के प्रभु के प्रतिनिधि तथा उसके रसूल के रूप में आये हैं तथा दूसरी बात यह कि तूने (चार सौ वर्ष से) इस्राईल की सन्तान को दास बना रखा है, उनको स्वतन्त्र कर दे, ताकि मैं उन्हें सीरिया की धरती पर ले जाऊँ जिसका अल्लाह ने उनसे वादा किया है ।

[2]फ़िरऔन ने आदरणीय मूसा के आमन्त्रण एवं माँग पर विचार करने के बजाय, उनका अपमान तथा अनादर करना प्रारम्भ कर दिया तथा कहा कि क्या तू वही है जो हमारी गोद में तथा हमारे घर में पला, जबकि हम इस्राईल की सन्तान के बालकों की हत्या कर देते थे ।

[3]कुछ कहते हैं कि १८ वर्ष फ़िरऔन के भवन में व्यतीत किये, कुछ के निकट ३० तथा कुछ के निकट ४० वर्ष । अर्थात इतनी आयु व्यतीत करने के पश्चात, कुछ वर्ष इधर-उधर रहकर अब तू नबूअत का दावा करने लगा है ?

[4]फिर हमारा ही खाकर हमारे ही जाति के एक व्यक्ति की हत्या करके हमारी कृतघ्नता व्यक्त किया ।

[5]अर्थात यह हत्या का प्रयास नहीं था बल्कि एक घूँसा ही था, जो उसे मारा था, जिससे उसकी मृत्यु हो गई । इसके अतिरिक्त यह घटना भी नबूअत से पूर्व की है, जबकि मुझे ज्ञान का यह प्रकाश नहीं दिया गया था ।

(२१) फिर तुम से भय खाकर मैं तुमसे भाग गया फिर मुझे मेरे प्रभु ने आदेश तथा ज्ञान प्रदान किया तथा मुझे अपने पैग़म्बरों में से कर दिया ।[1]	فَفَرَرْتُ مِنكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِي رَبِّي حُكْمًا وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٢١﴾
(२२) तथा मुझ पर क्या तेरा यही वह उपकार है ? जिसे तू प्रदर्शित कर रहा है कि तूने इस्राईल की सन्तान को दास बना रखा है ।[2]	وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ أَنْ عَبَّدتَّ بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٢٢﴾
(२३) फ़िरऔन ने कहा समस्त विश्व का प्रभु क्या है ?[3]	قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٣﴾
(२४) (आदरणीय मूसा ने) कहा वह आकाशों तथा धरती एवं उनके मध्य की सभी वस्तुओं का प्रभु है, यदि तुम विश्वास रखने वाले हो ।	قَالَ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِن كُنتُم مُّوقِنِينَ ﴿٢٤﴾
(२५) (फ़िरऔन ने) अपने निकटवर्तियों से	قَالَ لِمَنْ حَوْلَهُ أَلَا تَسْتَمِعُونَ ﴿٢٥﴾

[1]अर्थात पहले जो कुछ हुआ, अपने स्थान पर, परन्तु अब मैं अल्लाह का रसूल हूँ, यदि मेरा अनुकरण करेगा तो बच जायेगा अन्य परिस्थितियों में विनाश तेरे भाग्य में लिख दिया गया है ।

[2]अर्थात यह अच्छा उपकार है जो तू मुझे जता रहा है कि मुझे नि:संदेह दास नहीं बनाया तथा स्वतन्त्र छोड़े रखा, परन्तु मेरे पूरे सम्प्रदाय को दास बनाये रखा है । इस महा अत्याचार के सापेक्ष इस उपकार का क्या महत्व है ?

[3]यह उसने प्रश्न नहीं पूछा है, बल्कि गर्व का प्रदर्शन तथा अस्वीकृत रूप में कहा क्योंकि उस का दावा तो यह था ।

﴿مَا عَلِمْتُ لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرِي﴾

"मैं अपने अतिरिक्त तुम्हारे लिए कोई अन्य देवता जानता ही नहीं ।" (सूरः *अल-क़सस-३८*)

कहा कि क्या तुम सुन नहीं रहे ?[1]

(२६) (आदरणीय मूसा ने) कहा वह तुम्हारा तथा तुम्हारे पूर्वजों का प्रभु है।

قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٦﴾

(२७) (फ़िरऔन ने) कहा (लोगो) ! तुम्हारा यह रसूल जो तुम्हारी ओर भेजा गया है, यह तो निश्चित ही दीवाना है।

قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْٓ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٢٧﴾

(२८) (आदरणीय मूसा ने) कहा वही पूर्व तथा पश्चिम का तथा उनके मध्य की सभी वस्तुओं का प्रभु है,[2] यदि तुम बुद्धि रखते हो।

قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٨﴾

(२९) (फ़िरऔन) कहने लगा (सुन ले) यदि तूने मेरे अतिरिक्त किसी को देवता बनाया तो मैं तुझे बन्दियों में डाल दूँगा।[3]

قَالَ لَىِٕنِ اتَّخَذْتَ اِلٰهًا غَيْرِيْ لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ ﴿٢٩﴾

(३०) (मूसा ने) कहा चाहे मैं तेरे पास कोई प्रत्यक्ष वस्तु ले आऊँ ?[4]

قَالَ اَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٠﴾

---

[1]अर्थात क्या तुम इसकी बात पर आश्चर्य चकित नहीं होते कि मेरे अतिरिक्त भी कोई अन्य पूज्य है।

[2]अर्थात जिसने पूर्व को पूर्व बनाया, जिससे सितारे उदय होते हैं तथा पश्चिम को पश्चिम बनाया जिसमें सितारे अस्त होते हैं। इस प्रकार उनके मध्य जो कुछ है, उनका प्रभु तथा उनका प्रवन्ध करने वाला भी वही है।

[3]फ़िरऔन ने जव देखा कि मूसा अलैहिस्सलाम विभिन्न प्रकार से सर्वलोक के प्रभु के पूर्ण प्रभुत्व का स्पष्टीकरण कर रहे हैं जिसका कोई उचित उत्तर उससे नहीं बन पा रहा है। तो उसने तर्कों को छोड़ कर धमकी देना प्रारम्भ कर दिया तथा मूसा को जेल में डालने के लिए डराया।

[4]अर्थात ऐसी कोई वस्तु अथवा चमत्कार जिससे यह स्पष्ट हो जाये कि मैं सच्चा तथा वास्तविक रूप से अल्लाह का रसूल हूँ तब भी तू मेरी सत्यता को स्वीकार न करेगा ?

قَالَ فَأْتِ بِهِۦٓ إِن كُنتَ مِنَ ٱلصَّٰدِقِينَ ﴿٣١﴾

(३१) (फ़िरऔन ने) कहा यदि तू सत्यवादियों में से है तो उसे प्रस्तुत कर।

فَأَلْقَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِىَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ﴿٣٢﴾

(३२) आप ने (उसी समय) अपनी छड़ी डाल दी जो अचानक खुल्लम-खुला (बहुत बड़ा) अजगर बन गई।[1]

وَنَزَعَ يَدَهُۥ فَإِذَا هِىَ بَيْضَآءُ لِلنَّٰظِرِينَ ﴿٣٣﴾

(३३) तथा अपना हाथ खींच निकाला तो वह भी उसी समय प्रत्येक देखने वाले को उज्जवल प्रकाश वाला दिखायी देने लगा।[2]

قَالَ لِلْمَلَإِ حَوْلَهُۥٓ إِنَّ هَٰذَا لَسَٰحِرٌ عَلِيمٌ ﴿٣٤﴾

(३४) (फ़िरऔन) अपने निकटवर्ती सरदारों से कहने लगा कि यह तो कोई बहुत बड़ा दक्ष जादूगर है।[3]

يُرِيدُ أَن يُخْرِجَكُم مِّنْ أَرْضِكُم بِسِحْرِهِۦ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ﴿٣٥﴾

(३५) यह तो चाहता है कि अपने जादू के बल से तुम्हें तुम्हारी धरती से निकाल दे, बताओ अब तुम क्या राय देते हो ?[4]

---

[1]कई स्थान पर ثُعبانٌ (सर्प) को حَيَّةٌ (नाग) तथा कई स्थान पर جَانٌّ कहा गया है। ثُعبانٌ वह सर्प होता है जो बड़ा हो तथा جَانٌّ छोटे साँप को कहते हैं तथा حَيَّةٌ छोटे-बड़े दोनों प्रकार के सर्प को बोला जाता है। (फ़तहुल क़दीर) अर्थात यह चमत्कार देते समय लाठी ने पहले छोटे सर्प का रूप धारण किया फिर देखते ही देखते अजगर बन गया। والله أعلم

[2]अर्थात जेब से हाथ निकाला तो वह चन्द्रमा के टुकड़े की भाँति चमकता था। यह दूसरा चमत्कार मूसा ने प्रस्तुत किया।

[3]फ़िरऔन बजाय इसके कि इन चमत्कारों को देखकर, आदरणीय मूसा की पुष्टि करता तथा ईमान लाता, उसने झुठलाने तथा द्वेष का मार्ग अपनाया तथा आदरणीय मूसा के विषय में कहा कि यह कोई दक्ष जादूगर है।

[4]फिर अपने सम्प्रदाय को और अधिक भड़काने के लिए कहा कि वह इन जादू के द्वारा तुम्हें यहाँ से निकाल करके स्वयं इस पर अधिकार करना चाहता है। अब बताओ ! तुम्हारा क्या विचार है ? अर्थात इसके साथ क्या व्यवहार किया जाये।

قَالُوٓا۟ أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَٱبْعَثْ فِى ٱلْمَدَآئِنِ حَٰشِرِينَ ﴿٣٦﴾

(३६) उन सबने कहा आप इसे तथा इसके भाई को स्थगित कीजिए तथा सभी नगरों में एकत्रित करने वालों को भेज दीजिए।

يَأْتُوكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيمٍ ﴿٣٧﴾

(३७) जो आपके पास दक्ष जादूगरों को हो ले आयें।[1]

فَجُمِعَ ٱلسَّحَرَةُ لِمِيقَٰتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ﴿٣٨﴾

(३८) फिर एक निर्धारित दिन के निश्चय पर सभी जादूगर एकत्रित किये गये।[2]

وَقِيلَ لِلنَّاسِ هَلْ أَنتُم

(३९) तथा जनसामान्य से भी कह दिया गया

---

[1]अर्थात इन दोनों को अभी तो इनके हाल पर छोड़ दो, तथा सभी नगरों से जादूगर एकत्रित करके उनमें प्रतियोगिता करायी जाये ताकि इनके जादू का उत्तर तथा तेरा समर्थन एवं विजय हो जाये। तथा यह अल्लाह ही की ओर से अपनी योजना थी ताकि लोग एक ही स्थान पर एकत्रित हो जायें तथा इन निशानियों तथा चमत्कारों का प्रत्यक्ष स्वयं दर्शन करें जो अल्लाह तआला ने आदरणीय मूसा को प्रदान किया था।

[2]अत: जादूगरों की एक बड़ी संख्या मिस्र तथा उसके निकटवर्ती क्षेत्रों से एकत्रित कर ली गयी, उनकी संख्या १२ हज़ार, १७ हज़ार, १९ हज़ार, ३० हज़ार, तथा ८० हज़ार (विभिन्न कथनानुसार) बतायी जाती है। वास्तविक संख्या अल्लाह ही उचित रूप से जानता है । क्योंकि किसी प्रमाणित कथन में संख्या का वर्णन नहीं है। इसका विस्तृत वर्णन *सूर: आराफ़, सूर: ताहा* में भी गुज़र चुका है। अर्थात फ़िरऔन के सम्प्रदाय किब्त, ने तो अल्लाह की दिव्य ज्योति को अपने मुख से बुझाना चाहा था, परन्तु अल्लाह तआला अपने दिव्य ज्योति को पूर्ण करना चाहता था। अत: कुफ्र तथा ईमान के संघर्ष में सदैव ऐसा ही होता आया है कि जब भी कुफ्र जाँघ ठोंक कर ईमान के मुक़ाबिले में आता है तो ईमान को अल्लाह तआला सम्मानित तथा प्रभावशाली करता है। जिस प्रकार फ़रमाया :

﴿ بَلْ نَقْذِفُ بِٱلْحَقِّ عَلَى ٱلْبَٰطِلِ فَيَدْمَغُهُۥ فَإِذَا هُوَ زَاهِقٌ ﴾

"बल्कि हम सत्य को असत्य पर खींच मारते हैं, अत: वह उसका सिर फोड़ देता है तथा असत्य उसी समय समाप्त हो जाता है।" (*सूर: अल-अंबिया-१८*)

مُّجْتَمِعُونَ ﴿٣٩﴾

कि तुम भी एकत्रित हो जाओगे ।[1]

لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ إِن كَانُوا هُمُ الْغَالِبِينَ ﴿٤٠﴾

(४०) ताकि यदि जादूगर प्रभावशाली हो जायें तो हम उन्हीं का अनुकरण करेंगे ।

فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالُوا لِفِرْعَوْنَ أَئِنَّ لَنَا لَأَجْرًا إِن كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ﴿٤١﴾

(४१) जादूगर आकर फ़िरऔन से कहने लगे कि यदि हम विजयी हुए तो हमें कुछ उपहार भी मिलेगा ।

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ إِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿٤٢﴾

(४२) (फ़िरऔन ने) कहा हाँ ! (अत्यन्त प्रसन्नता से) बल्कि ऐसी परिस्थिति में तुम मेरे विशेष दरबारी बन जाओगे ।

قَالَ لَهُم مُّوسَىٰ أَلْقُوا مَا أَنتُم مُّلْقُونَ ﴿٤٣﴾

(४३) (आदरणीय) मूसा ने जादूगरों से कहा जो कुछ तुम्हें डालना है डाल दो ।[2]

فَأَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ إِنَّا لَنَحْنُ الْغَالِبُونَ ﴿٤٤﴾

(४४) उन्होंने अपनी रस्सियाँ तथा डन्डे डाल दिये तथा कहने लगे फ़िरऔन के सम्मान की सौगन्ध हम अवश्य विजयी होंगे ।[3]

---

[1]अर्थात जनता को भी सावधान किया जा रहा है कि तुम्हें भी यह प्रतियोगिता देखने के लिए अवश्य उपस्थिति होना है ।

[2]आदरणीय मूसा की ओर से जादूगरों को प्रथम अपने खेल दिखाने के लिए कहने में यह विशेषता ज्ञात होती है कि प्रथम तो उन पर यह स्पष्ट हो जाये कि अल्लाह का पैग़म्बर इनकी इतनी बड़ी संख्या तथा उनके जादुई खेलों से तनिक भी भयभीत नहीं है । द्वितीय यह उद्देश्य भी हो सकता है कि जब बाद में अल्लाह के आदेश से ये सारे जादुई खेल एक क्षण में समाप्त हो जायेंगे तो दर्शकों पर अच्छे प्रभाव पड़ेंगे तथा शायद इस प्रकार अधिक लोग अल्लाह पर ईमान ले आयेंगे । अत: ऐसा ही हुआ, बल्कि जादूगर ही सर्वप्रथम ईमान ले आये । जैसाकि आगे आ रहा है ।

[3]जैसाकि *सूर: अल-आराफ़* तथा *सूर: ताहा* में गुज़र चुका है कि उन जादूगरों ने अपने विचार से बहुत बड़ा जादू प्रस्तुत किया था । ﴿سَحَرُوا أَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوهُمْ وَجَاءُوا بِسِحْرٍ عَظِيمٍ﴾ (सूर: आराफ़-११६)

(४५) अब (आदरणीय) मूसा ने भी अपनी छड़ी डाल दी, जिसने उसी क्षण उनके झूट के बनाये खेल को निगलना प्रारम्भ कर दिया।

فَأَلْقَىٰ مُوسَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿٤٥﴾

(४६) यह देखते ही जादूगर सजदा (नतमस्तक) में गिर गये।

فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سَاجِدِينَ ﴿٤٦﴾

(४७) तथा उन्होंने स्पष्ट रूप से कह दिया कि हम तो समस्त लोक के प्रभु पर ईमान ले आये।

قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٧﴾

(४८) अर्थात मूसा तथा हारून के प्रभु पर।

رَبِّ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ﴿٤٨﴾

(४९) (फ़िरऔन ने) कहा कि मेरी आज्ञा से पूर्व तुम उस पर ईमान ले आये। निःसंदेह यही तुम्हारा प्रमुख (बड़ा गुरू) है जिसने तुम सब को जादू सिखाया है[1] तो तुम्हें अभी-अभी ज्ञात हो जायेगा, सौगन्ध है, मैं भी

قَالَ آمَنتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ ۖ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۚ لَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُم مِّنْ

यहाँ तक कि आदरणीय मूसा ने भी अपने हृदय में भय का आभास किया ﴿فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُّوسَىٰ﴾ (सूर: ताहा-६७) अर्थात उन जादूगरों को अपनी सफलता तथा श्रेष्ठता पर अति विश्वास था, जैसाकि यहाँ इन शब्दों से स्पष्ट है परन्तु अल्लाह तआला ने आदरणीय मूसा को साँत्वना दी, कि भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। ज़रा अपनी लाठी धरती पर फेंकों फिर देखो। अतः लाठी का धरती पर फेंकना था कि उसने एक भयानक अजगर का रूप धारण कर लिया तथा एक-एक करके उनके सारे जादुई खेलों को वह निगल गया। जैसाकि अगली आयत में है।

[1]फ़िरऔन के लिए यह घटना विचित्र एवं अत्यन्त आश्चर्यजनक थी कि जिन जादूगरों के द्वारा वह विजय एवं सफलता की आशा लगाये बैठा था, वही न केवल पराजित हो गये, बल्कि उसी समय वे उस प्रभु पर ईमान ले आये जिसने आदरणीय मूसा तथा हारून को प्रमाण तथा चमत्कार देकर भेजा था, परन्तु बजाय इसके कि फ़िरऔन भी विचार तथा चिन्तन करके ईमान ले आता, उसने गर्व तथा घमण्ड का मार्ग अपनाया तथा जादूगरों को डराना धमकाना प्रारम्भ कर दिया तथा कहा कि तुम सबके सब इसके शिष्य (चेले) हो। तुम्हारा उद्देश्य समझ में आता है कि इस षड़यन्त्र के द्वारा तुम हमें यहाँ से निष्कासित कर दो। ﴿إِنَّ هَٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوهُ فِي الْمَدِينَةِ لِتُخْرِجُوا مِنْهَا أَهْلَهَا﴾ (सूर: अल-आराफ़-१२३)

तुम्हारे हाथ-पैर उल्टे रूप से काट दूंगा तथा तुम सबको फाँसी पर लटका दूंगा ।[1]

خِلَافٍ وَلَأُصَلِّبَنَّكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٩﴾

(५०) उन्होंने कहा कि कोई चिन्ता नहीं[2] हम तो अपने प्रभु की ओर लौटकर जाने वाले ही हैं ।

قَالُوا لَا ضَيْرَ ۖ إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا مُنقَلِبُونَ ﴿٥٠﴾

(५१) इस आधार पर कि हम सर्वप्रथम ईमान वाले बने हैं,[3] हमें आशा होती है कि हमारा प्रभु हमारी सभी त्रुटियाँ क्षमा कर देगा ।

إِنَّا نَطْمَعُ أَن يَغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطَايَانَا أَن كُنَّا أَوَّلَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٥١﴾

(५२) तथा हमने मूसा को प्रकाशना (वह्यी) की कि रातों-रात मेरे भक्तों को निकाल ले जा, तुम सब पीछा किये जाओगे ।[4]

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي إِنَّكُم مُّتَّبَعُونَ ﴿٥٢﴾

(५३) फ़िरऔन ने नगरों में एकत्रित करने वालों को भेज दिया ।

فَأَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ﴿٥٣﴾

(५४) कि निःसंदेह यह गुट बहुत ही अल्प

إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيلُونَ ﴿٥٤﴾

---

[1]उल्टे हाथ-पैर काटने का अर्थ, दाहिना हाथ बायाँ पैर अथवा बायाँ हाथ तथा दाहिना पैर है इसके ऊपर फाँसी पर चढ़ाना अलग । अर्थात हाथ-पैर काटने से भी उसके क्रोध की अग्नि ठंडी न हुई, तो उसने फाँसी पर लटकाने की घोषणा तक की ।

[2] لا ضير कोई बात नहीं अथवा हमें कोई चिन्ता नहीं । अर्थात अब जो दण्ड चाहे दे, ईमान से नहीं फिर सकते ।

[3]प्रथम ईमानवाले इस लिये कहा कि फ़िरऔन के समुदाय वाले मुसलमान नहीं हुए तथा उन्होंने ईमान स्वीकार करनें में प्राथमिकता की ।

[4]जब मिस्र देश में आदरणीय मूसा का निवास अधिक समय तक हो गया तथा हर प्रकार से उन्होंने फ़िरऔन तथा उसके दरबारियों पर प्रमाणित कर दिया, परन्तु उसके उपरान्त वे ईमान लाने के लिए तैयार नहीं हुए, तो अब इसके अतिरिक्त कोई मार्ग शेष नहीं रह गया था कि उन्हें यातना तथा प्रकोप से पीड़ित किया जाये । अतः अल्लाह तआला ने मूसा को आदेश दिया कि रातों-रात इस्राईल की सन्तान को लेकर यहाँ से निकल जायें, तथा कहा कि फ़िरऔन तुम्हारे पीछे आयेगा, घबराना नहीं ।

संख्या में है ।[1]

(५५) तथा उस पर ये हमें अत्यन्त क्रोधित कर रहे हैं ।[2]

وَإِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُونَ ﴿٥٥﴾

(५६) तथा नि:संदेह हम बहुसंख्यक हैं, उनसे सावधान रहने वाले ।[3]

وَإِنَّا لَجَمِيعٌ حَٰذِرُونَ ﴿٥٦﴾

(५७) अन्ततः हमने उन्हें बाग़ों तथा स्रोतों से निकाल बाहर किया ।

فَأَخْرَجْنَٰهُم مِّن جَنَّٰتٍ وَعُيُونٍ ﴿٥٧﴾

(५८) तथा कोषों से और अच्छे-अच्छे स्थानों से ।[4]

وَكُنُوزٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ﴿٥٨﴾

(५९) इसी प्रकार हुआ, तथा हमने उन (सभी वस्तुओं) का उत्तराधिकारी इस्राईल की संतान को बना दिया ।[5]

كَذَٰلِكَ وَأَوْرَثْنَٰهَا بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ﴿٥٩﴾

---

[1]यह अपमानित करने के लिए कहा, वरन् उनकी संख्या छ: लाख बतायी जाती है ।

[2]अर्थात मेरी आज्ञा के बिना उनका यहाँ से भाग जाना हमारे लिए क्रोध का कारण है ।

[3]इसलिए उनके इस षड़यन्त्र को असफल करने के लिए तत्पर (तैयार) रहने की आवश्यकता है ।

[4]अर्थात फ़िरऔन तथा उसकी सेना इस्राईल की सन्तान का पीछा करने के लिए क्या निकली ? कि पुन: पलटकर अपने घरों तथा बाग़ों में आने का सौभाग्य ही नहीं हुआ । इस प्रकार अल्लाह तआला ने अपनी दूरदर्शिता एवं योजना के अनुसार उन्हें सभी सुख-सुविधाओं से वंचित करके उनका उत्तराधिकारी दूसरों को बना दिया ।

[5]अर्थात जो राज्य तथा अधिपत्य फ़िरऔन को प्राप्त थी, वह उससे छीनकर हमने इस्राईल की संतान को दे दिया । कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि इससे तात्पर्य मिस्र की भाँति राज्य तथा सांसारिक सुख हमने इस्राईल की सन्तान को भी प्रदान किया । परन्तु इस्राईल की सन्तान मिस्र से निकल जाने के पश्चात पुन: मिस्र वापस नहीं आयी । इसके अतिरिक्त *सूर: दुख़ान* में फ़रमाया गया है ﴿وَأَوْرَثْنَٰهَا قَوْمًا ءَاخَرِينَ﴾ "हमने उसका उत्तराधिकारी किसी अन्य को बनाया ।" (ऐसरूत्तफ़ासीर) प्रथम वर्णन के विषय में ज्ञान वाले कहते हैं कि قوما آخرين में قوم शब्द यद्यपि सामान्य रूप से प्रयोग हुआ है परन्तु

(६०) अत: फ़िरऔन के अनुयायी सूर्योदय से ही उनका पीछा करने में निकल पड़े ।[1]

فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ ۝٦٠

(६१) अत: जब दोनों ने एक-दूसरे को देख लिया, तो मूसा के साथियों ने कहा, हम तो नि:संदेह पकड़ लिये गये ।[2]

فَلَمَّا تَرَآءَ الْجَمْعٰنِ قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسٰٓى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ۝٦١

(६२) (मूसा ने) कहा कदापि नहीं । विश्वास करो, मेरा प्रभु मेरे साथ है, जो अवश्य मुझे मार्ग दिखायेगा ।[3]

قَالَ كَلَّا ۚ اِنَّ مَعِىَ رَبِّىْ سَيَهْدِيْنِ ۝٦٢

(६३) हमने मूसा की ओर प्रकाशना (वहयी) भेजी कि समुद्र के पानी पर अपनी छड़ी

فَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنِ اضْرِبْ

यहाँ सूर: *अल-शुअरा* में जब इस्राईल की सन्तान को उत्तराधिकारी बनाने के विषय में स्पष्ट शब्दों में आ गया, तो इससे तात्पर्य इस्राईल की सन्तान का समुदाय ही होगा। परन्तु स्वयं क़ुरआन में स्पष्ट शब्दों में होने के अनुसार मिस्र से निकलने के पश्चात इस्राईल की संतान को 'पवित्र धरती' में प्रवेश का आदेश हुआ। तथा उनके अस्वीकार करने पर चालीस वर्षों तक के लिए प्रवेश में देरी कर के 'तीह' नामक मैदान में भटकाया गया। उसके पश्चात वे 'पवित्र धरती' में प्रवेश कर पाये। अत: आदरणीय मूसा अलैहिस्सलाम की क़ब्र सहीह हदीस के अनुसार "*बैतुल मोक़द्दस*" के निकट ही है। इसलिए ठीक अर्थ यह है कि जैसी सुख-सुविधा फ़िरऔन को मिस्र में प्राप्त थी, वैसी ही सुख-सुविधायें अब इस्राईल की सन्तान को प्रदान की गयीं। परन्तु मिस्र में नहीं फ़िलिस्तीन में।

[1]अर्थात जब भोर हुआ तथा फ़िरऔन को पता लगा कि इस्राईल की सन्तान रातों-रात यहाँ से निकल गई है, तो उसके राज्याधिकार को बड़ी ठेस पहुँची। तथा सूर्योदय होते ही उनकी खोज में निकल पड़ा।

[2]अर्थात फ़िरऔन की सेना को देखते ही वे घबरा गये कि आगे समुद्र है तथा पीछे फ़िरऔन की सेना अब सुरक्षा किस प्रकार संभव है ? अब पुन: फिर वही फ़िरऔन तथा उसकी दासता होगी।

[3]आदरणीय मूसा ने सांत्वना दी कि तुम्हारा अनुमान ठीक नहीं, अब पुन: फ़िरऔन की पकड़ में नहीं जाओगे। मेरा प्रभु अवश्य सुरक्षित मार्ग की ओर संकेत करेगा।

بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ۖ فَانفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيمِ ﴿٦٣﴾

मार,[1] तो उसी समय समुद्र फट गया तथा प्रत्येक भाग पानी का बड़े पर्वत के समान हो गया।[2]

وَأَزْلَفْنَا ثَمَّ الْآخَرِينَ ﴿٦٤﴾

(६४) तथा हमने उसी स्थान पर अन्यों को निकट ला खड़ा कर दिया।[3]

وَأَنجَيْنَا مُوسَىٰ وَمَن مَّعَهُ أَجْمَعِينَ ﴿٦٥﴾

(६५) तथा मूसा को और उसके सभी साथियों को मुक्ति प्रदान कर दी।

ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخَرِينَ ﴿٦٦﴾

(६६) फिर अन्य सभी को डिबो दिया।[4]

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٦٧﴾

(६७) नि:संदेह इसमें बड़ी शिक्षा है, तथा उन में के अधिकतर लोग ईमान वाले नहीं।[5]

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٦٨﴾

(६८) तथा नि:संदेह आप का प्रभु अत्यन्त प्रभावशाली एवं दयालु है।

---

[1]अत: अल्लाह ने यह मार्गदर्शन तथा संकेत दिया कि अपनी लाठी समुद्र के पानी पर मारो, जिससे दायीं ओर का पानी दायीं तथा बायीं ओर का पानी बायीं ओर रूक गया तथा दोनों के मध्य मार्ग बन गया। कहा जाता है कि बारह क़बीलों के लिए बारह मार्ग बन गये थे।

[2] فِرق का अर्थ है समुद्र का भाग, طود का अर्थ है पर्वत। अर्थात पानी का प्रत्येक भाग बड़े पर्वत के रूप में खड़ा हो गया। यह अल्लाह तआला की ओर से चमत्कार का प्रदर्शन था ताकि मूसा तथा उनका समुदाय फ़िरऔन से छुटकारा पा ले, अल्लाह के इस समर्थन के बिना फ़िरऔन से छुटकारा सम्भव नहीं था।

[3]इससे तात्पर्य फ़िरऔन तथा उसकी सेना है अर्थात हमने दूसरों को समुद्र के निकट कर दिया।

[4]मूसा तथा उन पर ईमान लाने वालों को हमने छुटकारा दिलवाया तथा फ़िरऔन एवं उसकी सेना जब उन्हीं मार्गों से गुज़रने लगी, तो हमने समुद्र को पूर्वत स्थिति में प्रवाहित कर दिया, जिससे फ़िरऔन अपनी सेना सहित डूब गया।

[5]अर्थात यद्यपि इस घटना में जो अल्लाह की सर्वशक्तिमान होने का द्योतक है, बड़ी निशानी है, परन्तु उसके उपरान्त अधिकतर लोग ईमान लाने वाले नहीं।

(६९) तथा उन्हें इब्राहीम की घटना भी सुना दो।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ اِبْرٰهِيْمَ ۝

(७०) जबकि उन्होंने अपने पिता तथा अपने समुदाय से फ़रमाया कि तुम किसकी इबादत करते हो।

اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا تَعْبُدُوْنَ ۝

(७१) उन्होंने उत्तर दिया कि हम 'मूर्तियों की' इबादत करते हैं, हम तो निरन्तर उनके पुजारी बने बैठे हैं।[1]

قَالُوْا نَعْبُدُ اَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عٰكِفِيْنَ ۝

(७२) आप (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि जब तुम उन्हें पुकारते हो तो क्या वह सुनते भी हैं ?

قَالَ هَلْ يَسْمَعُوْنَكُمْ اِذْ تَدْعُوْنَ ۝

(७३) अथवा तुम्हें लाभ-हानि भी पहुँचा सकते हैं।[2]

اَوْ يَنْفَعُوْنَكُمْ اَوْ يَضُرُّوْنَ ۝

(७४) उन्होंने कहा यह (हम कुछ नहीं जानते) हमने तो अपने पूर्वजों को इस प्रकार करते पाया।[3]

قَالُوْا بَلْ وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا كَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ۝

(७५) (आप ने) कहा कुछ जानते भी हो,[4] जिन्हें तुम पूज रहे हो।

قَالَ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ۝

---

[1]अर्थात रात-दिन उनकी पूजा करते हैं।

[2]अर्थात तुम उनकी पूजा छोड़ दो, तो क्या वे तुम्हें हानि पहुँचाते हैं ?

[3]जब वे आदरणीय इब्राहीम के प्रश्न का कोई उचित उत्तर नहीं दे सके तो यह कह कर छुटकारा प्राप्त कर लिया। जैसे आज भी लोगों को क़ुरआन तथा हदीस की बात बतायी जाये तो यही तर्क प्रस्तुत करते हैं कि हमारे परिवार में हमारे पूर्वजों के समय से यही कुछ होता आ रहा है, हम उसे नहीं छोड़ सकते।

[4] أفرأيتم का अर्थ है यहाँ देखना, चिन्तन तथा विचार करने के अर्थ में है।

أَنتُمْ وَآبَاؤُكُمُ الْأَقْدَمُونَ ۝٧٦

(७६) तुम तथा तुम्हारे पूर्व पिता,

فَإِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّي إِلَّا رَبَّ الْعَالَمِينَ ۝٧٧

(७७) वे सभी मेरे शत्रु हैं[1] सिवाय सत्य अल्लाह (तआला) के जो सब लोकों का पालनहार है ।[2]

الَّذِي خَلَقَنِي فَهُوَ يَهْدِينِ ۝٧٨

(७८) जिसने मुझे पैदा किया है तथा वही मेरा मार्गदर्शन करता है ।[3]

وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِي وَيَسْقِينِ ۝٧٩

(७९) वही है जो मुझे खिलाता-पिलाता है ।[4]

وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ ۝٨٠

(८०) तथा जब मैं रोगी हो जाऊँ तो मुझे निरोग करता है ।[5]

وَالَّذِي يُمِيتُنِي ثُمَّ يُحْيِينِ ۝٨١

(८१) तथा वही मुझे मार डालेगा, फिर जीवित कर देगा ।[6]

---

[1]इसलिए कि तुम सब अल्लाह को छोड़कर अन्यों की पूजा करने वाले हो । कुछ व्याख्याकारों ने इसका अर्थ यह वर्णन किया है कि जिनकी तुम तथा तुम्हारे पूर्वज पूजा करते रहे हैं, वे सारे देवता मेरे शत्रु हैं अर्थात मैं उनसे अत्यन्त विमुख हूँ ।

[2]अर्थात वह शत्रु नहीं, बल्कि वह तो इस लोक तथा परलोक में मेरा संरक्षक एवं मित्र है ।

[3]अर्थात सांसारिक एवं धार्मिक हितों एवं लाभ की ओर ।

[4]अर्थात विभिन्न प्रकार की जीविका पैदा करने वाला, तथा जो पानी हम पीते हैं, उसे उपलब्ध करने वाला भी वही अल्लाह है ।

[5]रोग को दूर करके स्वास्थ प्रदान करने वाला भी वही है । अर्थात औषधियों में स्वास्थ प्रदान की शक्ति प्रदान करने का आदेश भी वही देता है । वरन् औषधियाँ भी अप्रभावी सिद्ध होती हैं । रोग भी अल्लाह के आदेश एवं इच्छा से आते हैं । परन्तु इस का सम्बन्ध अल्लाह से नहीं स्थापित किया जा सकता, बल्कि अपनी ओर किया । यह माना अल्लाह के वर्णन में उसके आदर तथा सम्मान का पक्ष सुरक्षित रखा ।

[6]अर्थात क़ियामत के दिन, जब वह सारे लोगों को पुनः जीवित करके एकत्रित करेगा, मुझे भी जीवित करेगा ।

وَالَّذِيٓ أَطْمَعُ أَن يَغْفِرَ لِي خَطِيٓـَٔتِي يَوْمَ ٱلدِّينِ ﴿٨٢﴾

(८२) तथा जिससे आशा बंधी हुई हैं कि वह बदला देने वाले दिन मेरे पाप को क्षमा कर देगा ।[1]

رَبِّ هَبْ لِي حُكْمًا وَأَلْحِقْنِي بِٱلصَّٰلِحِينَ ﴿٨٣﴾

(८३) हे मेरे प्रभु ! मुझे प्रबोध प्रदान कर[2] तथा मुझे पवित्र लोगों में मिला दे ।

وَٱجْعَل لِّي لِسَانَ صِدْقٍ فِي ٱلْءَاخِرِينَ ﴿٨٤﴾

(८४) तथा मेरी पवित्र याद आगामी लोगों में भी शेष रख ।[3]

وَٱجْعَلْنِي مِن وَرَثَةِ جَنَّةِ ٱلنَّعِيمِ ﴿٨٥﴾

(८५) तथा मुझे सुखों वाला स्वर्ग के उत्तराधिकारियों में से बना दे ।

وَٱغْفِرْ لِأَبِيٓ إِنَّهُۥ كَانَ مِنَ ٱلضَّآلِّينَ ﴿٨٦﴾

(८६) तथा मेरे पिता को क्षमा कर दे, नि:संदेह वह भटकने वालों मे से था ।[4]

---

[1]यहाँ आशा, विश्वास के अर्थ में है । क्योंकि किसी महानशक्ति से आशा, विश्वास के समकक्ष होती है, तथा अल्लाह तो पूरे विश्व की सर्व महान शक्ति है, उससे सम्बन्धित आशा विश्वास क्यों न होगी ? इसीलिए व्याख्याकार कहते हैं कि क़ुरआन में जहाँ भी अल्लाह के लिए शब्द عسى प्रयोग हुआ है, वह विश्वास के अर्थ में ही है । خَطِيٓـَٔتِي शब्द में خطيئة एक वचन है परन्तु خطايا (बहुवचन) के अर्थ में है । अंबिया अलैहिस्सलाम यद्यपि निष्पाप होते हैं । इसलिए उनसे किसी महापाप का घटित होना संभव नहीं । परन्तु फिर भी अपने कुछ कर्मों को आलस्य समझकर अल्लाह के सदन में क्षमा याचना करेंगे ।

[2]आदेश तथा विज्ञान से तात्पर्य ज्ञान तथा समझ अथवा नबूअत तथा रिसालत अथवा अल्लाह की आज्ञा तथा विधान की जानकारी है ।

[3]अर्थात जो लोग मेरे पश्चात क़ियामत तक आयेंगे, वे मेरा स्मरण अच्छे शब्दों में करते रहें । इससे ज्ञात हुआ कि पुण्यों का बदला अल्लाह तआला संसार में अच्छे शब्दों तथा उत्तम प्रशंसा के रूप में प्रदान करता है । जैसे आदरणीय इब्राहीम का स्मरण अच्छे शब्दों में सभी धर्मों के लोग करते हैं, किसी को भी उनके मान-सम्मान से इंकार नहीं ।

[4]यह दुआ उस समय की थी, जब उनको ज्ञात नहीं था कि मुशरिक (अल्लाह का शत्रु) के लिए मोक्ष की प्रार्थना (दुआ) करना निषेध है, जब अल्लाह तआला ने यह स्पष्ट कर दिया तो उन्होंने अपने पिता से भी अलगाव का प्रदर्शन कर दिया । (*सूर: अन-तौबा-११४*)

(८७) तथा जिस दिन कि लोग पुन: जीवित किये जायें मुझे अपमानित न कर ।[1]

وَلَا تُخْزِنِي يَوْمَ يُبْعَثُونَ ۝٨٧

(८८) जिस दिन कि धन तथा पुत्र कुछ काम न आयेगा ।

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ۝٨٨

(८९) परन्तु (लाभप्रद वही होगा,) जो अल्लाह तआला के समक्ष निर्दोष दिल लेकर जाये ।[2]

إِلَّا مَنْ أَتَى اللَّهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ۝٨٩

(९०) तथा सदाचारियों (परहेज़गारों) के लिए स्वर्ग अत्यन्त निकट ला दी जायेगी ।

وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝٩٠

(९१) तथा भटके हुए लोगों के लिए नरक प्रत्यक्ष कर दिया जायेगा ।[3]

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغٰوِيْنَ ۝٩١

(९२) तथा उनसे पूछा जायेगा कि तुम जिनकी पूजा करते रहे वह कहाँ हैं ।

وَقِيْلَ لَهُمْ أَيْنَمَا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ۝٩٢

---

[1]अर्थात सभी सृष्टि के समक्ष मेरी पकड़ करके अथवा यातना दे कर । हदीस में आता है कि क़ियामत के दिन जब आदरणीय इब्राहीम अपने पिता का बुरा हाल देखेंगे, तो एक बार फिर अल्लाह के समक्ष उनके लिए प्रार्थना करेंगे, हे अल्लाह ! इससे अधिक मेरे लिए अपमान क्या होगा ? अल्लाह तआला फ़रमायेगा कि मैं ने स्वर्ग काफ़िरों के लिए निषेध (हराम) कर दी है । फिर उनके पिता को गंदगी में लिपटे हुए बिज्जू की भाँति उन्हें नरक में डाल दिया जायेगा । (सहीह बुख़ारी सूर: *अल-शूअरा*, किताबुल अंबिया, बाब कौलिल्लाह वत्तख़जल्लाहु इब्राहीम ख़लीला)

[2]स्वच्छ हृदय अथवा निर्दोष हृदय से तात्पर्य वह हृदय जो शिर्क से शुद्ध हो । अर्थात ईमानवाला हृदय । इसलिए कि काफ़िर तथा द्वयवादी का हृदय रोगी होता है । कुछ कहते हैं : बिदअत से शून्य तथा सुन्नत से संतोष हृदय, कुछ के निकट माया-मोह से शुद्ध हृदय तथा कुछ के निकट मूर्खता के अंधकार तथा नैतिक पतन से स्वच्छ हृदय । यह सभी भावार्थ ठीक हो सकते हैं । क्योंकि ईमानवाले का हृदय वर्णित सभी बुराईयों से शुद्ध होता है ।

[3]अर्थ यह है कि स्वर्ग अथवा नरक में प्रवेश में पूर्व उसे उनके समक्ष प्रस्तुत कर दिया जायेगा । जिससे काफ़िरों के दुख में तथा ईमानवालों की प्रसन्नता में और अधिकता हो जायेगी ।

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ اَوْ يَنْتَصِرُوْنَ ۝٩٣

(९३) जो अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त थे, क्या वह तुम्हारी सहायता करते हैं ? अथवा कोई बदला ले सकते हैं ।[1]

فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا هُمْ وَالْغَاوٗنَ ۝٩٤

(९४) अत: वह सभी तथा कुल भटके हुए लोग नरक में ऊपर-नीचे डाल दिये जायेंगे ।[2]

وَجُنُوْدُ اِبْلِيْسَ اَجْمَعُوْنَ ۝٩٥

(९५) तथा इब्लीस की सभी की सभी सेना भी ।[3]

قَالُوْا وَهُمْ فِيْهَا يَخْتَصِمُوْنَ ۝٩٦

(९६) वहाँ वे आपस में लड़ते-झगड़ते हुए कहेंगे ।

تَاللّٰهِ اِنْ كُنَّا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٩٧

(९७) अल्लाह की सौगन्ध ! नि:सदेंह हम तो खुली त्रुटि पर थे ।

اِذْ نُسَوِّيْكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٩٨

(९८) जबकि तुम्हें सबलोक के प्रभु के समान समझ बैठे थे ।[4]

وَمَآ اَضَلَّنَآ اِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ ۝٩٩

(९९) तथा हमें तो सिवाय कुकर्मियों के किसी अन्य ने पथभ्रष्ट नहीं किया था ।[5]

---

[1]अर्थात तुमसे यातना टाल दें अथवा स्वयं अपने आपको उससे बचा लें ।

[2]अर्थात देवताओं एवं पूजारियों सबको माल के गाँठो की तरह एक-दूसरे के ऊपर डाल दिया जायेगा ।

[3]इससे तात्पर्य वह सेना है जो लोगों को भटकाती थी ।

[4]संसार में वस्तुकला के आधार पर कटा हुआ पत्थर तथा क़ब्र पर बना हुआ आकर्षित गुम्बद, मुशरिकों को दैवी शक्ति प्राप्त प्रतीत होता है । परन्तु क़ियामत वाले दिन पता चलेगा कि यह तो स्पष्ट भटकावा था कि वे उन्हें प्रभु के समान समझते थे ।

[5]अर्थात वहाँ जाकर पता चलेगा कि हमें दूसरे अपराधियों ने भटकाया । संसार में उन्हें सर्तक किया जाता रहा कि अमुक-अमुक कार्य भटकावा है धर्म के नाम पर अधर्म है, शिर्क है तो नहीं मानते, न सोच विचार करते हैं कि सत्य तथा असत्य उन पर खुल सके ।

(१००) अब तो हमारी कोई सिफ़ारिश करने वाला भी नहीं।

فَمَا لَنَا مِن شَافِعِينَ ﴿١٠٠﴾

(१०१) तथा न कोई (सच्चा) शुभचिन्तक मित्र।[1]

وَلَا صَدِيقٍ حَمِيمٍ ﴿١٠١﴾

(१०२) यदि हमें एक बार पुन: जाने को मिलता तो हम पक्के सच्चे ईमान वाले बन जाते।[2]

فَلَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٢﴾

(१०३) यह बात नि:संदेह एक अत्यन्त बड़ी निशानी है।[3] उनमें के अधिकतर लोग ईमान लाने वाले नहीं।[4]

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٠٣﴾

(१०४) तथा नि:संदेह आपका प्रभु ही प्रभावशाली दयालु है।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٠٤﴾

(१०५) नूह के सम्प्रदाय ने भी नबियों को झुठलाया।[5]

كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٠٥﴾

---

[1]पापी मुसलमानों की सिफ़ारिश तो अल्लाह की आज्ञा के पश्चात अंबिया, पुण्यात्मा लोग विशेष रूप से नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम करेंगे। परन्तु काफ़िर तथा मुशरिक की सिफ़ारिश करने की आज्ञा किसी को भी न होगी, न साहस, तथा न वहाँ मित्रता ही काम आयेगी।

[2]काफ़िर तथा मुशरिक क़ियामत के दिन पुन: दुनिया में आने की कामना करेंगे ताकि वे अल्लाह की आज्ञा का पालन करके अल्लाह को प्रसन्न कर लें। परन्तु अल्लाह तआला ने अन्य स्थान पर फ़रमाया है कि यदि इन्हें पुन: दुनिया में भेज भी दिया जाये तो वही कुछ करेंगे जो पूर्व में करते रहे थे।

[3]अर्थात आदरणीय इब्राहीम का मूर्ति के विषय में अपने समुदाय से विवाद तथा तर्क-वितर्क एवं अल्लाह के एक होने के प्रमाण यह इस बात की स्पष्ट निशानी है कि अल्लाह के सिवाय कोई पूज्य नहीं।

[4]कुछ ने इसका सम्बन्ध मक्का के मूर्तिपूजक अर्थात कुरैश से बताया है अर्थात उनका बहुमत ईमान लाने वाला नहीं।

[5]नूह के समुदाय ने यद्यपि केवल अपने पैग़म्बर आदरणीय नूह को झुठलाया था। परन्तु चूँकि एक नबी को झुठलाना सभी नबियों को झुठलाने के समान तथा सूचक है। इसलिए फ़रमाया कि नूह के समुदाय ने पैग़म्बरों को झुठलाया।

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ نُوحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ۝١٠٦

(१०६) जबकि उनके भाई नूह[1] ने कहा कि क्या तुम्हें अल्लाह का भय नहीं ?

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۝١٠٧

(१०७) (सुनों,) मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का न्यासिक रसूल हूँ ।[2]

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ۝١٠٨

(१०८) अत: तुम्हें अल्लाह से डरना चाहिए तथा मेरी बात माननी चाहिए ।[3]

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝١٠٩

(१०९) तथा मैं तुमसे उस पर कोई बदला नहीं चाहता, मेरा बदला तो केवल सर्वलोक के प्रभु के पास है ।[4]

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ۝١١٠

(११०) अत: तुम अल्लाह का भय रखो तथा मेरा अनुपालन करो ।[5]

قَالُوا أَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ الْأَرْذَلُونَ ۝١١١

(१११) (समुदाय ने) उत्तर दिया कि क्या हम तुम पर ईमान लायें ! तेरा अनुकरण करने वाले तो पतित लोग हैं ।[6]

---

[1]भाई इसलिए कहा कि आदरणीय नूह उन्हीं के वंश के एक व्यक्ति थे ।

[2]अर्थात अल्लाह ने जो संदेश मुझे देकर भेजा है, वह बिना कम तथा अधिक किये तुम तक पहुँचाने वाला हूँ, इसमें कमी-वृद्धि नहीं करता ।

[3]अर्थात मैं तुम्हें जो अल्लाह पर ईमान लाने तथा शिर्क न करने का आमन्त्रण दे रहा हूँ, उसमें मेरी बात मानों ।

[4]मैं तुम्हें जो सावधान कर रहा हूँ, उसका कोई परिश्रामिक मैं तुमसे नहीं माँगता, वल्कि उसका परिश्रामिक समस्त जगत के प्रभु के ऊपर है, जो क़ियामत के दिन वह प्रदान करेगा ।

[5]यह बल देने स्वरूप है तथा अलग-अलग कारणों के आधार पर भी, प्रथम अनुकरण का आमन्त्रण, ईमानदारी के आधार पर थी, अब अनुकरण का आमन्त्रण किसी लालच के विना है ।

[6] الأرذلون बहुवचन है أرذل का । धन-वैभव न रखने वाले, तथा उसके कारण समाज में हीन समझे जाने वाले । तथा उन्हीं में वे लोग भी आते हैं जो हीन समझने वाले व्यवसाय से सम्बन्धित हैं ।

(११२) आपने फ़रमाया, मुझे क्या पता कि वह पहले क्या करते रहे ?[1]

قَالَ وَمَا عِلْمِي بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١٢﴾

(११३) उनका हिसाब तो मेरे प्रभु के ऊपर है[2] यदि तुम्हें प्रबोध हो तो।

إِنْ حِسَابُهُمْ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّي لَوْ تَشْعُرُونَ ﴿١١٣﴾

(११४) तथा मैं ईमानदारों को धक्के देने वाला नहीं।[3]

وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٤﴾

(११५) मैं तो स्वच्छ रूप से डरा देने वाला हूं।[4]

إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿١١٥﴾

(११६) उन्होंने कहा कि हे नूह ! यदि तू न रूका तो अवश्य तुझे पत्थरों से मारकर मार दिया जायेगा।

قَالُوا لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ يَا نُوحُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمَرْجُومِينَ ﴿١١٦﴾

(११७) (आप ने) कहा हे मेरे प्रभु ! मेरे समुदाय ने मुझे झुठला दिया।

قَالَ رَبِّ إِنَّ قَوْمِي كَذَّبُونِ ﴿١١٧﴾

(११८) अत: तू मुझमें तथा उनमें कोई निश्चित निर्णय कर दे तथा मुझे तथा मेरे ईमानवाले साथियों को मुक्ति प्रदान कर दे।

فَافْتَحْ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَنَجِّنِي وَمَنْ مَعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾

---

[1]अर्थात मुझे इस बात का प्रभारी नहीं बनाया गया है कि मैं लोगों के वंश तथा जाति, धनवान तथा निर्धन तथा उनके व्यवसाय की खोज करूँ, बल्कि मेरा कर्तव्य तो केवल इतना है कि मैं ईमान का आमन्त्रण दूँ तथा जो उसको स्वीकार कर ले, वह चाहे जिस व्यवसाय से सम्वन्धित हो, उसे अपने गुट में सम्मिलित कर लूँ।

[2]अर्थात उनके अन्त:करण तथा कर्म की खोज करना यह अल्लाह का कार्य है।

[3]यह उनकी इस इच्छा का उत्तर है कि हीन वर्ग के लोगों को अपने से दूर कर दे, फिर हम तेरे समूह में सम्मिलित हो जायेंगे।

[4]अत: जो अल्लाह से डर का मेरा अनुकरण करेगा, वह मेरा है तथा मैं उसका हूं, चाहे दुनिया की दृष्टि में वह सम्मानित हो अथवा अपमानित, श्रेष्ठ हो अथवा हीन।

(११९) अत: हमने उसे तथा उसके साथियों को भरी हुई नाव में (सवार करके) स्वाधीनता प्रदान की।

فَأَنْجَيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿١١٩﴾

(१२०) फिर उसके पश्चात शेष सभी लोगों को हमने डुबो दिया।[1]

ثُمَّ اَغْرَقْنَا بَعْدُ الْبٰقِيْنَ ﴿١٢٠﴾

(१२१) नि:संदेह इसमें बहुत बड़ी शिक्षा है। तथा उनमें के अधिकतर लोग ईमान लाने वाले थे भी नहीं।

اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٢١﴾

(१२२) तथा नि:संदेह आपका प्रभु अवश्य वही है अत्यन्त दया करने वाला।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٢٢﴾

(१२३) 'आद' (सम्प्रदाय) ने भी रसूलों को झुठलाया।[2]

كَذَّبَتْ عَادُ ۨ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٢٣﴾

(१२४) जबकि उन से उनके भाई हूद[3] ने कहा कि क्या तुम डरते नहीं ?

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ هُوْدٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٢٤﴾

---

[1]यही विवरण कुछ पूर्व भी गुजर चुके हैं तथा कुछ आगे भी आयेंगे कि आदरणीय नूह के साढ़े नौ सौ वर्ष के धर्म प्रचार के पश्चात भी उनके समुदाय के लोग दुर्व्यवहार तथा मुख मोड़े ही रहे अन्त में आदरणीय नूह ने शाप दिया, अल्लाह तआला ने नाव बनाने तथा उसमें ईमानवालों, पशुओं और आवश्यक सामानों को रखने का आदेश दिया और इस प्रकार ईमानवालों को बचा लिया गया तथा शेष सभी लोगों को, यहाँ तक कि पत्नी तथा पुत्र को भी जो ईमान नहीं लाये थे, डुबो दिया।

[2]आद' उनके परम पूर्वज का नाम था, जिनके नाम पर उनके समुदाय का नाम पड़ा। यहाँ आद को क़बीला मानकर كَذَّبَتْ (स्त्रीलिंग रूप) लाया गया है।

[3]हूद को भी आद का भाई इसलिए कहा गया है कि प्रत्येक नबी उस समुदाय का व्यक्ति होता था तथा उसी आधार पर उन्हें उस समुदाय का भाई कहा गया है, जैसाकि आगे भी आयेगा तथा नबियों तथा रसूलों का यह मानवीय रूप भी उनके ईमान लाने में बाध्य रहा है। उनका विचार था कि नबी मनुष्य नहीं, मनुष्य से उच्च होना चाहिए। आज भी इस पूर्ण सत्य से अपरिचित लोग इस्लाम के पैगम्बर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٢٥﴾

(१२५) मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर (संदेश-वाहक) हूँ।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٢٦﴾

(१२६) अत: अल्लाह से डरो तथा मेरा कहना मानो।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٢٧﴾

(१२७) तथा मैं उस पर तुमसे कोई परिश्रामिक नहीं माँगता, मेरी मज़दूरी समस्त लोक के प्रभु के पास ही है।

أَتَبْنُونَ بِكُلِّ رِيعٍ آيَةً تَعْبَثُونَ ﴿١٢٨﴾

(१२८) क्या तुम एक-एक टीले पर खेल (क्रीडा) के रूप तमाशा का प्रतीक (चिन्ह) बना रहे हो।[1]

وَتَتَّخِذُونَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُونَ ﴿١٢٩﴾

(१२९) तथा बड़ी उद्योग वाले (सुदृढ़ भवन निर्माण) कर रहे हो, जैसाकि तुम नित्य यहीं रहोगे।[2]

وَإِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِينَ ﴿١٣٠﴾

(१३०) तथा जब किसी पर हाथ डालते हो तो कड़ाई एवं क्रूरता से पकड़ते हो।[3]

वसल्लम को मनुष्य से उच्च सिद्ध करने पर तुले हैं। यद्यपि वह भी कुरैश वंश के एक व्यक्ति थे, जिनकी ओर प्रथम उनको पैग़म्बर बनाकर भेजा गया था।

[1] ريع बहुवचन है ريعة का। टीले, उच्च स्थान, पर्वत, दर्रा अथवा घाटी, यह उन मार्ग पर कोई भवन निर्मित करते तो आकर्षण तथा सुन्दरता में अद्वितीय अर्थात श्रेष्ठतम होता। परन्तु इसका उद्देश्य उसमें रहना नहीं होता, बल्कि केवल खेल-कूद होता था। आदरणीय हूद ने इसको मना किया कि यह तुम ऐसा कार्य करते हो, जिसमें समय तथा साधन की हानि है तथा उसका उद्देश्य भी ऐसा है जिससे धार्मिक तथा सांसारिक कोई लाभ सम्बन्धित नहीं है। बल्कि उसके व्यर्थ तथा हानि होने में कोई संदेह नहीं।

[2] इसी प्रकार वह बड़े सुदृढ़ तथा भव्य भवन निर्मित करते थे, जैसे वे सदैव उन्हीं भवनों में रहेंगे।

[3] यह उनके अत्याचार क्रूरता तथा शक्ति एवं साधन की ओर संकेत है।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوْنِ ۝١٣١

(१३१) अल्लाह से डरो तथा मेरी बात मानो ।[1]

وَاتَّقُوا الَّذِيْٓ اَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُوْنَ ۝١٣٢

(१३२) तथा उससे डरो जिसने उन वस्तुओं से तुम्हारी सहायता की जिन्हें तुम जानते हो ।

اَمَدَّكُمْ بِاَنْعَامٍ وَّبَنِيْنَ ۝١٣٣

(१३३) उसने तुम्हारी सहायता की धन तथा सन्तान से ।

وَجَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝١٣٤

(१३४) तथा बाग़ों से एवं स्रोतों से ।

اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝١٣٥

(१३५) मुझे तो तुम्हारे ऊपर बड़े दिन की यातना का भय है ।[2]

قَالُوْا سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَوَعَظْتَ اَمْ لَمْ تَكُنْ مِّنَ الْوٰعِظِيْنَ ۝١٣٦

(१३६) (उन्होंने) कहा कि आप भाषण दें अथवा भाषण करने वालों में न हों हम पर समान है ।

اِنْ هٰذَآ اِلَّا خُلُقُ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٣٧

(१३७) यह तो प्राचीन काल के लोगों का धर्म है ।[3]

وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ۝١٣٨

(१३८) तथा हम कदापि यातना ग्रस्त न होंगे ।[4]

---

[1]जब उनके दुर्गणों का वर्णन किया जो उनका संसार में क्रूरता तथा अत्याचार एवं अन्याय का द्योतक थे, तो पुन: उन्हें अल्लाह का भय करने तथा अपना अनुकरण करने का आमन्त्रण दिया ।

[2]अर्थात यदि तुमने अपने कुफ़्र पर दुराग्रह किया तथा अल्लाह ने जो तुमको यह सुख प्रदान किये हैं, उन पर कृतज्ञता व्यक्त नहीं की, तो तुम अल्लाह की यातना के अधिकारी हो जाओगे । यह प्रकोप दुनिया में भी आ सकता है । परलोक तो है ही यातना एवं पुण्य के लिए । वहाँ यातना से छुटकारा पाना संभव ही नहीं होगा ।

[3]अर्थात वही बातें हैं जो प्राचीन काल में भी लोग करते चले आये हैं अथवा यह अर्थ है कि हम जिस धर्म तथा रीति-रिवाज पर दृढ़ हैं, वे वही हैं जो हमारे पूर्वज करते चले आ रहे हैं दोनों का अर्थ यही है कि हम अपने पैतृक धर्म को नहीं छोड़ सकते ।

[4]जब उन्होंने इस बात को व्यक्त किया कि हम अपने पैतृक धर्म को नहीं त्याग सकते और इसमें आख़िरत पर विश्वास को अस्वीकार करना भी था । इसलिए उन्होंने प्रकोप

(१३९) चूँकि 'आद' के समुदाय ने (आदरणीय) हूद को झुठलाया, इसलिए हमने उन्हें ध्वस्त कर दिया,[1] नि:संदेह उसमें निशानी है, तथा उनमें के अधिकतर ईमान वाले न थे।

فَكَذَّبُوهُ فَأَهْلَكْنَٰهُمْ ۗ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٣٩﴾

(१४०) तथा नि:संदेह आपका प्रभु वही प्रभावशाली दयालु है।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلرَّحِيمُ ﴿١٤٠﴾

(१४१) 'समूद' के समुदाय वालों ने[2] भी पैग़म्बर को झुठलाया।

كَذَّبَتْ ثَمُودُ ٱلْمُرْسَلِينَ ﴿١٤١﴾

से पीड़ित होने की संभावना को भी अस्वीकार किया। क्योंकि अल्लाह के प्रकोप की संभावना उसे होती है, जो अल्लाह को मानता हो तथा निर्णायक दिन को स्वीकार करता हो।

[1]आद का समुदाय संसार का अत्यन्त सुदृढ़ एवं अत्यन्त शक्तिशाली समुदाय था, जिसके विषय में अल्लाह ने फ़रमाया :

﴿ٱلَّتِى لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِى ٱلْبِلَٰدِ﴾

"उस जैसा समुदाय पैदा ही नहीं किया गया।" (सूर: *अल-फ़ज्र-८*)

अर्थात जो शक्ति एवं अत्यन्त बल तथा स्फूर्ति में उस जैसा हो। इसीलिए वे कहा करते थे

﴿مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً﴾

"कौन शक्ति में हमसे अधिक है ?" (सूर: *हा॰मीम॰ अस्सजद:-१५*)

परन्तु जब उस समुदाय ने भी कुफ़्र का मार्ग त्याग कर ईमान तथा अल्लाह के भय का मार्ग नहीं अपनाया ? तो अल्लाह तआला ने प्रचण्ड हवाओं के रूप में उन पर प्रकोप उतारा, जो उन पर पूरे सात रातें तथा आठ दिन तक निरन्तर आच्छादित रहा। तीव्रगति की हवा आती तथा आदमी को उड़ाकर ऊपर ले जाती फिर सिर के बल धरती पर पटख देती। जिससे उनका सिर फट जाता, तथा बिना सिर की उनकी लाशें ऐसी पड़ी हुई थीं जैसे धरती पर खजूर के खोखले तने पड़े हों। उन्होंने पर्वतों, गुफ़ाओं तथा घाटियों में बड़े सुदृढ़ भवन बना रखे थे, पीने के लिए पानी के गहरे कुएं खोद रखे थे, बाग़ अधिक संख्या में थे। परन्तु जब अल्लाह का प्रकोप आया तो कोई वस्तु उनके काम न आयी तथा उनको सदैव के लिए धरती से मिटा दिया गया।

[2]समूद का निवास स्थान 'हिज्र' का क्षेत्र था जो हिजाज़ की उत्तर दिशा में है। आजकल उसे 'मदायन स्वालेह' कहते हैं। (ऐसरुत्तफ़ासीर) यह अरब थे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ صٰلِحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٤٢﴾

(१४२) जब उनके भाई 'स्वालेह' ने उनसे कहा कि क्या तुम अल्लाह से नहीं डरते ?

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٤٣﴾

(१४३) मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का अमानतदार पैग़म्बर हूँ।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٤٤﴾

(१४४) तो तुम अल्लाह से डरो तथा मेरा कहा करो।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعٰلَمِينَ ﴿١٤٥﴾

(१४५) तथा मैं उस पर तुमसे कोई परिश्रामिक नहीं माँगता, मेरा परिश्रामिक तो सर्वलोक के प्रभु के ऊपर ही है।

أَتُتْرَكُونَ فِي مَا هٰهُنَا آمِنِينَ ﴿١٤٦﴾

(१४६) क्या उन वस्तुओं में जो यहाँ हैं तुम शान्ति के साथ छोड़ दिये जाओगे ?[1]

فِي جَنّٰتٍ وَعُيُونٍ ﴿١٤٧﴾

(१४७) (अर्थात) उन बाग़ों एवं उन स्रोतों में।

وَزُرُوعٍ وَنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيمٌ ﴿١٤٨﴾

(१४८) तथा उन खेतों एवं उन खजूरों के बाग़ों में जिनके गुच्छे (बोझ के कारण) टूटे पड़ते हैं।[2]

वसल्लम तबूक जाते समय उन बस्तियों के बीच से गये थे, जैसाकि पहले वर्णन हो चुका है।

[1]अर्थात ये सुख क्या तुम्हें सदैव प्राप्त रहेंगे, न तुम्हारी मृत्यु होगी, न यातना ? प्रश्न नाकरात्मक तथा चेतावनी के लिए है। अर्थात ऐसा नहीं होगा, बल्कि प्रकोप अथवा मृत्यु के द्वारा, जब अल्लाह चाहेगा, तुम इन सुखों से वंचित हो जाओगे। इसमें शिक्षा है कि अल्लाह के द्वारा प्रदान किये सुखों की कृतज्ञता व्यक्त करो तथा उस पर ईमान लाओ तथा चेतावनी है कि यदि ईमान तथा कृतज्ञता व्यक्त करने का मार्ग न अपनाया, तो विनाश तुम्हारे भाग्य में है।

[2]यह उन सुखों का वर्णन है, जो उनको प्राप्त थे, طَلْع खजूर के उन गुच्छों को कहते हैं जो प्रथम फसल में निकलता है अर्थात विकसित होता है उसके पश्चात खजूर का फल بلح फिर بُسْر फिर رُطَب, तथा उसके पश्चात تَمْر कहलाता है। (ऐसरूत्तफासीर) बाग़ों में अन्य फलों के साथ खजूर का फल भी आ जाता है। परन्तु अरबों में चूंकि खजूर का

(१४९) तथा तुम पर्वतों को काट-काट कर (सुन्दर) आकर्षक भवनों का निर्माण कर रहे हो ।[1]

وَتَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا فٰرِهِينَ ﴿١٤٩﴾

(१५०) अत: अल्लाह से डरो तथा मेरा अनुकरण करो ।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٥٠﴾

(१५१) तथा सीमा उल्लंघन करने वालों के[2] अनुकरण से रूक जाओ ।

وَلَا تُطِيعُوٓا أَمْرَ الْمُسْرِفِينَ ﴿١٥١﴾

(१५२) जो धरती में उपद्रव फैला रहे हैं तथा सुधार नहीं करते ।

الَّذِينَ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ﴿١٥٢﴾

(१५३) (वे) बोले कि तू तो बस उनमें से है जिन पर जादू कर दिया गया है ।

قَالُوٓا إِنَّمَآ أَنتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ﴿١٥٣﴾

(१५४) तू तो हम जैसा ही मुनष्य है । यदि तू सच्चों में से है तो कोई चमत्कार ले आ ।

مَآ أَنتَ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا فَأْتِ بِاٰيَةٍ إِن كُنتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿١٥٤﴾

(१५५) (आप ने) कहा यह है ऊँटनी । पानी पीने की एक बारी इसकी तथा एक निर्धारित दिन को पानी पीने की बारी तुम्हारी ।[3]

قَالَ هٰذِهِۦ نَاقَةٌ لَّهَا شِرْبٌ وَلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ﴿١٥٥﴾

बड़ा महत्व है इसलिए इसका विशेषरूप से भी वर्णन किया गया । هَضِيم के अन्य भी कई अर्थ वर्णन किये गये हैं । जैसे सुन्दर, तथा कोमल, तह पर तह आदि ।

[1] فَارِهِين अर्थात आवश्यकता से अधिक बनावटी, कारीगरी तथा कलात्मक प्रदर्शन करते हुए अथवा घमण्ड, तथा गर्व करते हुए । जैसे आजकल लोगों का हाल है । आज भी भवनों पर अनावश्यक कलाकृतियों का अत्यधिक प्रदर्शन हो रहा है तथा उसके द्वारा एक-दूसरे पर श्रेष्ठता तथा गर्व एवं घमण्ड का प्रदर्शन भी ।

[2] مُسْرِفِين से तात्पर्य है वे धनवान तथा मुखिया जो कुफ्र तथा शिर्क का प्रचार-प्रसार करने तथा सत्य का विरोध करने में अग्रणीय थे ।

[3] यह वही ऊँटनी थी, जो उनकी माँग पर पत्थर की चट्टान से चमत्कार के रूप में निकली थी । एक दिन ऊँटनी के लिए तथा एक दिन उनके लिए पानी निर्धारित कर दिया गया था, तथा उनसे कह दिया गया था कि जो दिन तुम्हारा पानी लेने का होगा

وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوٓءٍ فَيَأۡخُذَكُمۡ عَذَابُ يَوۡمٍ عَظِيمٖ ١٥٦

(१५६) (तथा सावधान !) इसे बुराई से हाथ न लगाना, वरन् एक बड़े दिन का प्रकोप तुम्हें पकड़ लेगा ।[1]

فَعَقَرُوهَا فَأَصۡبَحُواْ نَٰدِمِينَ ١٥٧

(१५७) फिर भी उन्होंने उसके हाथ-पैर काट डाले,[2] फिर वह पछताने वाले हो गये ।[3]

فَأَخَذَهُمُ ٱلۡعَذَابُۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَأٓيَةٗۖ وَمَا كَانَ أَكۡثَرُهُم مُّؤۡمِنِينَ ١٥٨

(१५८) तथा प्रकोप ने उन्हें आ दबोचा ।[4] नि:संदेह इसमें शिक्षा है । तथा उनमें से अधिकतर लोग ईमानवाले न थे ।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ ٱلۡعَزِيزُ ٱلرَّحِيمُ ١٥٩

(१५९) तथा नि:संदेह आपका प्रभु अत्यन्त शक्तिशाली एवं दयालु है ।

उस दिन ऊँटनी घाट पर नहीं आयेगी तथा जो दिन ऊँटनी के पानी पीने का होगा, तुम्हें घाट पर आने की आज्ञा नहीं है ।

[1]दूसरी बात उनसे यह कही गयी कि कोई भी ऊँटनी को कुविचार से हाथ न लगाये, न उसे हानि पहुँचाये, अत: यह ऊँटनी इस प्रकार उनके मध्य रही । घाट से पानी पीती तथा घास-चारा खाकर निर्वाह करती तथा कहा जाता है कि समूद के समुदाय वाले उसका दूध दूहते तथा उससे लाभ उठाते । परन्तु कुछ समय व्यतीत होने के पश्चात उन्होंने उसको मारने की योजना बनायी ।

[2]अर्थात इस बात के उपरान्त कि वह ऊँटनी अल्लाह के सामर्थ्य का एक प्रतीक एवं पैग़म्बर की सत्यता का प्रमाण थी, समूद के समुदाय वाले ईमान नहीं लाये तथा कुफ़्र एवं शिर्क के मार्ग पर अग्रसर रहे तथा उनकी अवहेलना यहाँ तक बढ़ी कि अल्लाह के जीवित प्रतीक 'ऊँटनी' के हाथ-पैर घायल कर दिये, जिसके कारण वह बैठ गयी तथा फिर उसे मार दिया ।

[3]यह उस समय हुआ जब ऊँटनी की हत्या के पश्चात आदरणीय स्वालेह ने कहा कि अब तुम्हें केवल तीन दिन का अवसर है, चौथे दिन तुम्हें सत्यानाश कर दिया जायेगा । उसके पश्चात जब वास्तव में प्रकोप के लक्षण प्रकट होने लगे, तो फिर उनकी ओर से भी खेद का प्रदर्शन होने लगा । परन्तु प्रकोप के लक्षण देख लेने के पश्चात खेद प्रकट करने तथा क्षमा माँगने का कोई लाभ नहीं ।

[4]यह प्रकोप धरती से भूकम्प तथा ऊपर से अतितीव्र चिंघाड़ के रूप में आया, जिससे सब मर गये ।

(१६०) लूत के समुदाय [1] ने भी नबियों को झुठलाया ।

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطِ ِۨ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٦٠﴾

(१६१) जब उनसे उनके भाई लूत ने कहा कि तुम अल्लाह से भय नहीं रखते ?

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ لُوْطٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٦١﴾

(१६२) मैं तुम्हारी ओर अमानतदार रसूल हूँ ।

اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٦٢﴾

(१६३) अत: तुम अल्लाह (तआला) से डरो तथा मेरा अनुसरण करो

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٦٣﴾

(१६४) तथा मैं तुमसे उसका कोई बदला नहीं माँगता, मेरा बदला तो केवल सब लोक के पालनहार पर है ।

وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٤﴾

(१६५) क्या तुम दुनिया वालों में से पुरूषों के पास गमन करते हो ।

اَتَاْتُوْنَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٥﴾

(१६६) तथा तुम्हारी जिन स्त्रियों को अल्लाह (तआला) ने तुम्हारी पत्नी बनाया है, उनको छोड़ देते हो, [2] बात यह है कि तुम हो ही सीमा

وَتَذَرُوْنَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ عٰدُوْنَ ﴿١٦٦﴾

---

[1]आदरणीय लूत, आदरणीय इब्राहीम के भाई हारान बिन आज़र के पुत्र थे । उनको आदरणीय इब्राहीम के जीवनकाल में ही नबी बना कर भेजा गया था । उनका समुदाय 'सदूम' तथा 'अमुरया' में निवास करता था । यह बस्तियाँ सीरिया के क्षेत्र में थीं ।

[2]यह लूत के समुदाय वालों की अत्यन्त बुरी आदत थी, जिसका प्रारम्भ इसी समुदाय से हुआ था, इसलिए इस कुकर्म को अरबी भाषा में لواطت (लवातत) कहा जाता है अर्थात वह कुकर्म जिसका प्रारम्भ लूत के समुदाय से हुआ । परन्तु अब यह कुकर्म सम्पूर्ण दुनिया में सामान्य रूप से व्याप्त है, बल्कि यूरोपीय देशों में इसे वैधानिक मान्यता प्राप्त है अर्थात उनके यहाँ अब यह पाप नहीं रहा । जिस समाज का व्यवहार इतना बिगड़ गया हो कि स्त्री-पुरूष के अनुचित शारीरिक सम्बन्ध (जबकि वह दोनों के आपसी प्रसन्नता से हो) उनके निकट अपराध न हो तो दो पुरूषों का आपसी कुकर्म करना किस प्रकार से पाप तथा अमान्य हो सकता है ?

लाँघने वाले ।[1]

قَالُوا لَئِن لَّمْ تَنتَهِ يَا لُوطُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِينَ ﴿١٦٧﴾

(१६७) (उन्होंने) उत्तर दिया कि हे लूत ! यदि तू न रूका तो अवश्य निकाल दिया जायेगा ।[2]

قَالَ إِنِّي لِعَمَلِكُم مِّنَ الْقَالِينَ ﴿١٦٨﴾

(१६८) (आप ने) कहा कि मैं तुम्हारे कर्म से अत्यधिक खिन्न हूँ ।[3]

رَبِّ نَجِّنِي وَأَهْلِي مِمَّا يَعْمَلُونَ ﴿١٦٩﴾

(१६९) मेरे प्रभु ! मुझे तथा मेरे परिवार को इस (दुष्कर्म) से बचा ले, जो यह करते हैं ।

فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ﴿١٧٠﴾

(१७०) अत: हमने उसे तथा उसके सम्बन्धियों को सभी को बचा लिया ।

إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ ﴿١٧١﴾

(१७१) सिवाय एक बुढ़िया के कि वह पीछे रह जाने वालों में हो गयी ।[4]

ثُمَّ دَمَّرْنَا الْآخَرِينَ ﴿١٧٢﴾

(१७२) फिर हमने (शेष) अन्य सभी को नाश कर दिया ।

---

[1] عَادُون बहुवचन है عاد का अरबी भाषा में عاد का अर्थ है सीमा का उल्लंघन कर जाने वाला । अर्थात सत्य को छोड़कर असत्य तथा उचित (हलाल) को छोड़कर अनुचित (हराम) को अपनाने वाला । अल्लाह तआला ने धार्मिक विधान से किये गये विवाह के द्वारा स्त्री की भोग से अपनी काम इच्छा की तृप्ति करने को औचित्य (हलाल) प्रदान किया है तथा इसके लिए पुरूष के गुदाद्वार को निषेध (हराम) । लूत के समुदाय ने स्त्रियों का भोग छोड़कर पुरूष के गुदाद्वार को इस काम के लिए प्रयोग किया और इस प्रकार सीमा उल्लघंन किया ।

[2]अर्थात आदरणीय लूत के भाषण तथा शिक्षाओं के उत्तर में उसने कहा तू बड़ा पवित्र बना फिरता है । याद रख ! यदि तू अपने इस कार्य से नहीं रूका तो हम तुझे बस्ती में नहीं रहनें देंगे । आज भी कुकर्मियों का इतना प्रभाव है कि सत्कर्म मुख छिपाये फिरता है । तथा सत्कर्मियों के लिए जीवन व्यतीत करना कष्टदायक बना दिया गया है ।

[3]अर्थात मैं इसे प्रिय नहीं समझता तथा इससे अत्यन्त दुखी हूं ।

[4]इससे तात्पर्य आदरणीय लूत की बूढ़ी पत्नी है, जो मुसलमान नहीं हुई थी, अत: वह भी अपने समुदाय के साथ ध्वस्त कर दी गयी ।

وَ أَمْطَرْنَا عَلَيْهِم مَّطَرًا ۖ فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنذَرِينَ ﴿١٧٣﴾

(१७३) तथा हमने उनके ऊपर एक विशेष प्रकार की वर्षा की, वह अत्यन्त बुरी वर्षा थी जो डराये गये लोगों पर बरसी ।[1]

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٧٤﴾

(१७४) अवश्य इसमें भी सर्वथा शिक्षाप्रद है । उनमें से भी अधिकतर मुसलमान नहीं थे ।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٧٥﴾

(१७५) नि:संदेह तेरा प्रभु वही है प्रभाव वाला कृपालु ।

كَذَّبَ أَصْحَابُ لْـَٔيْكَةِ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٧٦﴾

(१७६) एयका वालों[2] ने भी रसूलों को झुठलाया ।

إِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٧٧﴾

(१७७) जबकि उनसे शुऐब ने कहा कि क्या तुम्हें (अल्लाह का) डर तथा भय नहीं ?

---

[1]अर्थात चिन्हित कंकड़-पत्थरों की वर्षा से हमने उन्हे नाश कर दिया और उनकी बस्तियों को उन पर उलट दिया गया, जैसाकि सूर: हूद-८२ तथा ८३ में वर्णन हुआ ।

[2] أيكة वन तथा जंगल को कहते हैं । इससे आदरणीय शुऐब का समुदाय एवं बस्ती मदयन के निकटवर्ती क्षेत्र के निवासियों से तात्पर्य है । तथा कहा जाता है कि أيكة का अर्थ है घना वृक्ष तथा ऐसा एक वृक्ष मदयन के निकटवर्ती क्षेत्र की आबादी में था । जिसकी पूजा-पाठ होती थी । वहाँ के रहने वालों को أصحاب الأيكة कहा गया है ।इस आधार पर ऐका वाले तथा मदयन के निवासियों के पैग़म्बर एक ही हैं अर्थात आदरणीय शुऐब तथा यह एक ही पैग़म्बर का समुदाय था । أيكة चूँकि समुदाय नहीं, बल्कि वृक्ष था इसलिए भाई के सम्बन्ध में आदरणीय शुऐब का नाम नहीं लिया गया है, जिस प्रकार अन्य अंबिया के विषय में है, परन्तु जहाँ मदयन के साथ आदरणीय शुऐब का नाम लिया गया है वहाँ उनका सम्बन्ध भाई के रूप में व्यक्त किया गया मिलता है, क्योंकि मदयन समुदाय का नाम है । ﴿وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا﴾ (सूर: *अल-आराफ़-८५*) कुछ व्याख्याकारों ने ऐका वालों तथा मदयन को अलग-अलग बस्तियाँ बताकर कहा है कि ये दो भिन्न समुदाय हैं, जिनकी ओर क्रमश: आदरणीय शुऐब को भेजा गया । एक बार मदयन की ओर तथा दूसरी बार ऐका वालों की ओर । (परन्तु इमाम इब्ने कसीर ने कहा है कि उचित बात यही है कि यह एक ही सम्प्रदाय है أوفوا الكيل و الميزان का जो भाषण मदयन के निवासियों को दिया गया, यही भाषण यहाँ ऐका वालों को किया जा रहा है, जिससे साफ स्पष्ट है कि यह एक ही सम्प्रदाय है दो नहीं ।

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۝١٧٨
(१७८) मैं तुम्हारी ओर अेमानतदार रसूल हूँ।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ۝١٧٩
(१७९) तो तुम अल्लाह से डरो तथा मेरी आज्ञा का पालन करो।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝١٨٠
(१८०) तथा मैं उस पर तुम से कोई परिश्रामिक नहीं माँगता, मेरा परिश्रामिक समस्त लोक के प्रभु पर है।

أَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُخْسِرِينَ ۝١٨١
(१८१) नाप-तौल पूरा करो और कम देने वालों में सम्मिलित न हो।[1]

وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ ۝١٨٢
(१८२) तथा सीधे (सही) तराज़ू से तौला करो।[2]

وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝١٨٣
(१८३) तथा लोगों को उनकी वस्तुयें कमी से न दो,[3] और (निभर्य होकर) धरती पर उपद्रव मचाते न फिरो।[4]

وَاتَّقُوا الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ
(१८४) तथा उस (अल्लाह) का भय रखो जिसने

---

[1]अर्थात तुम जब लोगों को नाप कर दो तो उसी प्रकार पूरा दो, जिस प्रकार लेते समय तुम पूरा नाप कर लेते हो। लेने-देने के दो पैमानें न रखो कि देते समय कम दो तथा लेते समय पूरा लो।

[2]इसी प्रकार तौल में डँडी न मारो, बल्कि पूरा सही तौलकर दो।

[3]अर्थात लोगों को नाप अथवा तौल में कमीं मत करो।

[4]अर्थात अल्लाह तआला की अवज्ञा मत करो, इससे धरती पर उपद्रव फैलता है। कुछ ने इससे तात्पर्य वह डकैती ली है, जिसे यह समुदाय करता था, जैसाकि अन्य स्थान पर है।

﴿وَلَا تَقْعُدُوا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوعِدُونَ﴾

"मार्गों पर लोगों को भयभीत करने के लिए न बैठो।" (सूर: *अल-आराफ़*-८६) (इब्ने कसीर)

الأَوَّلِينَ ﴿١٨٤﴾

स्वयं तुम्हें तथा पूर्व सृष्टि को[1] पैदा किया।

قَالُوٓا۟ إِنَّمَآ أَنتَ مِنَ ٱلْمُسَحَّرِينَ ﴿١٨٥﴾

(१८५) (उन्होंने) कहा तू तो उनमें से है जिन पर जादू कर दिया जाता है।

وَمَآ أَنتَ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَإِن نَّظُنُّكَ لَمِنَ ٱلْكَٰذِبِينَ ﴿١٨٦﴾

(१८६) तथा तू तो हम ही जैसा एक मनुष्य है तथा हम तो तुझे झूठ बोलने वालों में से ही समझते हैं।[2]

فَأَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِّنَ ٱلسَّمَآءِ إِن كُنتَ مِنَ ٱلصَّٰدِقِينَ ﴿١٨٧﴾

(१८७) यदि तुम सच्चे लोगों में से हो तो हम पर आकाश का कोई टुकड़ा गिरा दो।[3]

قَالَ رَبِّىٓ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٨٨﴾

(१८८) (उन्होंने) कहा कि मेरा प्रभु भली प्रकार से जानने वाला है जो कुछ तुम कर रहे हो।[4]

فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمْ عَذَابُ

(१८९) अतः उन्होंने उसे झुठलाया तो उन्हें

---

[1] جِبِلَّة तथा جِبِلّ सृष्टि के अर्थ में है, जिस प्रकार अन्य स्थान पर शैतान के विषय में फ़रमाया :

﴿وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنكُمْ جِبِلًّا كَثِيرًا﴾

इसने अत्यधिक सृष्टि को भटकाया। *(सूरः यासीन-६२)*

इसका प्रयोग बड़े गुट के लिए होता है। (फ़तहुल क़दीर)

[2] अर्थात तू जो दावा करता है कि मुझे अल्लाह ने प्रकाशना (वह्यी) तथा रिसालत से सुशोभित किया है हम तुझे इस दावे में झूठा समझते हैं, क्योंकि तू भी हम जैसा मनुष्य है। फिर तू यह श्रेष्ठता किस प्रकार प्राप्त कर सकता है ?

[3] यह आदरणीय शुऐब की शिक्षाओं के उत्तर में उन्होंने कहा कि यदि तू वास्तव में सच्चा है, तो जा हम तुझे नहीं मानते, हम पर आकाश का टुकड़ा गिराकर दिखा।

[4] अर्थात तुम जो कुफ़्र तथा शिर्क कर रहे हो, सब अल्लाह के ज्ञान में है तथा वही इसका बदला तुम्हें देगा, यदि चाहेगा तो दुनिया में भी दे देगा, यह यातना तथा दण्ड उसी के अधिकार में है।

छाया वाले दिन के प्रकोप ने पकड़ लिया,[1] वह बड़े भारी दिन का प्रकोप था।

يَوۡمِ الظُّلَّةِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَذَابَ يَوۡمٍ عَظِيۡمٍ ﴿۱۸۹﴾

(१९०) नि:संदेह उसमें बड़ी निशानी है तथा उनमें के अधिकतर मुसलमान नहीं थे।

اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكۡثَرُهُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ ﴿۱۹۰﴾

(१९१) तथा नि:संदेह तेरा प्रभु वही प्रभाव वाला दया वाला है।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الرَّحِيۡمُ ﴿۱۹۱﴾

(१९२) तथा नि:संदेह यह (क़ुरआन) पूरे विश्व के पोषक का अवतरित किया हुआ है।

وَاِنَّهٗ لَتَنۡزِيۡلُ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۱۹۲﴾

(१९३) इसे अमानतदार फ़रिश्ता लेकर आया है।[2]

نَزَلَ بِهِ الرُّوۡحُ الۡاَمِيۡنُ ﴿۱۹۳﴾

---

[1]उन्होंने भी मक्का के मूर्तिपूजकों की भाँति आकाश से प्रकोप माँगा था, अल्लाह ने उसके अनुसार उन पर प्रकोप ढाया तथा वह इस प्रकार के कुछ कथनों के अनुसार सात दिन तक उन पर निरन्तर कड़ी गर्मी तथा धूप रही, उसके पश्चात बादलों की एक छाया आयी तथा ये सभी गर्मी की व्याकुलता से बचने के लिए उसके नीचे एकत्रित हो गये, तथा कुछ सुख की साँस ली परन्तु कुछ ही क्षणों पश्चात आग के शोले आकाश से बरसने लगे, धरती भूकम्प से काँपने लगी तथा एक तीव्र चींघाड़ ने उन्हें सदा के लिए मृत्यु की नींद सुला दिया। इस प्रकार उन पर तीन प्रकार का प्रकोप आया तथा यह उस दिन आया जिस दिन बादल छा गया, इसलिए कहा कि छाया वाले दिन के प्रकोप ने उन्हें पकड़ लिया।

इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने तीन स्थान पर शुऐब के समुदाय के विनाश का वर्णन किया है। *सूर: अल-आराफ़-८८* में भूकम्प का वर्णन, सूर: हूद-९४ में चिंघाड़ का तथा यहाँ शूअरा में आकाश से टुकड़े गिरने का। अर्थात तीन प्रकार का प्रकोप इस समुदाय पर आया।

[2]मक्का के मूर्तिपूजकों ने क़ुरआन के अल्लाह की प्रकाशना तथा अल्लाह की ओर से अवतरित होने को अस्वीकार किया तथा इसी आधार पर मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत (दूतत्व) तथा आमन्त्रण को भी अस्वीकार कर दिया। अल्लाह तआला ने नबियों की कथाओं का वर्णन करके यह स्पष्ट कर दिया कि यह क़ुरआन वास्तव में अल्लाह की प्रकाशना है तथा मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के सच्चे रसूल हैं क्योंकि यदि ऐसा न होता तो यह पैग़म्बर जो न पढ़ सकता है तथा

(१९४) आपके दिल पर (अवतरित हुआ है,)[1] कि आप सतर्क कर देने वालों में से हो जायें ।[2]

عَلَىٰ قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ الْمُنذِرِينَ ﴿١٩٤﴾

(१९५) स्वच्छ अरबी भाषा में है ।

بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُّبِينٍ ﴿١٩٥﴾

(१९६) तथा अगले नबियों की किताबों में भी इस (क़ुरआन) की चर्चा है ।[3]

وَإِنَّهُ لَفِي زُبُرِ الْأَوَّلِينَ ﴿١٩٦﴾

(१९७) क्या उन्हें यह निशानी प्रर्याप्त नहीं कि (क़ुरआन की सत्यता को) तो इस्राईल की सन्तान के विद्वान भी जानते हैं ।[4]

أَوَلَمْ يَكُن لَّهُمْ آيَةً أَن يَعْلَمَهُ عُلَمَاءُ بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿١٩٧﴾

(१९८) तथा यदि हम इसे किसी (अरबी भाषी के सिवाय) किसी अजमी पर अवतरित करते ।

وَلَوْ نَزَّلْنَاهُ عَلَىٰ بَعْضِ الْأَعْجَمِينَ ﴿١٩٨﴾

न लिख सकता है पूर्वकालिक नबियों की घटनायें किस प्रकार वर्णन कर सकता था ? इसलिए यह क़ुरआन निश्चित रूप से सम्पूर्ण जगत के प्रभु की ही ओर से अवतरित है । जिसे एक अमानतदार फ़रिश्ता अर्थात जिब्रील लेकर आये ।

[1]दिल का विशेषरूप से इसलिए वर्णन किया गया कि शारीरिक अंग में दिल ही सबसे अधिक संवेदन एवं स्मरण करने की शक्ति रखता है ।

[2]यह क़ुरआन के अवतरित होने का कारण है ।

[3]अर्थात जिस प्रकार संसार के अन्तिम पैग़म्बर (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के आने तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहगुणों का वर्णन अन्य ग्रन्थों में है, उसी प्रकार इस क़ुरआन के अवतरित होने की शुभसूचना उन किताबों में दी गयी थी । एक अन्य अर्थ यह किया गया है कि यह क़ुरआन मजीद उन आदेशों के अनुसार जिन पर सभी धर्म विधानों में एकता रही है । आदि ग्रन्थों मे भी विद्यमान रहा है ।

[4]क्योंकि इन किताबों में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तथा क़ुरआन की चर्चा विद्यमान है । यह मक्का के मूर्तिपूजक धार्मिक समस्याओं में यहूदियों से विचार-विमर्श करते थे । इस आधार पर फ़रमाया कि क्या उनका यह जानना तथा बताना इस बात का प्रमाण नहीं है कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के सच्चे रसूल हैं तथा यह क़ुरआन अल्लाह की ओर से अवतरित किया हुआ है । फिर यह यहूदियों की इस बात को स्वीकार करते हुए पैग़म्बर पर ईमान क्यों नहीं लाते ?

فَقَرَاَهٗ عَلَيۡهِمۡ مَّا كَانُوۡا بِهٖ مُؤۡمِنِيۡنَ ؕ﴿۱۹۹﴾

(१९९) तो वह उनके समक्ष उसका पाठ करता तो यह उसे नहीं मानते।[1]

كَذٰلِكَ سَلَكۡنٰهُ فِىۡ قُلُوۡبِ الۡمُجۡرِمِيۡنَ ؕ﴿۲۰۰﴾

(२००) इसी प्रकार हमने पापियों के दिलों में (इंकार) को संचित कर दिया है।[2]

لَا يُؤۡمِنُوۡنَ بِهٖ حَتّٰى يَرَوُا الۡعَذَابَ الۡاَ لِيۡمَ ۙ﴿۲۰۱﴾

(२०१) वे जब तक दुखदायी यातना का दर्शन न कर लेंगे ईमान न लायेंगे।

فَيَاۡتِيَهُمۡ بَغۡتَةً وَّهُمۡ لَا يَشۡعُرُوۡنَ ۙ﴿۲۰۲﴾

(२०२) अत: वह (यातना) सहसा आ जायेगी और उन्हें उसका अनुमान भी न होगा।

فَيَقُوۡلُوۡا هَلۡ نَحۡنُ مُنۡظَرُوۡنَ ؕ﴿۲۰۳﴾

(२०३) उस समय कहेंगे कि क्या हमें कुछ अवसर प्रदान किया जायेगा ?[3]

اَفَبِعَذَابِنَا يَسۡتَعۡجِلُوۡنَ ﴿۲۰۴﴾

(२०४) तो क्या ये हमारे प्रकोप की शीघ्रता मचा रहे हैं ?[4]

اَفَرَءَيۡتَ اِنۡ مَّتَّعۡنٰهُمۡ سِنِيۡنَ ۙ﴿۲۰۵﴾

(२०५) अच्छा यह भी बताओ, कि यदि हमने उन्हें वर्षों लाभ उठाने दिया।

ثُمَّ جَآءَهُمۡ مَّا كَانُوۡا يُوۡعَدُوۡنَ ۙ﴿۲۰۶﴾

(२०६) फिर उन्हें वह (प्रकोप) आ लगा जिस से उन्हें डराया जाता था।

---

[1]अर्थात किसी अरबी भाषा के सिवाय अन्य भाषा में अवतरित करते तो यह कहते कि यह तो हमारी समझ में नहीं आता। जैसे सूर: *हा॰मीम॰अस्सजदा-४४* में है।

[2]अर्थात سَلَكْنٰهُ में सर्वनाम कुफ्र तथा झुठलाने एवं इंकार तथा परिधि की ओर इंगित करता है।

[3]परन्तु प्रकोप के दर्शन के पश्चात अवसर नहीं प्रदान किया जाता, न उस समय की क्षमा-याचना ही स्वीकार की जाती है। ﴿فَلَمْ يَكُ يَنفَعُهُمْ إِيمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا﴾ (सूर: *अल-मोमिन-८५*)

[4]यह संकेत है उनकी माँग की ओर जो अपने पैग़म्बर से करते रहे हैं कि यदि तू सच्चा है तो प्रकोप ले आ।

(२०७) तो जो कुछ भी यह लाभ दिये जाते रहे उसमें से कुछ भी उन्हें काम न दे सकेगा ।[1]

مَآ أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا۟ يُمَتَّعُونَ ﴿٢٠٧﴾

(२०८) तथा हमने किसी बस्ती को ध्वस्त नहीं किया है, परन्तु उसी अवस्था में कि उसके लिए डराने वाले थे ।

وَمَآ أَهْلَكْنَا مِن قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنذِرُونَ ﴿٢٠٨﴾

(२०९) शिक्षा के रूप में । और हम अत्याचार करने वाले नहीं हैं ।[2]

ذِكْرَىٰ وَمَا كُنَّا ظَٰلِمِينَ ﴿٢٠٩﴾

(२१०) तथा इस (क़ुरआन) को शैतान नहीं लाये ।

وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ ٱلشَّيَٰطِينُ ﴿٢١٠﴾

(२११) तथा न वह इस योग्य हैं, न उन्हें इसकी शक्ति है ।

وَمَا يَنۢبَغِى لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٢١١﴾

(२१२) बल्कि वे तो सुनने से भी वंचित कर दिये गये हैं ।[3]

إِنَّهُمْ عَنِ ٱلسَّمْعِ لَمَعْزُولُونَ ﴿٢١٢﴾

---

[1]अर्थात यदि हम उन्हें अवसर दे दें फिर उन्हें अपनी यातना की पकड़ में लें तो क्या दुनिया का धन उनके कुछ काम आयेगा, अर्थात उन्हें प्रकोप से बचा सकेगा ? निश्चय नहीं !

﴿وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهِۦ مِنَ ٱلْعَذَابِ أَن يُعَمَّرَ﴾

"उनकी हज़ार वर्ष की आयु उनसे यातना को दूर नहीं कर सकती ।" (सूर: *अल-बक़र:-९६*)

﴿وَمَا يُغْنِى عَنْهُ مَالُهُۥٓ إِذَا تَرَدَّىٰٓ﴾

"जब वह ध्वंस हो जायेगी तो उसका धन उसके काम नहीं आयेगी ।" (सूर: *अल-लैल-११*)

[2]अर्थात रसूल के भेजे तथा सावधान किये बिना यदि हम किसी बस्ती को ध्वंस करते तो यह अत्याचार होता, हमने ऐसा अत्याचार नहीं किया, बल्कि न्याय के नियमानुसार प्रथम उन्हें डराया तथा उसके पश्चात जब उन्होंने पैग़म्बर की बात नहीं मानी, तो हमने उन्हें नाश कर दिया । यही विषय सूर: *बनी इस्राईल-१५* तथा सूर: *अल-क़सस-५९* आदि में भी वर्णन किया गया है ।

[3]इन आयतों में क़ुरआन में, शैतानी हस्तक्षेप से सुरक्षित होने का वर्णन है । एक तो इसलिए कि शैतानों का क़ुरआन लेकर उतरना, उनके योग्य ही नहीं है । क्योंकि उनका

(२१३) अत: तू अल्लाह के साथ किसी अन्य देवता को न पुकार कि तू भी दण्ड पाने वालों में से हो जाये।

فَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَتَكُونَ مِنَ الْمُعَذَّبِينَ ﴿٢١٣﴾

(२१४) तथा अपने निकटवर्ती सम्बन्धियों को डरा दे।[1]

وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ ﴿٢١٤﴾

उद्देश्य उपद्रव, आतंक तथा बुराईयों का प्रचार-प्रसार करना है, जबकि क़ुरआन का उद्देश्य पुण्य के आदेश तथा प्रचार तथा बुराईयों से बचाव की विधियों का प्रचार है। अर्थात दोनों एक-दूसरे के विलोम तथा परस्पर विरोधी हैं। दूसरा यह कि शैतान इसकी शक्ति नहीं रखते, तीसरे यह कि क़ुरआन के अवतरित होते समय शैतानों को इसके सुनने से दूर तथा वंचित रखा गया। आकाशों पर सितारों को चौकीदार बना दिया गया था तथा जो भी शैतान ऊपर जाता यह सितारे उस पर बिजली बन कर गिरते तथा भस्म कर देते। इस प्रकार अल्लाह तआला ने क़ुरआन को सुरक्षित रखने का विशेष प्रबन्ध किया।

[1]पैग़म्बरों का आमन्त्रण केवल सम्बन्धियों तक सीमित नहीं, अपितु पूरे समुदाय के लिए होता है तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो पूरी मानव जाति के लिए मार्गदर्शक एवं निर्देशक बन कर आये थे। निकटवर्ती सम्बन्धियों को ईमान का आमन्त्रण जनसामान्य को आमन्त्रण देने के विपरीत नहीं, बल्कि उसका एक अंग अथवा उसका एक वरीयता प्राप्त पक्ष है। जिस प्रकार आदरणीय इब्राहीम ने सर्वप्रथम एकेश्वरवाद का आमन्त्रण अपने पिता आज़र को दिया था। इस आदेश के पश्चात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम *'सफ़ा'* पर्वत पर चढ़ गये तथा «يَا صَبَاحَاه!» कहकर आवाज़ दी। यह शब्द उस समय बोला जाता है, जब शत्रु सहसा आक्रमण कर दे, इसके द्वारा समुदाय वालों को सर्तक किया जाता है। यह शब्द सुनकर लोग एकत्रित हो गये, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़ुरैश के प्रत्येक क़बीले के नाम ले लेकर फ़रमाया, "बताओ! यदि मैं तुम्हें यह कहूँ कि इस पर्वत के पीछे शत्रु की सेना उपस्थिति है, जो तुम पर आक्रमण करने जा रहा है, तो क्या तुम मानोगे?" सभी ने उत्तर दिया, "हाँ, अवश्य हम मान लेंगे।" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, कि मुझे अल्लाह ने डराने वाला बनाकर भेजा है, मैं तुम्हें एक अत्यन्त कड़ी यातना से सावधान करता हूँ, इस पर अबूलहब ने कहा "تَبًّا لك أما دعوتنا إلا لهـذا" "तेरा नाश है, क्या तूने हमें इसीलिए बुलाया था?" (सहीह बुख़ारी तफ़सीर *सूर: मसद*)

इस पर सूर: तब्बत यदा अवतरित हुई आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी पुत्री फ़ातिमा, तथा अपनी बुआ आदरणीय सफ़िया को भी सम्बोधित किया, तुम अल्लाह के यहाँ बचाव का प्रबन्ध कर लो, मैं वहाँ तुम्हारे काम नहीं आ सकूँगा। (सहीह मुस्लिम किताबुल ईमान बाब व अंज़िर अशीरतकल अक़्रबीन)

(२१५) तथा उसके साथ नम्रता से पेश आ, जो भी ईमान लाने वाला होकर तेरे आधीन जो जाये।

وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢١٥﴾

(२१६) यदि ये लोग तेरी अवज्ञा करें तो तू घोषणा कर दे कि मैं इन कार्यों से अलग हूँ जो तुम कर हे हो।

فَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢١٦﴾

(२१७) तथा अपना पूर्ण विश्वास प्रभावशाली कृपालु अल्लाह पर रख।

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ﴿٢١٧﴾

(२१८) जो तुझे देखता रहता है, जबकि तू खड़ा होता है।

الَّذِي يَرَاكَ حِينَ تَقُومُ ﴿٢١٨﴾

(२१९) तथा सजदा (नमन) करने वालों के मध्य तेरा घूमना-फिरना भी।[1]

وَتَقَلُّبَكَ فِي السَّاجِدِينَ ﴿٢١٩﴾

(२२०) नि:सन्देह वह अत्यन्त सुनने वाला तथा अत्यन्त जानने वाला है।

إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٢٢٠﴾

(२२१) क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि शैतान किस पर उतरते हैं।

هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلَىٰ مَن تَنَزَّلُ الشَّيَاطِينُ ﴿٢٢١﴾

(२२२) वह प्रत्येक झूठे पापी पर उतरते हैं।[2]

تَنَزَّلُ عَلَىٰ كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ﴿٢٢٢﴾

(२२३) वे (उचटती हुई) सुनी सुनाई पहुँचा

يُلْقُونَ السَّمْعَ وَأَكْثَرُهُمْ كَاذِبُونَ ﴿٢٢٣﴾

---

[1]अर्थात जब तू अकेला होता है, जब भी अल्लाह देखता है तथा जब लोगों के मध्य होता है तब भी।

[2]अर्थात इस क़ुरआन के अवतरित होने में शैतान का कोई हाथ नहीं है, क्योंकि शैतान तो झूठे तथा पापियों (अर्थात भविष्यवक्ता एवं ज्योतिषयों आदि) पर उतरते हैं न कि नबियों एवं पुण्य कार्य करने वालों पर।

देते हैं तथा उनमें के अधिकतर झूठे हैं ।[1]

(२२४) तथा कवियों का अनुकरण वही करते हैं जो बहके हुए हों । وَالشُّعَرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُنَ ﴿٢٢٤﴾

(२२५) क्या आप ने नहीं देखा कि कवि एक-एक वन में सिर टकराते फिरते हैं ।[2] أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ يَهِيمُونَ ﴿٢٢٥﴾

(२२६) तथा वह कहते हैं जो करते नहीं ।[3] وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ ﴿٢٢٦﴾

---

[1]अर्थात एक-आध बात जो किसी प्रकार वे सुनने में सफल हो जाते हैं, उन भविष्य वक्ताओं को बता देते हैं, जिनके साथ वे सौ झूठी बातें अलग से सम्मिलित करते हैं । (जैसाकि हदीस में है, देखिए सहीह बुख़ारी किताबुत्त तौहीद, सहीह मुस्लिम किताबु-स्सलाम बाब तहरीमुल कहान: व इतयानुल कहहान) يلقون السمع शैतान आकाश पर सुनी हुई कुछ बातें भविष्यवक्ताओं को पहुँचा देते हैं, इस स्थिति में سمع का अर्थ مسموع का होगा, परन्तु यदि इसका अर्थ कान से सुनना है, तो अर्थ होगा कि शैतान आकाशों पर जाकर कान लगाकर चोरी-छिपे कुछ बातें सुन आते हैं, तथा फिर उन्हें भविष्य वत्ताओं तक पहुँचा देते हैं ।

[2]अधिकांश कवि ऐसे होते हैं जो प्रशंसा एवं भर्त्सना में नियम का पालन करने के बजाये मनमाने विचारों का प्रदर्शन करते हैं । इसके अतिरिक्त उसमें अतिश्योकित का प्रयोग करते हैं तथा कविता की कल्पना में इधर-उधर भटकते हैं, इसलिए फ़रमाया कि इनके पीछे लगने वाले भी भटके हुए हैं । इस प्रकार के कवियों के लिए हदीस में फ़रमाया गया कि 'पेट को रक्त तथा पीप से भर लेना, जो उसे ख़राब कर दे कविता से भर लेने से उत्तम है ।' (तिर्मिज़ी अबवाबुल आदाब, मुस्लिम आदि) यहाँ इस के वर्णन का अर्थ यह है कि हमारा पैग़म्बर भविष्यवेत्ता अथवा कवि नहीं है इसलिए कि ये दोनों झूठे हैं । अत: अन्य स्थान पर भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कवि होने का खण्डन किया गया है । जैसे *सूर: यासीन*-६९ तथा *सूर: अलहाक़्क़:*-४०-४३)

[3]इससे उन कवियों को अलग कर दिया गया है, जिनकी कविता सत्य तथा सत्यता पर आधारित है । तथा ऐसे शब्दों से अलगाव किया है जिनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि ईमानदार, पुण्यकारी तथा अल्लाह को अधिकतर याद करने वाला कवि अनुचित कविता जिसमें झूठ तथा अतिश्योक्ति का मिश्रण हो ही नहीं सकता । यह उन ही लोगों का कार्य है जो ईमान का गुण विशेष से खाली हो ।

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا اللَّهَ كَثِيرًا وَانتَصَرُوا مِن بَعْدِ مَا ظُلِمُوا ۗ وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنقَلَبٍ يَنقَلِبُونَ ﴿٢٢٧﴾

(२२७) अतिरिक्त उनके जो ईमान लाये तथा पुण्य के कर्म किये तथा अधिक मात्रा में अल्लाह तआला की प्रशंसा का वर्णन किया तथा अपनी निस्सहायता के पश्चात भी प्रतिशोध लिया ।[1] तथा जिन्होंने अत्याचार किया है वह भी अभी जान लेंगे कि किस करवट उलटते हैं ।[2]

سُورَةُ النَّمْلِ

सूरतुन नमल-२७

सूर: नमल* मक्का में उतरी तथा इसकी तिरानवे आयतें तथा सात रूकुऊ हैं ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु तथा अत्यन्त दयालु है ।

---

[1]अर्थात ऐसे ईमानवाले कवि उन काफ़िर कवियों को उत्तर देते हैं जिसमें उन्होंने मुसलमानों की बुराई की हो । जिस प्रकार आदरणीय हस्सान बिन साबित काफ़िरों कि आक्षेपित कविता का उत्तर दिया करते थे तथा स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनसे कहते कि "इन (काफ़िरों) की भर्त्सना करो जिब्रील भी तुम्हारे साथ हैं ।" (सहीह बुख़ारी किताबु बदइल ख़लक़, बाबु ज़िक्रील मलायक: मुस्लिम फ़ज़ाएल अस्सहाब: बाबु फ़ज़ायल हस्सान बिन साबित) इससे ज्ञात हुआ कि ऐसी कविता उचित एवं मान्य है जिसमें झूठ तथा अतिश्योक्ति न हो तथा जिसके द्वारा मूर्तिपूजकों, काफ़िरों झूठे लोगों को उत्तर दिया जाये तथा सत्य पक्ष एवं एकेश्वरवाद तथा सुन्नत का प्रचार-प्रसार किया जाये ।

[2]अर्थात أي مرجع يرجعون अर्थात कौन से घाट उतरते हैं ? तथा वह नरक है । इसमें अत्याचारियों के लिए कड़ी चेतावनी है । जिस प्रकार हदीस में भी फ़रमाया गया है "तुम अत्याचार से बचो । इसलिए कि अत्याचार क़ियामत के दिन अंधकार का कारण होगा ।" (सहीह मुस्लिम किताबुल बिर्र, बाब तहरिमिज़ ज़ुल्म)

*नमल अरबी भाषा में चींटी को कहते हैं । इस सूर: में चीटियों की घटना का वर्णन है जिसके कारण इसको सूर: नमल कहते हैं ।

(१) ता॰सीन॰, ये आयतें हैं क़ुरआन की (अर्थात स्पष्ट) एवं दिव्य ज्योति वाली किताब की।

طٰسٓ ۚ تِلۡكَ اٰيٰتُ الۡقُرۡاٰنِ وَكِتَابٍ مُّبِيۡنٍ ۙ﴿۱﴾

(२) मार्गदर्शक तथा शुभसूचना ईमानवालों के लिए।

هُدًى وَّبُشۡرٰى لِلۡمُؤۡمِنِيۡنَ ۙ﴿۲﴾

(३) जो नमाज स्थापित करते हैं तथा ज़कात अदा करते हैं तथा आख़िरत पर विश्वास रखते हैं।[1]

الَّذِيۡنَ يُقِيۡمُوۡنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤۡتُوۡنَ الزَّكٰوةَ وَهُمۡ بِالۡاٰخِرَةِ هُمۡ يُوۡقِنُوۡنَ ﴿۳﴾

(४) जो लोग क़ियामत पर ईमान नहीं लाते हमने उनके लिए उनके कुकर्मों को शोभनीय कर दिखाया[2] है, अतः वे भटकते-फिरते हैं।[3]

اِنَّ الَّذِيۡنَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡاٰخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمۡ اَعۡمَالَهُمۡ فَهُمۡ يَعۡمَهُوۡنَ ؕ﴿۴﴾

(५) यही वह लोग हैं जिनके लिए बुरी यातना है तथा आख़िरत में भी वह अत्यधिक हानि ग्रस्त हैं।

اُولٰٓـئِكَ الَّذِيۡنَ لَهُمۡ سُوۡٓءُ الۡعَذَابِ وَهُمۡ فِى الۡاٰخِرَةِ هُمُ الۡاَخۡسَرُوۡنَ ﴿۵﴾

---

[1]यह विषय विभिन्न स्थानों पर वर्णित है कि क़ुरआन करीम वैसे तो पूरी मानव जाति के मार्गदर्शन के लिए अवतरित किया गया है, परन्तु इससे वास्तव में मार्गदर्शन उन्हीं को मिलेगा जो मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहेंगे, जो लोग अपने दिल तथा मन की खिड़कियों को सत्य देखने तथा सुनने से बन्द अथवा अपने दिलों को पाप के अंधकारों से विगाड़ लेंगे, क़ुरआन उन्हें किस प्रकार मार्ग पर लगा सकता है ? उनका उदाहरण अंधों की तरह है, जो सूर्य के प्रकाश से लाभान्वित नहीं हो सकते जबकि सूर्य का प्रकाश सम्पूर्ण जगत को प्रकाशित करता है।

[2]यह पापों का परिणाम तथा बदला है कि बुराईयाँ उनको प्रिय लगने लगती हैं तथा आख़िरत पर ईमान से वंचित होना इसका आधारभूत कारण है। इसका सम्बन्ध अल्लाह की ओर इसलिए किया गया है कि प्रत्येक कार्य उसकी इच्छा तथा आदेश से होता है, तथा इसमें भी उसका वही नियम लागू है, कि पुण्य कारियों के लिए पुण्य का मार्ग तथा बुरों के लिए बुराई का मार्ग सरल कर दिया जाता है। परन्तु इन दोनों मार्गों में से किसी एक का निर्वाचन करना यह मनुष्य की अपनी इच्छा पर आधारित है।

[3]अर्थात भटकावे के जिस मार्ग पर वे चल रहे होते हैं, उसकी वास्तविकता से वे परिचित नहीं होते तथा सत्य मार्ग की ओर नहीं पाते।

وَإِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْآنَ مِن لَّدُنْ حَكِيمٍ عَلِيمٍ ⑥

(६) तथा निःसंदेह आपको क़ुरआन सिखाया जा रहा है अल्लाह विवेकी तथा सर्वज्ञ की ओर से।

إِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِأَهْلِهِ إِنِّي آنَسْتُ نَارًا سَآتِيكُم مِّنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ آتِيكُم بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ⑦

(७) (याद होगा,) जबकि मूसा ने अपने परिवार वालों से कहा कि मैंने आग देखी है, मैं वहाँ से या तो कोई सूचना लेकर अथवा आग का कोई जलता हुआ अंगारा लेकर अभी तुम्हारे पास आ जाऊँगा, ताकि तुम सेंक-ताप कर लो।[1]

فَلَمَّا جَاءَهَا نُودِيَ أَن بُورِكَ مَن فِي النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا وَسُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ⑧

(८) जब वहाँ पहुँचे तो आवाज़ दी गयी कि शुभ हो वह जो उस दिव्य ज्योति में है तथा मंगलमय है वह जो उस के आस-पास है,[2] तथा पवित्र है अल्लाह जो सर्वलोक का प्रभु है।[3]

---

[1]यह उस समय की घटना है जब आदरणीय मूसा मदयन से अपनी पत्नी को साथ लेकर वापस लौट रहे थे, रात्रि के अंधेरे में मार्ग का ज्ञान नहीं था तथा सर्दी से बचाव के लिए आग की आवश्यकता थी।

[2]दूर से जहाँ आग के शोले दिखायी दिये, वहाँ पहुँचे अर्थात तूर पर्वत पर, तो देखा कि एक हरे भरे वृक्ष से शोले निकल रहे हैं। यह वास्तव में आग नहीं थी, अल्लाह की दिव्य ज्योति थी, जो अग्नि की भाँति प्रतीत हो रही थी। مَن فِي النَّار में مَنْ से तात्पर्य अल्लाह तआला अर्थात उसका दिव्य प्रकाश है तथा من حولها (उसके समीप) से तात्पर्य मूसा एवं फ़रिश्ते। हदीस में अल्लाह तआला के पर्दे को प्रकाश तथा एक कथन में अग्नि कहा गया है "कि यदि अपने आप को साक्षात प्रकट कर दे तो उसका प्रताप सम्पूर्ण सृष्टि को जलाकर भस्म कर दे।" (सहीह मुस्लिम किताबुल ईमान बाब इन्नल्लाह ला यनामु-फ़तावा इब्न तैमिय: ५:४६४)

[3]यहाँ अल्लाह की महिमा एवं पवित्रता का अर्थ यह है कि इस आकाशवाणी से यह न समझ लिया जाये कि इस अग्नि अथवा वृक्षों में अल्लाह ने प्रवेश किया हुआ है, जिस प्रकार बहुत से मूर्तिपूजक समझते हैं, यह सत्य प्रदर्शन का एक प्रकार है जिससे नबूअत के प्रारम्भ में नबियों को सामान्यता सुशोभित किया जाता है। कभी फ़रिश्ते के

(९) मूसा ! (सुन,) बात यह है कि मैं ही अल्लाह हूँ[1] प्रभावशाली तथा गुणज्ञ।

يٰمُوْسٰٓى اِنَّهٗٓ اَنَا اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۙ﴿٩﴾

(१०) तथा तू अपनी छड़ी डाल दे, (मूसा ने) जब उसे हिलता-डुलता देखा, इस प्रकार कि जैसे सर्प है, तो मुँह मोड़कर पीठ फेरकर भागे तथा पलटकर भी न देखा, हे मूसा ! भयभीत न हो,[2] मेरे समक्ष पैग़म्बर डरा नहीं करते।

وَاَلْقِ عَصَاكَ ۭ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَاۗنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ۭ يٰمُوْسٰى لَا تَخَفْ ۣ اِنِّىْ لَا يَخَافُ لَدَيَّ الْمُرْسَلُوْنَ ڰ﴿١٠﴾

(११) परन्तु जो लोग अत्याचार करें,[3] फिर उसके बदले पुण्य करें उस बुराई के पीछे तो मैं भी क्षमा करने वाला दयालु हूँ।[4]

اِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًۢا بَعْدَ سُوْۗءٍ فَاِنِّىْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١﴾

(१२) तथा अपना हाथ अपनी जेब में डाल वह उज्जवल (तथा प्रकाश वाला) होकर निकलेगा बिना किसी रोग के।[5] (तू) नौ निशानियाँ लेकर फ़िरऔन तथा उसके

وَاَدْخِلْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاۗءَ مِنْ غَيْرِ سُوْۗءٍ ۣ فِيْ تِسْعِ اٰيٰتٍ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهٖ ۭ اِنَّهُمْ

द्वारा, तथा कभी स्वयं अल्लाह तआला अपने दिव्य प्रकाश एवं स्वयं वार्ता से, जैसाकि मूसा के साथ घटित हुआ।

[1]वृक्ष से आकाशवाणी होना आदरणीय मूसा के लिए आश्चर्यजनक था। अल्लाह तआला ने फ़रमाया, "मूसा ! आश्चर्य न करो, मैं ही अल्लाह हूँ।"

[2]इससे ज्ञात हुआ कि पैग़म्बर को गुप्त बातों का ज्ञान नहीं होता, वरन् मूसा अपने हाथ की लाठी से न डरते दूसरी बात यह कि पैग़म्बर को भी प्राकृतिक भय हो सकता है क्योंकि वह भी तो एक मनुष्य ही होते हैं।

[3]अर्थात अत्याचारी को तो भय होना ही चाहिए कि अल्लाह तआला उसकी पकड़ न कर ले।

[4]अर्थात अत्याचारी की क्षमा भी स्वीकार करता हूँ।

[5]अर्थात बिना कुष्ठ अथवा किसी प्रकार के चर्म रोग आदि के। यह लाठी के साथ दूसरा चमत्कार उन्हें प्रदान किया गया।

كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿١٢﴾

अनुयायियों के पास (जा,) [1] निःसंदेह वह कुकर्मियों का गुट है।

فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ اٰيٰتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٣﴾

(१३) अतः जब उनके पास आँखें खोल देने वाले [2] हमारे चमत्कार पहुँचे तो वह कहने लगे कि यह तो साफ (निरा) जादू है।

وَجَحَدُوْا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَآ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّعُلُوًّا ۗ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٤﴾

(१४) तथा उन्होंने अस्वीकार कर दिया, यद्यपि उनके दिल विश्वास कर चुके थे केवल अत्याचार एवं घमण्ड के कारण। [3] अतः देख लीजिए उन उपद्रवियों का परिणाम क्या कुछ हुआ।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ عِلْمًا ۚ وَقَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ

(१५) तथा हमने निःसंदेह दाऊद एवं सुलेमान को ज्ञान दे रखा था [4] तथा दोनों ने

---

[1] فِیْ تِسْعِ اٰیٰتٍ (नौ चमत्कार) अर्थात ये दो चमत्कार उन नौ निशानियों में से हैं जिनके द्वारा मैंने तेरी सहायता की है, उन्हें लेकर फ़िरऔन तथा उसके अनुयायियों के पास जा। इन नौ निशानियों की विस्तृत जानकारी के लिए देखिए सूरः *बनी इस्राईल* आयत १०१ की व्याख्या।

[2] مُبْصِرَةً स्पष्ट तथा प्रकाशमयी अथवा यह संज्ञा कर्ता कारक के अर्थ में है।

[3] अर्थात ज्ञान होने के उपरान्त जो उन्होंने अस्वीकार किया तो उसका कारण उनका अत्याचार एवं घमण्ड था।

[4] सूरः के प्रारम्भ में फ़रमाया गया था कि यह क़ुरआन अल्लाह की ओर से सिखाया जाता है, इसके प्रमाण के लिए तूर पर आदरणीय मूसा की घटना का संक्षिप्त वर्णन किया तथा अब दूसरा प्रमाण आदरणीय दाऊद तथा सुलेमान की यह घटना है। नबियों के इन घटनाओं का वर्णन इस बात का प्रमाण है कि परम आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के सच्चे रसूल हैं। ज्ञान से तात्पर्य नबूअत के ज्ञान के अतिरिक्त वह ज्ञान है जिनसे आदरणीय दाऊद तथा सुलेमान को विशेषरूप से अलंकृत किया गया था जैसे आदरणीय दाऊद को इस्पात उद्योग का ज्ञान, तथा आदरणीय सुलेमान को पशु-पक्षियों की बोली का ज्ञान प्रदान किया गया था। इन दोनों पिता-पुत्र को अन्य भी बहुत कुछ प्रदान किया गया था, परन्तु यहाँ केवल ज्ञान का वर्णन है जिससे स्पष्ट होता है कि ज्ञान अल्लाह का सर्वोत्तम उपहार है।

فَضَّلَنَا عَلٰى كَثِيْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٥﴾

कहा, सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है, जिसने हमें अपने बहुत से ईमानवाले भक्तों पर श्रेष्ठता प्रदान की है।

وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ وَقَالَ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَاُوْتِيْنَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ۗ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِيْنُ ﴿١٦﴾

(१६) तथा दाऊद के उत्तराधिकारी सुलेमान हुए,[1] और कहने लगे हे लोगो! हमें पक्षियों की बोली सिखायी गयी है।[2] तथा हम सब कुछ में से दिये गये हैं।[3] नि:संदेह यह अत्यन्त खुला हुआ (अल्लाह का) उपकार है।

وَحُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿١٧﴾

(१७) तथा सुलेमान के समक्ष उनकी सभी सेना जिन्नात, तथा मनुष्य, एवं पक्षी एकत्रित किये गये,[4] (प्रत्येक प्रकार को) अलग-अलग

---

[1]इससे तात्पर्य नबूअत तथा राज्य का उत्तराधिकार है, जिसके उत्तराधिकारी केवल सुलेमान ही हुए। वरन् आदरणीय दाऊद के अन्य पुत्र भी थे, जो इस उत्तराधिकार से वंचित रहे। वैसे भी नबियों का उत्तराधिकार ज्ञान में ही होता है, जो धन-सम्पत्ति वे छोड़ जाते हैं वह दान होता है, जैसाकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। (अल-बुख़ारी किताबुल फ़रायेज़, तथा मुस्लिम किताबुल जिहाद)

[2]बोलियाँ तो सभी पशु-पक्षियों की सिखायी गयी थीं, परन्तु पक्षियों का वर्णन विशेष रूप से इसलिए किया है कि पक्षी छाया के लिए हर समय साथ रहते थे। तथा कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि केवल पक्षियों की बोलियाँ सिखायी गयी थीं तथा चीटियों को भी पंख निकल आते हैं इसलिए वे भी पक्षियों में सम्मिलित हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[3]जिसकी उनको आवश्यकता थी, जैसे ज्ञान, नबूअत, नीति, धन, जिन्नात तथा मनुष्य एवं पशु-पक्षियों के ऊपर प्रभुत्व आदि।

[4]इसमें आदरणीय सुलेमान की व्यक्तिगत विशेषता तथा महत्व का वर्णन है, जिसमें वह सम्पूर्ण मानव इतिहास में सर्वश्रेष्ठ हैं, कि उनका राज्य केवल मनुष्यों पर ही नहीं था, बल्कि जिन्नातों, पशुओं एवं पक्षियों यहाँ तक कि हवा को भी उनके अधीन कर दिया गया था, इसमें कहा गया है कि सुलेमान की पूरी सेना अर्थात जिन्नों, मनुष्यों, तथा पक्षियों को एकत्रित किया गया। अर्थात कहीं प्रस्थान करने के लिए यह सेना एकत्रित की गयी।

खड़ा कर दिया गया ।[1]

(१८) जब वे चीटियों के मैदान में पहुँचे तो एक चींटी ने कहा, हे चीटियों ! अपने-अपने घरों में घुस जाओ, (ऐसा न हो कि) असावधानी के कारण सुलेमान तथा उनकी सेना तुम्हें रौंद डाले ।[2]

حَتّٰىٓ اِذَآ اَتَوْا عَلٰى وَادِ النَّمْلِ ۙ قَالَتْ نَمْلَةٌ يّٰٓاَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا مَسٰكِنَكُمْ ۚ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَجُنُوْدُهٗ ۙ وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٨﴾

(१९) उसकी इस बात पर (आदरणीय सुलेमान) मुस्करा कर हँस दिये तथा दुआ करने लगे कि हे प्रभु ! तू मुझे सौभाग्य प्रदान कर कि मैं तेरे इन उपकारों की कृतज्ञता व्यक्त

فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ

[1]यह अनुवाद को विभाजन के अर्थ में लेकर किया गया है । अर्थात सभी को अलग-अलग गुटों में विभाजित (श्रेणी के रूप में) कर दिया जाता था । जैसे मनुष्यों, जिन्नों का गुट पक्षियों एवं पशुओं का गुट आदि-आदि । इसका अन्य अर्थ है "अत: वे रोके जाया करते थे ।" अर्थात यह सेना इतनी बड़ी संख्या में होती थी कि मार्ग में रोक-रोककर उन्हें ठीक किया जाता था कि राज्य की सेना असंगठित एवं विभाजन का शिकार न हो जाये । यह وزع يزع से है जिसका अर्थ रोकने का है । इस शब्द में नकारात्मक हम्ज़ा लगाकर तो أوزعني बनाया है जो आयत संख्या १९ में आ रहा है अर्थात ऐसी वस्तुयें मुझसे दूर कर दे, जो मुझे तेरे उपकारों की कृतज्ञनता व्यक्त करने से रोकती हैं ।

[2]इससे यह ज्ञात हुआ कि जीवों में भी एक विशेष प्रकार का संवेदन विद्यमान है । यद्यपि वह मनुष्य से बहुत कम तथा भिन्न है । दूसरा यह कि आदरणीय सुलेमान इतने महान तथा महत्वपूर्ण व्यक्ति होने के पश्चात भी उन्हें परोक्ष का ज्ञान नहीं था, इसीलिए चीटियों को आभास हुआ कि अनजाने में वह उनको रौंद न डालें । तीसरा यह कि जीव भी इस सत्य विश्वास से परिचित थे तथा हैं कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई भी अप्रत्यक्ष का ज्ञान नहीं रखता । जैसाकि आगे आने वाली हुदहुद की घटना से और पुष्टि होती है । चौथे यह कि आदरणीय सुलेमान पक्षियों के अतिरिक्त अन्य जीवों की बोलियाँ भी समझते थे । यह ज्ञान अल्लाह तआला ने उन्हें प्रदान किया था, जिस प्रकार जिन्नात आदि की आधीन चमत्कारिक प्रतिष्ठा थी चमत्कार के रूप में ।

وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَدْخِلْنِي بِرَحْمَتِكَ فِي عِبَادِكَ الصَّالِحِينَ ﴿١٩﴾

करूँ,[1] जो तूने मुझ पर उपकार किये हैं। तथा मेरे माता-पिता पर तथा मैं ऐसे पुण्य के कार्य करता रहूँ जिससे तू प्रसन्न रहे, तथा मुझे अपनी कृपा से अपने पुण्यकारी भक्तों में सम्मिलित कर ले।[2]

وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَا أَرَى الْهُدْهُدَ أَمْ كَانَ مِنَ الْغَائِبِينَ ﴿٢٠﴾

(२०) तथा आप ने पक्षियों का निरीक्षण किया और कहने लगे यह क्या बात है कि मैं हुद हुद को नहीं देख रहा हूँ? क्या वास्तव में वह अनुपस्थिति है?[3]

لَأُعَذِّبَنَّهُ عَذَابًا شَدِيدًا أَوْ لَأَاذْبَحَنَّهُ أَوْ لَيَأْتِيَنِّي بِسُلْطَانٍ مُبِينٍ ﴿٢١﴾

(२१) नि:संदेह मैं उसे कड़ा दण्ड दूँगा, अथवा उसे वधकर डालूँगा अथवा मेरे समक्ष कोई उचित कारण बताये।

فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيدٍ فَقَالَ أَحَطْتُ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهِ وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَإٍ بِنَبَإٍ

(२२) कुछ अधिक समय नहीं बीता था कि (आकर) उसने कहा मैं ऐसी वस्तु की सूचना लाया हूँ कि तुझे उसकी सूचना ही नहीं।[4]

---

[1]चीटियों जैसे तुच्छ जीव की बात सुनकर समझ लेने से आदरणीय सुलेमान के दिल में कृतज्ञता व्यक्त करने की भावना उत्पन्न हुई कि अल्लाह ने मुझ पर कितना उपकार किया है।

[2]इससे ज्ञात हुआ कि स्वर्ग जो ईमानवालों ही का घर है, इसमें कोई भी अल्लाह की कृपा के बिना प्रवेश नहीं कर सकेगा। इसीलिए हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : सीधे-सीधे तथा सत्य के निकट रहो तथा यह बात जान लो कि कोई व्यक्ति भी केवल अपने कर्मों से स्वर्ग में नहीं जायेगा। सहाबा ने पूछा, हे रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) भी? आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया : "हाँ, मैं भी उस समय तक स्वर्ग में नहीं जाऊँगा, जब तक अल्लाह की दया मुझे अपनी छाया में नहीं छिपा लेगी।" (सहीह बुखारी संख्या ६४६७ तथा मुस्लिम संख्या २८१६)

[3]अर्थात उपस्थिति तो है, मुझे दिखाई नहीं दे रहा है अथवा यहाँ उपस्थिति ही नहीं है।

[4] إحاطة का अर्थ है किसी वस्तु के विषय में पूर्ण ज्ञान तथा परिचय प्राप्त करना।

يَقِينٍ ﴿٢٢﴾

में 'सबा'[1] की एक सच्ची सूचना तेरे पास लाया हूँ।

إِنِّي وَجَدتُّ ٱمۡرَأَةٗ تَمۡلِكُهُمۡ وَأُوتِيَتۡ مِن كُلِّ شَيۡءٖ وَلَهَا عَرۡشٌ عَظِيمٞ ﴿٢٣﴾

(२३) मैंने देखा कि उनकी बादशाहत एक महिला कर रही है,[2] जिसे हर प्रकार की वस्तु से कुछ न कुछ प्रदान किया गया है तथा उसका सिंहासन भी बड़ा भव्य है।[3]

وَجَدتُّهَا وَقَوۡمَهَا يَسۡجُدُونَ لِلشَّمۡسِ مِن دُونِ ٱللَّهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ ٱلشَّيۡطَٰنُ أَعۡمَٰلَهُمۡ فَصَدَّهُمۡ عَنِ ٱلسَّبِيلِ فَهُمۡ لَا يَهۡتَدُونَ ﴿٢٤﴾

(२४) मैंने उसे तथा उसके समुदाय को अल्लाह को छोड़कर सूर्य को सजदा करते हुए पाया, शैतान ने उनके कार्य उन्हें भले करके दिखाकर सत्य मार्ग से रोक दिया है।[4] अतः वे मार्गदर्शन पर नहीं आते।

---

[1]सबा एक व्यक्ति के नाम पर एक समुदाय का नाम भी था एवं एक नगर का भी। यहाँ नगर से तात्पर्य है। यह सनआ (यमन) से तीन दिन की यात्रा की दूरी पर है तथा मआरिब यमन के नाम से प्रसिद्ध है। (फ़तहुल क़दीर)

[2]अर्थात हुदहुद के लिए भी यह बात आश्चर्यजनक थी कि सबा में एक स्त्री राज्य कर रही है। परन्तु आजकल कहा जाता है कि स्त्रियाँ भी हर बात में पुरूषों के समान हैं। यदि पुरूष राज्य कर सकता है तो महिला क्यों नहीं कर सकती? जब कि यह दृष्टिकोण इस्लामी शिक्षाओं के विपरीत है। कुछ लोग महारानी सबा (बिलक़ीस) के इस वाक्य से अर्थ निकालते हुए कहते हैं कि महिला का नेतृत्व मान्य है। यद्यपि क़ुरआन ने एक घटना के रूप में इसका वर्णन किया है, इससे इसकी मान्यता अथवा अमान्यता का कोई सम्बन्ध ही नहीं है। महिला नेतृत्व की अमान्यता पर क़ुरआन तथा हदीस में स्पष्ट प्रमाण विद्यमान है।

[3]कहा जाता है कि उसकी लम्बाई ८० हाथ, चौड़ाई ४० हाथ तथा ऊँचाई ३० हाथ थी तथा उसमें मोती, लाल, नीलम, पन्ना, पुखराज, फ़िरोज़ा, मणि आदि जड़े हुए थे। والله أعلم (फ़तहुल क़दीर) वैसे यह कथन अतिश्योक्ति से शून्य नहीं प्रतीत होता। यमन में बिलक़ीस का जो महल खण्डहर के रूप में विद्यमान है उसमें इतने बड़े सिंहासन की संभावना नहीं।

[4]इसका अर्थ यह है जिस प्रकार पक्षियों को यह आभास है कि नबियों को अप्रत्यक्ष का ज्ञान नहीं होता, जैसाकि हुदहुद ने आदरणीय सुलेमान को कहा कि ऐसा समाचार लाया

(२५) कि मात्र उसी अल्लाह को सजदा करें,[1] जो आकाशों तथा धरती की गुप्त वस्तुओं को बाहर निकालता है ।[2] तथा जो कुछ तुम गुप्त रखते हो तथा प्रकट करते हो वह सभी कुछ जानता है ।

أَلَّا يَسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ﴿٢٥﴾

(२६) (अर्थात) अल्लाह ! उसके अतिरिक्त कोई पूजने योग्य नहीं वही विशाल अर्श का प्रभु है ।[3]

اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۩ ﴿٢٦﴾

(२७) (सुलेमान ने) कहा कि अब हम देखेंगे कि तूने सत्य कहा अथवा तू झूठा है ।

قَالَ سَنَنظُرُ أَصَدَقْتَ أَمْ كُنتَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٢٧﴾

हूँ जिससे आप भी अनजान हैं, उसी प्रकार वह अल्लाह के एक होने का प्रवधि एवं समझ भी रखते हैं । इसीलिए हुदहुद ने आश्चर्य एवं विस्मय के रूप में कहा कि यह महारानी तथा उसका समुदाय अल्लाह के अतिरिक्त सूर्य के पुजारी हैं तथा शैतान का अनुकरण कर रहे हैं, जिसने उनके लिए सूर्य की पूजा को अलंकृत करके दिखाया है ।

[1] ألا يسـجدوا उसका सम्बन्ध भी زيّن के साथ है । अर्थात शैतान ने यह भी उनके लिए आकर्षक कर दिया है कि वह अल्लाह को सजदा न करें । अथवा यह لا يهتدون का कारक है तथा ४ अधिक है । अर्थात उनकी बुद्धि में यह बात नहीं आती कि सजदा तो केवल अल्लाह को करें । (फ़तहुल क़दीर)

[2]अर्थात आकाश से वर्षा करता है तथा धरती से उसके योग्य बनस्पति खनिज एवं अन्य धरती के कोष प्रकट करता तथा निकालता है ।

[3]अल्लाह तो सम्पूर्ण सृष्टि का स्वामी है, परन्तु केवल महान अर्श का वर्णन किया, एक तो इस लिए कि अल्लाह का सिंहासन (अर्श) सृष्टि की सबसे बड़ी चीज़ तथा सर्वश्रेष्ठ है । दूसरे यह स्पष्ट करने के लिए कि महारानी सबा का राजसिंहासन यद्यपि बहुत बड़ा है, परन्तु उसके महान सिंहासन से कोई तुलना ही नहीं है । जिस प्रकार अल्लाह तआला अपनी महिमा के अनुसार आसीन है । हुदहुद ने चूँकि एकेश्वरवाद का पक्ष तथा शिर्क का खण्डन किया है, तथा अल्लाह की महिमा तथा प्रशंसा का वर्णन किया है, इसलिए हदीस में आता है "चार जीवों की हत्या न करो चींटी, मधुमक्खी, हुदहुद तथा लटूरा ।" (मुसनद अहमद भाग १ पृष्ठ ३३२, अबू दाऊद किताबुल अदब, इब्ने माजा किताबु स्सैयद, बाब मा युन्हा अन क़त्लेही) लटूरा, इसका सिर बड़ा, पेट सफ़ेद तथा पीठ हरी होती है, यह छोटे-छोटे पक्षियों का शिकार करता है । (व्याख्या इब्ने कसीर)

(२८) मेरे इस पत्र को ले जाकर उन्हें दे दे, फिर उनके पास से हट आ तथा देख कि वे क्या उत्तर देते हैं ।[1]

اِذْهَبْ بِّكِتٰبِيْ هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾

(२९) वह कहने लगी हे प्रमुखो ! मेरी ओर एक अत्यन्त पत्र डाला गया है ।

قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّيْۤ اُلْقِيَ اِلَيَّ كِتٰبٌ كَرِيْمٌ ﴿٢٩﴾

(३०) जो सुलेमान की ओर से है तथा जो दया करने वाले अत्यन्त कृपालु अल्लाह के नाम से प्रारम्भ है ।

اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَاِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿٣٠﴾

(३१) यह कि तुम मेरे समक्ष उद्दण्डता मत करो तथा मुसलमान बनकर मेरे पास आ जाओ ।[2]

اَلَّا تَعْلُوْا عَلَيَّ وَاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣١﴾

(३२) उसने कहा हे मेरे प्रमुखो ! तुम मेरी इस समस्या में मुझे परामर्श दो । मैं किसी बात का अंतिम निर्णय जब तक तुम्हारी उपस्थिति एवं राय न हो नहीं किया करती ।

قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَفْتُوْنِيْ فِيْۤ اَمْرِيْ ۚ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً اَمْرًا حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ ﴿٣٢﴾

(३३) उन सभी ने उत्तर दिया कि हम शक्तिशाली एवं शक्ति वाले अत्यधिक लड़ने-भिड़ने वाले हैं ।[3] आगे आप को अधिकार है

قَالُوْا نَحْنُ اُولُوْا قُوَّةٍ وَّاُولُوْا بَاْسٍ شَدِيْدٍ ۙ وَّالْاَمْرُ اِلَيْكِ فَانْظُرِيْ

---

[1] अर्थात एक ओर हटकर छिप जा तथा देख कि वे आपस में क्या वार्तालाप करते हैं ।

[2] जिस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी राजाओं को पत्र लिखे थे । जिनमें उन्हें इस्लाम धर्म स्वीकार करने का आमन्त्रण दिया था । उसी प्रकार आदरणीय सुलेमान ने भी उसे पत्र द्वारा इस्लाम धर्म स्वीकार करने का आमन्त्रण दिया ।आजकल जिसको पत्र लिखा जाता है उसका नाम पहले लिखा जाता है । परन्तु प्राचीन काल की विधि यह थी, जो आदरणीय सुलेमान ने अपनाया था कि पहले अपना लिखा ।

[3] अर्थात हमारे पास शक्ति तथा शस्त्र भी हैं तथा युद्ध के समय वीरता से लड़ने वाले भी हैं, इसलिए झुकने तथा दबने की आवश्यकता नहीं है ।

مَاذَا تَأْمُرِينَ ﴿٣٣﴾

आप स्वयं ही विचार कीजिए कि आप हमें क्या आदेश देती हैं ।[1]

قَالَتْ إِنَّ الْمُلُوكَ إِذَا دَخَلُوا قَرْيَةً أَفْسَدُوهَا وَجَعَلُوا أَعِزَّةَ أَهْلِهَا أَذِلَّةً ۖ وَكَذَٰلِكَ يَفْعَلُونَ ﴿٣٤﴾

(३४) उसने कहा कि बादशाह जब किसी बस्ती में प्रवेश करते हैं,[2] तो उसे उजाड़ देते हैं तथा वहाँ के सम्मानित लोगों को अपमानित करते हैं ।[3] तथा ये लोग भी ऐसा ही करेंगे ।[4]

وَإِنِّي مُرْسِلَةٌ إِلَيْهِم بِهَدِيَّةٍ فَنَاظِرَةٌ بِمَ يَرْجِعُ الْمُرْسَلُونَ ﴿٣٥﴾

(३५) तथा मैं उन्हें एक उपहार भेजने वाली हूँ, फिर देख लूँगी कि राजदूत क्या उत्तर लेकर लौटते हैं ।[5]

فَلَمَّا جَاءَ سُلَيْمَانَ قَالَ أَتُمِدُّونَنِ بِمَالٍ فَمَا آتَانِيَ اللَّهُ خَيْرٌ مِّمَّا آتَاكُم بَلْ أَنتُم بِهَدِيَّتِكُمْ

(३६) अत: (राजदूत) जब (आदरणीय) सुलेमान के पास पहुँचा तो आप ने कहा, क्या तुम धन से मुझे मदद देना चाहते हो ?[6] मुझे तो मेरे प्रभु ने इस से अत्यधिक प्रदान कर रखा

---

[1]इसलिए कि हम तो आपके आदेश के आधीन हैं, जोआपका आदेश होगा, पालन करेंगे ।

[2]अर्थात शक्ति के द्वारा विजय प्राप्त करते हुए ।

[3]अर्थात हत्या तथा लूटपाट करके बन्दी बनाकर ।

[4]कुछ व्याख्याकारों के निकट यह अल्लाह का कथन है जो महारानी सबा के पक्ष में है तथा कुछ के निकट यह बिलक़ीस का ही कथन है तथा इसका विशिष्ट रूप है एवं यही पूर्व वाक्य में अधिक निकट है ।

[5]इससे अनुमान हो जायेगा कि सुलेमान कोई साँसारिक राजा हैं अथवा अल्लाह के भेजे हुए नबी हैं, जिसका उद्देश्य अल्लाह के धर्म का प्रभुत्व स्थापित करना है । यदि उपहार स्वीकार नहीं किया, तो नि:संदेह उसका उद्देश्य धर्म का प्रचार-प्रसार है, फिर हमें भी अनुकरण किये बिना कोई उपाय नहीं होगा ।

[6]अर्थात तुम देख नहीं रहे हो, कि अल्लाह ने मुझे हर वस्तु प्रदान की है । फिर तुम अपने उपहार से मेरे धन-सम्पत्ति में क्या बढ़ा सकते हो ? यह प्रश्न नकारात्मक है । अर्थात कोई बढ़ोत्तरी नहीं कर सकते ।

تَفْرَحُونَ ﴿٣٦﴾

है, जो उसने तुम्हें दिया है, अत: तुम ही अपने उपहार से प्रसन्न रहो ।[1]

ارْجِعْ إِلَيْهِمْ فَلَنَأْتِيَنَّهُم بِجُنُودٍ لَّا قِبَلَ لَهُم بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُم مِّنْهَا أَذِلَّةً وَهُمْ صَاغِرُونَ ﴿٣٧﴾

(३७) जा उनकी ओर लौट जा [2] हम उनके पास ऐसी सेना लायेंगे जिसके सम्मुख आने की उनमें शक्ति नहीं तथा हम उन्हें अपमानित एवं पराजित करके वहाँ से निकाल बाहर करेंगे ।[3]

قَالَ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ أَيُّكُمْ يَأْتِينِي بِعَرْشِهَا قَبْلَ أَن يَأْتُونِي مُسْلِمِينَ ﴿٣٨﴾

(३८) (आप ने) कहा हे सरदारो ! तुममें से कोई है जो उनके मुसलमान होकर पहुँचने से पहले ही उसका सिंहासन मुझे लाकर दे ।[4]

---

[1]यह चेतावनी के रूप में है कि तुम ही इस उपहार पर गर्व करो तथा प्रसन्न हो, मैं तो इससे प्रसन्न होने वाला नहीं, इसलिए कि एक तो साँसारिक लाभ मेरा उद्देश्य नहीं है । दूसरे यह कि अल्लाह ने मुझे वह कुछ प्रदान किया है जो सम्पूर्ण संसार में किसी को प्रदान नहीं किया । तीसरे, मुझे नबूअत से भी सुशोभित किया गया है ।

[2]यहाँ एक वचन से सम्बोधित किया, जबकि इससे पूर्व बहुवचन से सम्बोधित किया था । क्योंकि सम्बोधन में सम्पूर्ण पार्टी को ध्यान में रखा गया है कभी सरदार को ।

[3]आदरणीय सुलेमान केवल राज्य से सम्बन्धित नहीं थे, अल्लाह के पैग़म्बर भी थे । इसलिए उनकी ओर से लोगों को अपमानित करना संभव नहीं था, परन्तु लड़ाई का परिणाम यही होता है क्योंकि युद्ध नाम ही रक्तपात तथा बन्दी बनने बनाने का है तथा अपमान और अनादर से तात्पर्य यही है, वरन् अल्लाह के पैग़म्बर लोगों को अनायास लज्जित तथा अपमानित नहीं करते । जिस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का व्यवहार एवं उत्तम आचार युद्ध के अवसर पर रहा ।

[4]आदरणीय सुलेमान के इस उत्तर से महारानी ने यह अनुमान लगाया कि वह सुलेमान का सामना नहीं कर सकेंगी । अत: उन्होंने अधीन एवं अनुयायी बनकर आने की तैयारी प्रारम्भ कर दी । आदरणीय सुलेमान को भी उनके आगमन की सूचना मिल गयी, तो आप ने उन्हें अपने अधिक चमत्कारिक प्रतिष्ठा दिखाने के लिए योजना बनायी तथा उनके पहुँचने से पूर्व ही उसका राजसिंहासन अपने पास मँगवाने का प्रबन्ध किया ।

(३९) एक शक्तिशाली जिन्न कहने लगा, आप के अपने इस स्थान से[1] उठने से पूर्व ही मैं उसे आप के पास ला देता हूँ ।[2] विश्वास कीजिए मैं इसका सामर्थ्य रखता हूँ तथा हूँ भी अमानतदार ।[3]

قَالَ عِفْرِيتٌ مِّنَ الْجِنِّ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَن تَقُومَ مِن مَّقَامِكَ ۖ وَإِنِّي عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ أَمِينٌ ﴿٣٩﴾

(४०) जिसके पास किताब का ज्ञान था वह बोल उठा कि आप पलक झपकायें उससे भी पूर्व मैं उसे आपके पास पहुँचा सकता हूँ ।[4]

قَالَ الَّذِي عِندَهُ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتَابِ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَن يَرْتَدَّ إِلَيْكَ

---

[1]इससे वह सभा तात्पर्य है जो वाद-विवाद की सुनवायी के लिए आदरणीय सुलेमान प्रात: काल से मध्यान्ह तक आयोजित करते थे ।

[2]इससे ज्ञात हुआ कि वह अवश्य एक जिन्न था, जिन्हें अल्लाह ने मनुष्यों से अप्रत्याशित शक्तियों से युक्त किया है । क्योंकि किसी मनुष्य के लिए, चाहे वह कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो, यह संभव ही नहीं है कि बैतुल मोकद्दस से मारिब यमन (सबा) जाये तथा फिर वहाँ से राजसिंहासन उठा लाये । तथा डेढ़ हज़ार मील की यह दूरी जिसे दोनों ओर की गणना की जाये तो तीन हज़ार मील बनता है । तीन-चार घंटे में तय कर ले । एक शक्तिशाली से शक्तिशाली मनुष्य भी प्रथम तो इतने बड़े सिंहासन को उठा ही नहीं सकता तथा यदि वह अन्य लोगों से अथवा वस्तुओं की सहायता से उठा भी ले तो इतनी अल्पकालिक अवधि में इतनी यात्रा किस प्रकार सम्भव है कि तय कर ले ।

[3]अर्थात मैं उसे उठा कर ला भी सकता हूँ तथा उसकी किसी वस्तु में परिवर्तन भी नहीं करूँगा ।

[4]यह कौन व्यक्ति था जिसने यह कहा ? यह किताब कौन सी थी ? तथा यह ज्ञान क्या था जिसकी शक्ति पर यह दावा किया गया ? इसमें व्याख्याकारों के विभिन्न कथन हैं । इन तीनों की पूर्ण वास्तविकता तो अल्लाह तआला ही जानता है । यहाँ कुरआन करीम के शब्दों से जो ज्ञात होता है, वह इतना ही है कि वह कोई मनुष्य ही था, जिसके पास अल्लाह की किताब का ज्ञान था, अल्लाह तआला ने चमत्कार एवं अप्राकृतिक रूप से उसे यह शक्ति प्रदान की कि पलक झपकते ही वह सिंहासन ले आया । आचरण तथा चमत्कार नाम ही ऐसे कार्यों का है, जो उपस्थिति साधन तथा सामान्य बातों से एकदम विपरीत हो । तथा वह अल्लाह तआला के सामर्थ्य एवं इच्छा से ही प्रकट होते हैं । इसलिए न व्यक्तिगत शक्ति आश्चर्यजनक है तथा न उस ज्ञान के खोज की आवश्यकता

जब आपने उसे अपने निकट उपस्थिति पाया, तो कहने लगे यही मेरे प्रभु का उपकार है, ताकि वह मुझे परखे कि मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ अथवा कृतघ्न । कृतज्ञता व्यक्त करने वाला अपने लाभ के लिए ही कृतज्ञता व्यक्त करता है तथा जो अकृज्ञता व्यक्त करे, तो मेरा प्रभु निस्पृह तथा महान है ।

طَرْفُكَ ۚ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ ۖ لِيَبْلُوَنِيْٓ ءَاَشْكُرُ اَمْ اَكْفُرُ ۗ وَمَنْ شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ رَبِّيْ غَنِيٌّ كَرِيْمٌ ﴿٤٠﴾

(४१) आदेश दिया कि उसके सिंहासन में कुछ परिवर्तन कर दो,[1] हम देखेंगे कि यह मार्ग पा लेती है अथवा उनमें से होती है जो मार्ग नहीं पाते ।[2]

قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ اَتَهْتَدِيْٓ اَمْ تَكُوْنُ مِنَ الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿٤١﴾

(४२) फिर जब वह आ गयी तो उससे पूछा गया कि ऐसा ही तेरा सिंहासन है ? उसने उत्तर दिया कि यह जैसाकि वही है ।[3] हमें इस

فَلَمَّا جَآءَتْ قِيْلَ اَهٰكَذَا عَرْشُكِ ۗ قَالَتْ كَاَنَّهٗ هُوَ ۚ وَاُوْتِيْنَا الْعِلْمَ

है, जिसका वर्णन यहाँ है । क्योंकि यह उस शक्ति का परिचय है, जिसके द्वारा यह कार्य पल भर में पूरा हुआ । अन्यथा वास्तव में तो यह अल्लाह की चाहत ही की कार्यवाही थी जो पल भर में जो चाहे कर सकती है । आदरणीय सुलेमान भी इस वास्तविकता से परिचित थे, इसलिए जब उन्होंने देखा कि सिंहासन प्रस्तुत है, तो उसे अपने प्रभु की कृपा ही कहा ।

[1]अर्थात उसके रँगरूप अथवा आकार में परिवर्तन कर दो ।

[2]अर्थात वह उस बात से परिचित होती है कि यह सिंहासन उसी का है अथवा उसको समझ नहीं पाती ? दूसरा अर्थ यह है कि वह मार्गदर्शन पाती है अथवा नहीं ? अर्थात इतना बड़ा चमत्कार देख कर भी उस पर सत्यमार्ग खुलता है अथवा नहीं ।

[3]परिवर्तन के कारण चूँकि उसके आकार में कुछ परिवर्तन आ गया था, इसलिए उसने स्पष्ट शब्दों में उसका अपना होना स्वीकार भी नहीं किया तथा परिवर्तन उपरान्त मनुष्य फिर भी अपनी वस्तु को पहचान लेता है, इसलिए अपना होने को नकारा भी नहीं तथा यह कहा कि "जैसाकि वही है ।" इसमें स्वीकार है न अस्वीकार । अपितु अत्यन्त सतर्कता पूर्ण उत्तर है ।

مِن قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِينَ ﴿٤٢﴾

से पूर्व ही ज्ञान दिया गया था तथा हम मुसलमान थे ।[1]

وَصَدَّهَا مَا كَانَت تَّعْبُدُ مِن دُونِ اللَّهِ ۖ إِنَّهَا كَانَتْ مِن قَوْمٍ كَافِرِينَ ﴿٤٣﴾

(४३) तथा उसे उन्होंने रोक रखा था जिनकी वह अल्लाह के अतिरिक्त पूजा करती रही थी । नि:संदेह वह काफ़िर लोगों में से थी ।[2]

قِيلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۖ فَلَمَّا رَأَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَكَشَفَتْ عَن سَاقَيْهَا ۚ قَالَ إِنَّهُ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّن قَوَارِيرَ ۗ قَالَتْ رَبِّ إِنِّي

(४४) उससे कहा गया कि महल में चली चलो जिसे देखकर यह समझकर कि जलाशय है उसने अपनी पिंडलियाँ खोल दीं,[3] फ़रमाया यह तो शीशे से निर्मित भवन है, कहने लगी मेरे प्रभु ! मैंने अपने प्राण पर अत्याचार किया ।

---

[1]अर्थात यहाँ आने से पूर्व ही हम समझ गये थे कि आप अल्लाह के नबी हैं तथा आपके अधीन एवं अनुयायी हो गये थे । परन्तु इमाम इब्ने कसीर तथा शौकानी आदि ने इसे आदरणीय सुलेमान का कथन कहा है कि हमें पूर्व ही यह ज्ञान दे दिया गया था कि महारानी सबा आज्ञाकारिणी होकर सेवा में उपस्थिति होगी ।

[2]यह अल्लाह तआला का कथन है तथा صَدَّهَا का कर्ता مَا كانت تعبد है । अर्थात उसे अल्लाह की इबादत से जिस वस्तु ने रोक रखा था, वह अल्लाह के अतिरिक्त अन्य की पूजा थी, तथा इसका कारण यह था कि उसका सम्बन्ध एक काफ़िर समुदाय से था, इसलिए एकेश्वरवाद की वास्तविकता से अनजान रही, कुछ ने صَدَّهَا का कर्ता अल्लाह को तथा कुछ ने सुलेमान को बताया है । अर्थात अल्लाह अथवा अल्लाह के आदेश से सुलेमान ने उसे अल्लाह के अतिरिक्त अन्य की पूजा से रोक दिया । परन्तु प्रथम कथन अधिक उचित है । (फ़तहुल क़दीर)

[3]यह महल शीशे से निर्मित था जिसका आँगन तथा फ़र्श भी शीशे का था । لُجَّةً गहरे पानी अथवा जलाशय को कहते हैं । आदरणीय सुलेमान ने अपनी नबूअत के लिए सम्मान सूचक चमत्कार दिखाने के पश्चात उचित समझा कि उसे अपनी साँसारिक वैभव एवं शोभा की एक झलक दिखायी जाये, जिसमें अल्लाह ने मानव इतिहास में उन्हें विशेषता दी थी । अत: उसे महल में प्रवेश करने का आदेश दिया, जब वह प्रवेश करने लगी, तो उसने अपने पाइंचे चढ़ा लिए । शीशे का फ़र्श उसे पानी प्रतीत हुआ, जिससे अपने वस्त्रों को बचाने के लिए उसने अपने पाइंचे चढ़ा लिए ।

ظَلَمْتُ نَفْسِي وَأَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمَٰنَ لِلَّهِ رَبِّ الْعَٰلَمِينَ ﴿٤٤﴾

अब मैं सुलेमान के साथ अल्लाह सर्वलोक के नाथ की आज्ञाकारिणी बनती हूँ ।[1]

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَٰلِحًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ فَإِذَا هُمْ فَرِيقَانِ يَخْتَصِمُونَ ﴿٤٥﴾

(४५) तथा निःसंदेह हमने 'समूद' की ओर उनके भाई 'स्वालेह' को भेजा कि तुम सब अल्लाह की इबादत करो, फिर भी वे दो गुट बनकर आपस में लड़ने लग गये ।[2]

قَالَ يَٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُونَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ ۖ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُونَ اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٤٦﴾

(४६) (आपने) कहा हे मेरे समुदाय के लोगो ! तुम भलाई से पहले बुराई की शीघ्रता क्यों मचा रहे हो ?[3] तुम अल्लाह (तआला) से क्षमा क्यों नहीं माँगते ? ताकि तुम पर दया की जाये ।

---

[1]अर्थात जब वह फ़र्श की वास्तविकता को समझ गई तो अपनी त्रुटि का भी संवेदन हो गया तथा अपना अपराध स्वीकार करते हुए मुसलमान होने की घोषणा कर दी । साफ चिकने गढ़े हुए पत्थरों को مُمَرَّد कहा जाता है । इसी से أمرد है जो उस सुन्दर बालक को कहा जाता है, जिसके मुख पर अभी दाढ़ी मूँछ न हो । जिस वृक्ष पर पत्ते न हों उसे مَرداء कहा जाता है । (फ़तहुल क़दीर) परन्तु यहाँ यह निर्माण अथवा जड़ाव के अर्थ में है । अर्थात शीशों से निर्मित अथवा जड़ा हुआ महल ।

नोट : महारानी सबा (बिलक़ीस) के मुसलमान होने के पश्चात क्या हुआ ? क़ुरआन में अथवा किसी सहीह हदीस में इसकी विस्तृत जानकारी नहीं मिलती । व्याख्यात्मक कथनों में अवश्य मिलता है कि उनका आपस में विवाह हो गया था, परन्तु जब क़ुरआन तथा हदीस इस विषय में मौन हैं तो इस संदर्भ में मौन साधना ही उत्तम है ।

[2]इनसे तात्पर्य काफ़िर तथा ईमानवाले हैं, झगड़ने का अर्थ प्रत्येक सम्प्रदाय का यह दावा है कि वह सत्य पर है ।

[3]अर्थात ईमान स्वीकार करने के बजाय तुम कुफ़्र पर क्यों हट कर रहे हो, जो यातना का कारण है । इसके अतिरिक्त अपने विरोध एवं अवहेलना के कारण कहते भी थे कि हम पर प्रकोप ले आ । जिसके उत्तर में आदरणीय स्वालेह ने यह कहा ।

(४७) (वे) कहने लगे कि हम तो तुझसे तथा तेरे साथियों से अपशगुन ले रहे हैं,[1] (आपने) उत्तर दिया कि तुम्हारा अपशगुन अल्लाह के पास है,[2] बल्कि तुम तो परीक्षा में पड़े हुए लोग हो ।[3]

قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَن مَّعَكَ ۚ قَالَ طَائِرُكُمْ عِندَ اللَّهِ ۖ بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُونَ ﴿٤٧﴾

(४८) इस नगर में नौ (मुखिया) व्यक्ति थे जो धरती में उपद्रव फैला रहे थे तथा सुधार नहीं करते थे ।

وَكَانَ فِي الْمَدِينَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ﴿٤٨﴾

(४९) उन्होंने आपस में अल्लाह की सौगन्ध खाकर प्रतिज्ञा किया कि रात ही को 'स्वालेह' तथा उसके परिवार वालों पर हम छापा मारेंगे ।[4] तथा उसके उत्तराधिकारी से कह देंगे कि हम उसके परिवार की हत्या के

قَالُوا تَقَاسَمُوا بِاللَّهِ لَنُبَيِّتَنَّهُ وَأَهْلَهُ ثُمَّ لَنَقُولَنَّ لِوَلِيِّهِ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ أَهْلِهِ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿٤٩﴾

---

[1] اطَّيَّرنا वास्तव में تطيّرنا है । इसका धातु طَير (उड़ना) है । अरब जब किसी कार्य का अथवा यात्रा का विचार करते तो पक्षी उड़ाते, यदि वह दाहिनी ओर उड़ता तो उसे शुभ समझते तथा वह कार्य कर डालते अथवा यात्रा पर निकल पड़ते तथा यदि बायीं ओर उड़ता तो उसे अपशगुन समझते तथा उस कार्य अथवा यात्रा से रूक जाते । (फ़तहुल क़दीर) इस्लाम में यह शुभ-अशुभ निषेध है परन्तु तफ़ाउल उचित है । अर्थात अच्छे शब्द अथवा नाम सुनकर शुभ समझना ।

[2]अर्थात ईमानवाले अपशगुन का कारण नहीं है, जैसाकि तुम समझ रहे हो बल्कि इसका मूल कारण अल्लाह ही के पास है क्योंकि अदृष्ट तथा भाग्य उसी के अधिकार में है । अर्थ यह है कि तुम्हें जो अशुभ (अकाल आदि) पहुँचा है । वह अल्लाह की ओर से है तथा उसका कारण तुम्हारा कुफ़्र है । (फ़तहुल क़दीर)

[3]अथवा भटकावे में ढील देकर तुम्हारी परीक्षा ली जा रही है ।

[4]अर्थात स्वालेह की तथा उसके परिवार वालों की हत्या कर देंगे, यह सौगन्ध उस समय खायी, जब ऊँटनी की हत्या करने के पश्चात आदरणीय स्वालेह ने कहा कि तीन दिन पश्चात तुम पर प्रकोप आयेगा । उन्होंने कहा कि प्रकोप से पूर्व ही हम स्वालेह तथा उसके परिवार वालों की हत्या कर देंगे ।

समय उपस्थिति न थे[1] तथा हम सच बोल रहे हैं।

(५०) तथा उन्होंने चाल चली[2] तथा हम ने भी[3] तथा वह उसे समझते ही न थे।[4]

وَمَكَرُوا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا مَكْرًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝٥٠

(५१) अब देख लो कि उनके षड़यन्त्र का परिणाम क्या हुआ? हमने उनको तथा उनके समुदाय को सभी को ध्वस्त कर दिया।[5]

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۙ أَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَقَوْمَهُمْ أَجْمَعِيْنَ ۝٥١

(५२) यह हैं उनके घर जो उनके अत्याचार के कारण उजड़े पड़े हैं, जो लोग ज्ञान रखते हैं, उनके लिए उसमें बड़ी निशानी है।

فَتِلْكَ بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةً ۢ بِمَا ظَلَمُوْا ۗ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝٥٢

(५३) तथा हमने उनको जो ईमान लाये थे। और सत्कर्म करते थे बाल-बाल बचा लिया।

وَأَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ۝٥٣

---

[1]अर्थात हत्या के समय हम वहाँ उपस्थिति नहीं थे तथा न हमें यह जानकारी है कि कौन उनकी हत्या कर गया है।

[2]उनका षड़यन्त्र यही था कि उन्होंने आपस में सौगन्ध खायी थी कि रात्रि के अंधेरे में इस हत्या की योजना के अनुसार कार्य करेंगे तथा तीन दिन पूर्व ही हम स्वालेह तथा उसके परिवार की हत्या कर डालेंगे।

[3]अर्थात हमने उनके इस षड़यन्त्र का बदला दिया तथा उन्हें ध्वस्त कर दिया। यहाँ भी مكرنا مكرًا से उसके रूप के अन्तर्गत वर्णन किया गया है।

[4]अल्लाह की उपाय को समझते ही न थे।

[5]अर्थात हमने उपरोक्त नौ सरदारों को ही नहीं, अपितु उनके सम्पूर्ण समुदाय को ध्वस्त कर दिया। क्योंकि वह समुदाय विनाश के मूल कारण कुफ्र तथा अत्याचार में पूर्ण रूप से उनके साथ था, यद्यपि क्रियात्मक रूप से उनकी हत्या की योजना में शरीक नहीं हो सका था। क्योंकि यह योजना गुप्त थी। परन्तु उनकी हार्दिक इच्छा के अनुरूप थी, जो ९ लोगों ने आदरणीय स्वालेह तथा उनके परिवार वालों के विरूद्ध योजना तैयार की थी। इसलिए सम्पूर्ण समुदाय ही विनाश योग्य पायी गयी।

وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِۦٓ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ وَأَنتُمْ تُبْصِرُونَ ﴿٥٤﴾

(५४) तथा लूत की (चर्चा कर,)[1] जबकि उसने अपने समुदाय से कहा कि देखने-भालने के उपरान्त भी तुम कुकर्म कर रहे हो ?[2]

أَئِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّن دُونِ النِّسَآءِ ۚ بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ﴿٥٥﴾

(५५) यह क्या बात है ? कि तुम स्त्रियों को छोड़कर पुरूषों के पास काम वासना से आते हो ?[3] सत्य यह है कि तुम अत्यन्त मूर्खता कर रहे हो ।[4]

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِۦٓ إِلَّآ أَن قَالُوٓا۟ أَخْرِجُوٓا۟ ءَالَ لُوطٍ مِّن قَرْيَتِكُمْ ۖ إِنَّهُمْ أُنَاسٌ يَتَطَهَّرُونَ ﴿٥٦﴾

(५६) उनके समुदाय का उत्तर इस कहने के उपरान्त अन्य कुछ न था कि लूत के परिवार वालों को अपने नगर से निकाल दो, यह लोग तो बड़ी पवित्रता दिखा रहे हैं ।[5]

فَأَنجَيْنَٰهُ وَأَهْلَهُۥٓ إِلَّا امْرَأَتَهُۥ

(५७) अतः हमने उसे तथा उसके परिवार को, उसकी पत्नी के सिवाय, सबको बचा

---

[1]अर्थात लूत की घटना याद करो जब लूत ने कहा । यह समुदाय अमूरिया तथा सदूम की बस्तियों में निवास करता था ।

[2]अर्थात यह जानने के उपरान्त कि यह निर्लज्जता का कर्म है । यहाँ देखने का अर्थ दिल की आँखों से देखना है, तथा यदि उपरी आँख से देखना तात्पर्य हो तो अर्थ यह होगा कि सबके सामने यह कुकर्म करते हो ? अर्थात तुम्हारी दुष्टता इतनी बढ़ गई है कि छुपने का भी प्रयत्न नहीं करते ।

[3]यह पुनरावृत्ति फटकार के लिए है कि यह निर्लज्जता वही समलैंगिता है, जो स्त्रियों को छोड़कर पुरूषों के साथ अप्राकृतिक काम वासना के रूप में करते हो ।

[4]अथवा उसके निषेधाज्ञा (हुरमत) से अथवा इस कुकर्म के दण्ड से तुम अनजान हो । वरन् शायद यह कुकर्म न करते ।

[5]यह कटाक्ष तथा उपहास के रूप में है ।

قَدَّرْنٰهَا مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝٥٧

लिया, इसका अनुमान तो शेष रह जाने वालों में हम लगा चुके थे।[1]

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝٥٨

(५८) तथा उनके ऊपर एक (विशेष प्रकार की) वर्षा कर दी,[2] अत: उन डराये गये लोगों पर बुरी वर्षा हुई।[3]

قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى ؕ آٰللّٰهُ خَيْرٌ اَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝٥٩

(५९) तो आप कह दें कि सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है तथा उसके स्वच्छंद भक्तों पर सलाम है[4] क्या अल्लाह (तआला) श्रेष्ठ है अथवा वह जिन्हें ये लोग साझीदार बना रहे हैं।[5]

---

[1]अर्थात पहले ही उसके विषय में यह अनुमान अर्थात अल्लाह के द्वारा लिखे भाग्य में था कि वह उन्ही पीछे रह जाने वालों में से होगी, जिन पर प्रकोप आयेगा।

[2]उन पर जो प्रकोप आया, उसका विवरण पहले गुज़र चुका है कि उन बस्तियों को उन पर पलट दिया गया तथा उसके पश्चात उन पर तह पर तह कंकड़-पत्थरों की वर्षा हुई।

[3]अर्थात जिन्हें पैग़म्बरों के द्वारा डराया गया तथा उन पर प्रमाण स्थापित कर दिया गया। परन्तु वे झुठलाने तथा इंकार से नहीं रूके।

[4]जिनको अल्लाह ने रिसालत तथा भक्तों के मार्गदर्शन के लिए चयन किया, ताकि लोग केवल एक अल्लाह की इबादत करें।

[5]यह प्रश्न नकारात्मक हैं। अर्थात अल्लाह ही की इबादत सर्वोत्तम है क्योंकि जब स्रष्टा, पालक एवं स्वामी वही है, तो इबादत के योग्य कोई अन्य क्यों हो सकता है जो न किसी वस्तु का स्रष्टा है, न पालक तथा स्वामी خير सर्वोत्तम के अर्थ में प्रयोग होता है, परन्तु यहाँ इस अर्थ में नहीं मात्र उत्तम के अर्थ में है क्योंकि मिथ्या पूज्य में तो सिरे से कोई अच्छाई है ही नहीं।